बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

अप्रैल-जून, 2022

मूल्य 25 रुपए

उत्तराखंड का राज्य पशु : कस्तूरी मृग

● उदय किरौला

सन् 2000 में उत्तराखंड नया राज्य बनने के बाद सन् 2002 में उत्तराखंड सरकार ने कस्तूरी मृग को राज्य पशु, मोनाल को राज्य पक्षी, ब्रह्मकमल को राज्य पुष्प, बुरांस को राज्य वृक्ष घोषित किया।

कस्तूरी मृग हिरन की ही एक प्रजाति है। इसका वैज्ञानिक नाम 'मास्कस काइसोगास्टर' है। जो कि हिमालय की ऊंची पहाड़ियों में पाया जाता है। इसे 'हिमालयन मस्क डियर' के नाम से भी जाना जाता है। भारत, तिब्बत, नेपाल, भूटान, कोरिया, चीन आदि विश्व के कई देशों में कस्तूरी मृग पाए जाते हैं। भारत में उत्तराखंड राज्य के अलावा कस्तूरी मृग जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा सिक्किम आदि पूर्वी राज्यों की ऊंची पहाड़ियों में पाए जाते हैं। उत्तराखंड में उत्तरकाशी, चमोली तथा पिथौरागढ़ की ऊंची पहाड़ियों पर कस्तूरी मृग पाए जाते हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार कस्तूरी मृग समुद्र तल से लगभग 3000 से 4400 मीटर तक की ऊंची पहाड़ियों में पाए जाते हैं।

इस मृग की नाभि में कस्तूरी पाई जाती है। इसलिए इसे कस्तूरी मृग कहा जाता है। कस्तूरी केवल नर मृग की नाभि में बनती है। सामान्यतया नर मृग की नाभि के नीचे जननांग के समीप एक ग्रंथि से कस्तूरी प्राप्त होती है। लगभग एक वर्ष की आयु के बाद ही नर मृग की नाभि में कस्तूरी बनती है। सामान्यतया एक कस्तूरी मृग से लगभग 10 से 30 ग्राम तक कस्तूरी 3 वर्ष के अंतराल में निकलती है। यह कस्तूरी बहुत ही महंगी बिकती है। खुले बाजार में कस्तूरी के एक ग्राम की कीमत लगभग 25 से 30 हजार तक बताई जाती है। कस्तूरी से बनने वाला इत्र बहुत ही सुगंधित होता है। कस्तूरी से दमा, टाइफायड, निमोनिया, मिर्गी, सांस व हृदय से संबंधित रोगों की दवा तैयार की जाती है।

कस्तूरी मृग की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। मुख्यतया इसका रंग भूरा तथा उस पर काले और पीले धब्बे होते हैं। नर कस्तूरी मृग की पूंछ छोटी तथा बिना बालों वाली होती है। इसके जबड़े में दो लंबे दांत पीछे की ओर झुके होते हैं। अपनी सुरक्षा तथा जड़ी बूटी खोदने के लिए ये अपने दांतों का इस्तेमाल करता है। कस्तूरी मृग के सींग नहीं होते हैं। इसके सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है। इस कारण यह शिकारी से अपना बचाव करने में सक्षम होता है। यह तेज गति से दौड़ता है। पर इसकी एक आदत इसके लिए खतरनाक साबित होती है। यह दौड़ते समय पीछे की ओर देखता है। इस कारण यह शिकारी के चंगुल में आ जाता है।

राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार में कस्तूरी बहुत ही महंगे दाम पर बिकती है। इस कारण इसका अवैध व्यापार फलता-फूलता जा रहा है। अवैध शिकार होने के कारण उत्तराखंड ही नहीं दूसरे राज्यों में भी कस्तूरी मृग संकटग्रस्त प्रजाति में शामिल किया गया है। सन् 2016 में वाइल्ड लाइफ फेडरेशन द्वारा कराई गई गणना के अनुसार समूचे उत्तराखंड में लगभग 2000 कस्तूरी मृग हैं। वन्य जीवों का अवैध शिकार रोकने के लिए सन् 1972 में वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम बनाया गया। सरकारी स्तर पर इसके संरक्षण के लिए प्रयास किए जाते रहे हैं। उत्तराखंड राज्य बनने से पहले सन् 1972 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा केदारनाथ वन्य जीव प्रभाग के अंतर्गत कस्तूरी मृग विहार की स्थापना की गई। सन् 1982 में कांचुला खर्क में कस्तूरी मृग प्रजनन केंद्र की स्थापना इसके सरंक्षण के लिए की गई। इसी तरह कुमाऊं मंडल के पिथौरागढ़ जनपद में 'अस्कोट कस्तूरी अभ्यारण्य' की स्थापना की गई।

उत्तराखंड राज्य बनने के बाद सरकार ने इसका शिकार पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया। इसके सरंक्षण के लिए उत्तराखंड सरकार ने कस्तूरी मृग को राज्य का राज्य पशु घोषित किया है।

⁘⁘⁘

RNI. UTTHIN/2004/18604

वर्ष-18 | अप्रैल-जून, 2022 | अंक-02

संरक्षक : डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेन्द्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
दीक्षा बिष्ट
डा.(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय
श्रीमती नीमा पांडेय
श्री हेमचंद्र पंत
डॉ. डी. पी. चौधरी
श्री अरूण पंत
डॉ. आशा बिष्ट
श्रीमती मोहनी बाजपेयी
डॉ. ज्योति पांडे त्रिपाठी
श्रीमती माया पंत
श्री टी.वी.चंद्रा सुब्बा
डॉ. अशोक कुमार नेगी

संपादक : उदय किरौला
संपादकीय सहयोग : प्रमोद तिवारी
संतोष किरौला
कला पक्ष/मुखपृष्ठ : मोहिनी बाजपेयी
इंटरनेट संस्करण : वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 9557619107
E-mail.:balprahri@gmail.com
Web.:www.balprahri.com
Face book-udai kiroula balprahri
Whats App - 9412162950

बच्चों के नाम पाती 02
आपके पत्र 03
बच्चों की कलम से 05

कहानी :
जादुई अक्षरों का कमाल — नीलम राकेश 21
पढ़ लिखकर मैं डॉक्टर बनूंगी — श्याम बिहारी महतो 24
मछली की सैर — नरेंद्र श्रीवास्तव 25
फूलने का जादू — उषा सोमानी 29
मुट्ठी भर लोग — सिद्धार्थ शंकर 31
लड्डू और पसीने का सच — इंजी.आशा शर्मा 33
एक भेड़िए की दुख भरी कहानी — समीर गांगुली 37
रघ्घू — डॉ. रमेश आनंद 38
सिद्धू बन गया जादूगर — रोचिका अरूण शर्मा 39
संगठन की शक्ति — डॉ.मीरा राम निवास 41
चांद सूरज — मधुलिका श्रीवास्तवा 43

कविता :
कुमाउनी/गढ़वाली कविता — केशरसिंह डंग्सेरा/ प्रीतम अपछ्याण 20
नभ पर छाए — राजेंद्र निशेश 24
आओ सीखें/कोरोना/भारत — हंसा बिष्ट/सुरेश कुशवाहा/मनमोहन गुप्ता 27
मेघ गरजते — कैलाश त्रिपाठी 31
मिठाई/बादल भइया — राजेंद्र पालमपुरी/घनानंद पांडेय 'मेघ' 32
बिल्ली बोली/वर्षा रानी — कल्याणमय आनंद/डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी 32
अक्षर ज्ञान/ नन्हा दीप — लीला खोलिया/डॉ. महावीर रवांल्टा 32
पोपटलाल/बरखा रानी — सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह/मीरासिंह 'मीरा' 34
छोले भटूरे — श्यामपलट पांडेय 34
मेरा गांव/हमारी दुनिया — शशिबाला श्रीवास्तवा/डॉ.नरेंद्रनाथ लाहा 42
सूरज चांद/नन्हे चित्रकार — डॉ. शशि गोयल/सरोजनी कुकरेती 42
बादल भैया/दादी मां — सुशीला शर्मा/शकुंतला शर्मा 47

जानकारी

बालसाहित्य की थाती - कुंअर बैचैन — संतोष कुंअर 04
कॉटन कैंडी (गुड़िया के बाल) — गरिमा राना 19
ऐसा क्यों होता है? — घमंडीलाल अग्रवाल 23
आइसक्रीम की कहानी — कृपालसिंह शीला 26
बोलो देवीदा — देवेंद्र मेवाड़ी 35
13 वर्ष का शहीद:ध्रुव कुंडू — डॉ. हेमंत कुमार 38
पशु पक्षियों और इंसानों के बीच रिश्ता — शिखरचंद जैन 44

प्रतियोगिताएं

निबंध प्रतियोगिता - 41 15
कविता लिखो प्रतियोगिता - 70 16
कहानी लिखो प्रतियोगिता - 70 18
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता - 70 47

अन्य

अंतर बताओ 15
सूडोकू 16
चुटकुले 17
क्या आप जानते हैं 17
पहेलियां 19
अनमोल वचन 19
खोजबीन 22
अंक पहेली 27
शब्दजाल 30
चित्र बनाना सीखो 40
अंक पहेली 43
रंग भरो 45
पुस्तक समीक्षा 46
पुस्तक प्राप्ति 48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो!

कक्षा 11 से कक्षा 12 में प्रवेश करते ही प्राची ने अपने भविष्य के बारे में सोचना प्रारंभ कर दिया। उसने अपनी सहेलियों, स्कूल की मैडम व रिश्तेदारों से आगे की पढ़ाई के बारे में सलाह ली। सभी उसे अलग-अलग सलाह दे रहे थे। पर उसका मन कंप्यूटर की पढ़ाई करने का था। वह कंप्यूटर इंजीनियरिंग में डिग्री करना चाहती थी। स्कूल की रेखा मैडम ने उसे बताया कि गोविंदबल्लभ पंत विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा की विज्ञप्ति निकली है। वह कंप्यूटर इंजीनियरिंग की डिग्री कोर्स के लिए फार्म भर सकती है।

रेखा मैडम ने कहा, ''यह परीक्षा अखिल भारतीय स्तर की होती है। इसमें निकलना आसान नहीं होता है। आप तैयारी कर सकती हो तो फार्म भर लो।''

''मैम आपका आभार। मैं प्रयास करती हूं।'' कहकर प्राची ने फार्म आदि के बारे में और अधिक जानकारी ली।

प्राची कक्षा 11 में भी अपनी कक्षा में प्रथम आई थी। उसका लक्ष्य इस बार इंटर बोर्ड परीक्षा की मैरीट में भी अपना नाम जोड़ने का था। परंतु अपने लक्ष्य को वह किसी को शेयर नहीं करती।

प्राची की मां शहर के कुछ घरों में झाड़ू पोछा करती थी। प्राची जब छोटी थी। पिताजी का देहावसान हो गया था। तब प्राची को मां उसे अपने ही साथ ले जाती थी।

प्राची अब बड़ी हो गई थी। उसे पता था कि मां किस तरह उसे पढ़ाती है। अन्य बच्चे जहां अलग-अलग विषयों के ट्यूशन क्लास जाते। वहीं प्राची घर पर ही अपनी पढ़ाई पूरी करती। प्राची स्कूल में सर या मैडम द्वारा पढ़ाए पाठ को समझती। घर आकर उस पाठ को दोहराती। वह रटने के बजाय विषय या पाठ के बारे में अपनी समझ बढ़ाती।

वह पढ़ाई के साथ ही घर के कामों में मां का हाथ बढ़ाती। मुहल्ले में भजन-कीर्तन हो स्कूल के खेल। वह सब जगह भागीदारी करती। सबके सुख-दुख में शामिल रहती। उसे किसी ने पढ़ाई करते हुए नहीं देखा। वह कब पढ़ाई करती है। किसी को पता नहीं चलता।

वह इंटर की पढ़ाई के साथ ही विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा की भी तैयारी करती। इंटर की परीक्षा नजदीक थी। उसने पहले इंटर की परीक्षाओं के लिए तैयारी की। इंटर की परीक्षा के बाद उसने विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा की तैयारी की। कुछ ही दिन बाद प्रवेश परीक्षा हुई। उसे लगा कि वह प्रवेश परीक्षा उर्त्तीण कर लेगी।

इंटर बोर्ड परीक्षा का परीक्षाफल घोषित हुआ। राज्य स्तर की मैरीट में उसका नाम था। 'बगैर ट्यूशन के गरीब छात्रा ने मैरीट में बनाया अपना स्थान' नाम से अखबार में प्राची और उसकी माता का फोटो छपा। उसे बधाई देने वालों का तांता लग गया। चारों ओर प्राची तथा उसकी माता की चर्चा हो रही थी। बगैर ट्यूशन के मैरीट में अपना स्थान बनाने पर सब उसकी तारीफ कर रहे थे।

कुछ ही समय बाद गोविंदबल्लभ पंत विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा का परीक्षाफल घोषित हुआ। वहां प्राची का नाम मैरीट में प्रथम स्थान पर था। एक बार प्राची फिर अखबार की सुर्खियों में छा गई। गरीब व मेहनती बालिका की सफलता की कहानी सुनकर मुख्यमंत्री ने कहा, ''प्राची हमारे राज्य की प्रतिभा है। उसकी पढ़ाई का खर्चा सरकार वहन करेगी।''

प्राची व उसकी माता की संघर्ष भरी कहानी सबकी जुबान पर थी। कई सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं ने प्राची की माता को नौकरी पर रखने का प्रस्ताव दिया। जिलाधिकारी की पहल पर प्राची की माता को कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय के छात्रावास में नौकरी पर रख लिया गया। प्राची की मेहनत रंग लाई। सब उसकी मां का सम्मान करते हैं। प्राची के साथ ही अब मां भी खुश है।

कहानी के बारे में अपने विचार लिखना। बालप्रहरी के इस अंक में तुम्हें क्या-क्या अच्छा लगा, लिखना। अब तुम अपने विचार पत्र/पोस्टकार्ड के साथ ही ई मेल या वाट्सअप नंबर 9412162950 पर भी लिखकर भेज सकते हो।

तुम्हें पता है बालप्रहरी द्वारा ऑनलाइन गतिविधियां भी की जा रही हैं। इसमें कहानी वाचन, कविता वाचन, लोकगीत, देश भक्ति गीत, लोककथा, लोकनृत्य, त्वरित भाषण, साक्षात्कार जैसी 410 से अधिक कार्यशालाएं आयोजित की जा चुकी हैं। यदि आप ऑनलाइन गतिविधियों में सहभागिता करने के इच्छुक हैं तो वाट्सअप नंबर 9412162950 को अपने मोबाइल पर सेव करके अपने नाम कक्षा स्कूल आदि लिखते हुए बालप्रहरी समूह में जुड़ने की सहमति दे सकते हैं।

तुम्हारे पत्र व तुम्हारी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करूंगा।

- तुम्हारा दोस्त
उदय किरौला

काफल

काफल पर्वतीय राज्यों में पाए जाने वाला एक फल है। इसका वैज्ञानिक नाम माइरिका एसकुलेंटा है। काफल पर यहां एक लोकगीत भी प्रसिद्ध है - 'बेडू पाको बारा मासा, ओ नैरण काफल पाको चैता'

मार्च-अप्रैल के महीने में ऊंची पहाड़ियों में इसके पेड़ लद जाते हैं। पहाड़ के बाजारों में गरमी में आपको ये फल आसानी से मिल जाएगा। अब तो महानगरों में भी काफल बिक रहा है। काफल औषधि गुणों से भी भरपूर है। ये जहां थकान दूर करने में सहायक है। वहीं एंटी ऑक्सीडेंट तत्व होने के कारण पेट की कई बीमारियों में सहायक है। इसका फल, छाल तथा बीज औषधि बतौर भी इस्तेमाल किया जाता है। प्रारंभ में यह हरे रंग का और पकने पर इसका रंग काफी लाल हो जाता है।

यह घर गांव में उगाया नहीं जाता है। यह जंगल में उगता है। गरमी में स्थानीय उद्यमी जंगल से तोड़कर इसे बाजार तक पहुंचाते हैं। कुछ लोग बाजार में स्वयं इसे बेचते हैं। कुछ बाजार में सस्ते दामों पर इसे बेचकर आते हैं। गरमी में लगभग 500 रुपए किलो तक ये बाजार में बिकता है।

- चैतन्य बिष्ट, कक्षा 8
आर्मी पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बालप्रहरी

जून, 2021 की बालप्रहरी पत्रिका मिली, मैंने पूरी पढ़ी। इसमें बहुत जानकारियां मिलती हैं। इस अंक की कहानियां तथा कविताएं मुझे अच्छी लगी। अब मैं भी कविताएं लिख रही हूं। मुझे बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाएं भी अच्छी लगती हैं।

- लक्षिता गहतोड़ी, कक्षा 3
होली विजडम एकैडमी, लोहाघाट, चंपावत

आपके पत्र

बालप्रहरी

बच्चों की पत्रिका,
बालप्रहरी मुझको भाती है।
बच्चों को देती मंच,
ये तीन माह में आती है।
चुटकुले, पहेलियां इसमें,
सब बच्चों को भाएं।
मुझको तो अच्छी लगती हैं,
बच्चों की इसमें कविताएं।

- प्रेरणा पुरोहित, कक्षा-6
बालिका विद्या मंदिर ढालवाला,ऋषिकेश टिहरी

वोट का अधिकार

चाचा जाओ वोट डालने,
चाची को भी ले जाओ।
दादा मम्मी पापा सबके,
पहचान पत्र भी ले आओ।
मतदान हमारा है अधिकार,
सभी को बतलाना है।
कर दो खबर गांव में,
वोट देकर सबको आना है।

- रीया तोमर,कक्षा 5
प्रा.वि इंद्रगढ़ी,गालंद,हापुड़,उ.प्र.

मेरा गांव

मेरे गांव का नाम बज्वाड़ है। यह हवलबाग विकास खंड में अल्मोड़ा से 16 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। गांव में डाकघर, हाईस्कूल, प्राथमिक स्कूल, पशु चिकित्सालय हैं। गांव में परंपरागत नौला है। बहुत सारे मंदिर हैं। मेरे गांव के लोग बहुत अच्छे हैं। श्री प्रकाश आर्या जी हमारे गांव के ग्राम प्रधान हैं। गांव में पानी की समस्या है। पहले लोग खेती करते थे। अब बंदरों के आतंक के कारण लोगों ने खेती करना लगभग छोड़ दिया है। मुझे अपना गांव अच्छा लगता है।

- तनूजा गोस्वामी, कक्षा-9
रा.उ.मा.वि.चौराकलेत,अल्मोड़ा

हमारा छात्रावास

मेरा नाम अनीता चौहान है। मेरे गांव का नाम देवजानी है। मेरा गांव उत्तरकाशी जनपद के मोरी ब्लाक में स्थित है। मैं कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय खरसाड़ी में पढ़ती हूं। यहां के छात्रावास में मुझे बहुत अच्छा लगता है। छात्रावास में सारी लड़कियां आपस में मेल-मिलाप से रहती हैं। हमारी हॉस्टिल की वार्डन का नाम प्रमिला रावत है। वे हमें मां की तरह प्यार करती हैं। हमारी परेशानियों पर ध्यान देती हैं।

छात्रावास में रहते हुए हम राजकीय इंटर कालेज गडूगाड़ में पढ़ने के लिए जाते हैं। सारे बच्चों के लिए स्कूल की फीस, कॉपी-किताब,बस्ता आदि सारी व्यवस्था हॉस्टिल की ओर से की जाती है। हॉस्टिल में बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापिकाएं भी हैं। जो कि ट्यूशन क्लास की तरह हमें पढ़ाती हैं। हमारे हॉस्टिल में समय-समय पर अलग कार्यशालाएं भी कराई जाती हैं। जिससे हमें पुस्तक की पढ़ाई के साथ ही अन्य कौशल भी सीखने को मिलते हैं।

- अनिला चौहान, कक्षा-10
कस्तूरबा गांधी आ बा विद्यालय
खरसाड़ी,उत्तरकाशी

भारत मां के बच्चे

कर्तव्य निभाया जिन्होंने
वहीं सच्चे प्रेमी थे।
सब कुछ न्यौछावर कर गए जो,
वे भारत मां के बच्चे थे।
होंसले बुलंद थे उनके,
उम्र के थोड़े कच्चे थे।
हंसते हुए शहीद हुए जो,
वे भारत मां के बच्चे थे।
आज का गुलाब उनको समर्पित,
जो वीर जवान अच्छे थे।
देश हित दिया जिसने बलिदान,
वे भारत मां के बच्चे थे।

- डिंपल पाठक, कक्षा 10
द एशियन एकैडमी, पिथौरागढ़

साहित्यकार : कुंअर बेचैन

हिंदी साहित्य में कुंवर बेचैन जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका जन्म 1 जुलाई,1942 को मुरादाबाद के उमरी में हुआ था। उनका गजल के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य रहा है। उनकी लगभग 3 दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। बालप्रहरी की राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी कौसानी में उनकी सहभागिता रही थी। वहां उन्होंने बाल कविताएं लिखने की बात कही थी। उसके बाद उन्होंने कई बाल कविताएं लिखी। 29 अप्रैल, 2021 को उनका देहावसान हो गया। साहित्य के महान पुरोधा को शत-शत नमन! यहां उनकी कुछ बाल रचनाएं दी जा रही हैं।

-संपादक

काना बाती कुर्र

अरी चिरइया नींद की,
हो जा जल्दी फुर्र,
काना बाती कुर्र।
छोड़ अपने आराम को,
सूरज निकला काम को।
देकर सबको रोशनी,
घर लौटेगा शाम को।
तू भी जल्दी छोड़ दे,
खर्राटों की खुर्र,
काना बाती कुर्र।
जगी शहर की मंडिया,
गांवों की पगडंडिया,
खेतों ने भी दिखलाई,
हरी फसल की झंडिया।
चली सड़क पर मोटरें,
घर घर घर घर घुर्र,
काना बाती कुर्र।

नाना नानी और मैं

नानी जी का चश्मा हूं मैं,
नाना जी की नई छड़ी।
नाना जी के साथ चली मैं,
नानी जी की पुस्तक पकड़ी।
नानी बोली बिटिया तेरी,
अम्मा की भी मां हूं मैं।
नाना बोले कहो न ना-ना
तुम सबकी हां हां हूं मैं।

अच्छे बच्चे

कल मौसी जी आई थी,
कई खिलौने लाई थी।
एक खिलौना ऐसा था,
अभी बताऊं कैसा था।
हंसता था, वो रोता था,
जगता था, वो सोता था।
चुप रहता था गाता था,
झुकता था शर्माता था।
कभी खेलता पढ़ता था,
आगे-आगे बढ़ता था।
उसके नीचे लिखा था,
अभी बताऊं वह क्या था।
लिखा था प्यारे बच्चो,
दुनिया से न्यारे बच्चो!
हंसना रोना जीवन है,
जगना-सोना जीवन है।
लेकिन कभी न रोना तुम,
और न ज्यादा सोना तुम।
मानो यह मेरा कहना,
दुख मैं भी हंसते रहना।
हंसने वाला पार गया,
जो रोया, वो हार गया।
मेहनत भी करते रहना,
सबके दुख हरते रहना।
रूठो तो फिर मन जाना,
अच्छे बच्चे बन जाना।

मां तुम कितनी

मां तुम कितनी प्यारी हो,
हम हैं हंसते फूल अगर,
तुम खिलती फूल फुलवारी हो,
मां तुम कितनी प्यारी हो।
सुबह सवेरे उठती हो,
हमको सोने देती हो।
हमको खूब हंसाती हो,
कभी न रोने देती हो।
हमको भी तैयार किया,
खुद की भी तैयारी हो।
मां तुम कितनी प्यारी हो।
देती कितनी प्यार हमें,
सारा ही संसार हमें,
जन्म दिवस पर देती हो,
ढेरों ही उपहार हमें।
तुम भी नाना नानी की,
प्यारी राजदुलारी हो,
मां तुम कितनी प्यारी हो।

मां

मां तुम हमें जगा देना,
हम सोते रह जाते हैं।
नींदों में बह जाते हैं,
आए नींद भगा देना,
मां तुम हमें जगा देना।
जाना है स्कूल हमें,
ले जाने हैं फूल हमें।
जन्म दिवस है मैडम का,
खिलते फूल मंगा देना।
मैडम हमें पढ़ाती है,
सबको खूब हंसाती है।
हमें उन्हें देना है जो,
वह रूमाल रंगा देना।
मां तुम हमें जगा देना।

संकलन : संतोष कुंअर, 'कवितायन', 2 एफ नेहरूनगर, गाजियाबाद, उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

फौजी

देश की रक्षा करते फौजी,
फौजी का हम करें सम्मान।
देश की सीमा पर रहते,
देश का रखते हैं ये मान।
रात-दिन ठंड गरमी में,
तिरंगे का रखते मान।
देश की खातिर मरते ये,
फौजी हैं भारत की शान।

- धर्मेंद्रसिंह बोहरा, कक्षा-8
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

ताजा भोजन

चाउमीन और फास्ट फूड,
इनको बॉय-बॉय कहना है।
बीमारी से बचना है तो,
घर का भोजन करना है।
ताजा भोजन हमें,
बीमारियों से बचाता है।
वहीं रहता है स्वस्थ जो,
घर का भोजन खाता है।

- दिशा शर्मा, कक्षा 7
रा. आदर्श जू. हाईस्कूल छिताड़, अल्मोड़ा

योजना

जल्दी उठकर सुबह,
अपना पाठ पढ़ना है।
दिन की योजना बनाओ,
योग भी रोज करना है।
चिड़िया व सारे जीव,
सुबह जल्दी उठ जाते हैं।
योजना बनाकर जो चलें,
लक्ष्य वे ही पाते हैं।

- चिन्मयी शर्मा, कक्षा 6
शंकरदेव वि. नि. पुरणिगुदाम, नगांव, असम

बैजनाथ

उत्तराखंड के बागेश्वर जनपद में बागेश्वर, कपकोट तथा गरूड़ 3 विकास खंड हैं। गरूड़ विकास खंड मुख्यालय के समीप स्थित बैजनाथ मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। बैजनाथ का पुराना नाम कार्तिकेयपुर है। जो कि कत्यूरी राजाओं की राजधानी रही है। बैजनाथ केवल एक मंदिर नहीं है। अपितु 14 छोटे-बड़े मंदिरों का समूह है।

बैजनाथ गोमती नदी के तट पर बसा है। यहां गोमती नदी पर एक बैराज सरकार ने कुछ वर्ष पहले बनाया है। इस बैराज में बहुत सी मछलियां पाली गई हैं। यहां आने वाले पर्यटक मछलियों को दाना खिलाकर खुश होते हैं। इधर सरकार ने इस बैराज में नौकायन भी प्रारंभ किया है। अब यहां यहां आने वाले पर्यटक विशेषकर बच्चे नौकायन का आनंद भी लेते हैं। मेरा बच्चों से कहना है कि जब भी बागेश्वर, गरूड़ या बैजनाथ आएं। नौकायन का आनंद जरूर लेना।

- सुवर्णा जोशी, कक्षा 5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेलाबगड़, बागेश्वर

परीक्षा

ये मंजिलों का सफर,
गुल खिले न खिले।
देते रहो परीक्षा,
फल मिले नि मिले।
अगर बढ़ना हो आगे,
परीक्षा से न घबराना।
हर कोई लेगा परीक्षा,
लक्ष्य हो मंजिल को पाना।

- निकिता त्रिपाठी, कक्षा 12
डॉ. ली.वि.वि.मं.इं.कालेज द्वाराहाट,अल्मोड़ा

पापा

बचपन में पाला पोसा,
गोदी में रखते थे पापा।
पढ़ा लिखा कर दिया है ज्ञान,
मुझको अच्छे लगते पापा।
पापा होते घर की शान,
सबको अच्छे लगते पापा।
बच्चों को राह दिखाते हैं,
सम्मान करते सबका पापा।

- रीतू समददार, कक्षा 10
श्री महावीर जैन कन्या पा इं कालेज देहरादून

बेटी की पुकार

मत मारो मुझे कोख में,
जीने का दो मुझे अधिकार।
मां मुझको जीवन दो,
बिनती करूं मैं बारंबार।
मां मुझको तुम अवसर दो,
बेटे का फर्ज निभाऊंगी।
मां मुझको तुम अवसर दो,
कुछ नया कर दिखलाऊंगी।
चांद पर चढ़ गई बेटियां,
मुझको भी तो अवसर दो।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ,
तुम भी मां अभियान चला दो।

- अमृता, कक्षा 10
राजकीय बालिका इंटर कालेज स्याल्दे,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

पानी

पानी है अनमोल
पानी हमें बचाना है।
पानी बिना नहीं है जीवन,
सबको ये बताना है।
बरबाद न करो इसे,
बूंद बूंद बचाना है।
पेड़ स्रोत हैं पानी के,
हमको पेड़ लगाना है।

- चैतन्या साह, कक्षा-6
सरस्वती शिशु मंदिर बागेश्वर

बुरांस

जंगल में मंगल हो जाता,
खिल जाता है जब बुरांस।
जूस जैली और जैम,
गुणकारी बहुत होता बुरांस।
बसंत में तो क्या कहने,
बढ़ाता है जंगल की शान।
बहुत काम आता है ये,
राज्य वृक्ष बढ़ाता है मान।

- नेहा पांडे, कक्षा 10
रा.इ.का.अंडोली,अल्मोड़ा

मच्छर

दिन रात खून चूसता,
मलेरिया डेंगू ये फैलाता।
चिकनगुनिया का कारण ये,
मच्छर किसी को नहीं भाता।
सफाई यदि सभी रखेंगे,
पास नहीं ये आएगा।
डीडीटी का करो छिड़काव,
ये दूर भागकर जाएगा।

- शिवांग कुमार सिंह, कक्षा-11
डी.पी.सी.एस.एस. मिलर उ मा वि पटना, बिहार

मेरी नानी

मेरी नानी का नाम डॉ. विमला भंडारी है। वह सलूंबर (उदयपुर) राजस्थान में रहती हैं। वह 66 साल की हैं। मेरी नानी अपने सफेद बालों में बहुत प्यारी लगती हैं। वह हमेशा हमें संतुष्ट और प्रेरित रखने की कोशिश करती हैं। मुझे लगता है कि वह छोटे से शहर से निकली एक सफल लेखिका हैं। वह बच्चों के लिए अद्भुत कहानियां लिखती हैं। मैं उनसे बहुत प्यार करती हूं और उनके घर जाने के लिए उत्सुक रहती हूं। वह लेखन, ड्राइंग, कढ़ाई आदि में भी बहुत अच्छी हैं। मैंने उनसे काफी कुछ सीखा है। मुझे और मेरे जीवन को बेहतर बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। मेरी नानी एक महान रसोइया है। उनके सभी व्यंजन बहुत ही आकर्षक और स्वादिष्ट होते हैं। जब मैं उनके साथ होती हूं तो वह अक्सर मुझे कहानियां सुनाती हैं। जिस तरह से वह कहानी सुनाती हैं, उससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं उस कहानी में अभिनय करने वाली एक पात्र हूं। मेरी नानी इस उम्र में भी अपने क्षेत्र में 'तकनीकी' का पूरा उपयोग करती हैं। वह नई चीजें सीखने और तलाशने की इच्छुक हैं। यह नारा भी उन पर जंचता है-'सीखने की कोई उम्र नहीं होती'। उन्होंने कई कार्यक्रम किए हैं। उनमें से एक में मैंने भी भाग लिया था। मुझे अपनी नानी के कार्यक्रम में भाग लेकर बहुत खुशी हुई। हर कोई उनसे प्यार करता है और उनका बहुत सम्मान करता है।

- कु. अदिति चोकड़ा, कक्षा-7
अहमदाबाद, गुजरात

तितली

तितली रानी तितली रानी,
दूर-दूर तक जाती हो।
उड़ते रहती हो दिन भर,
नहीं कभी क्या थकती हो।
पंख तुम्हारे बहुत ही सुंदर,
इन्हें कहां से लाती हो।
पंखों की दुकान है क्या,
या ऑनलाइन मंगवाती हो।

- अनुराग यादव , कक्षा 9
राणा प्रताप इ कालेज खटीमा,ऊधमसिंहनगर

पानी की बरबादी

जरूरत न हो पानी की,
टंकी बंद कर दिया करो।
बरबाद नहीं करें पानी,
बात सभी को बताया करो।
पानी के स्रोत सूख रहे,
पानी हमको बचाना है।
पानी को सदुपयोग करें,
सभी को ये बताना है।

- नीलिमा राना , कक्षा 8
नोजगे पब्लिक स्कूल खटीमा,ऊधमसिंहनगर

मेरा गांव

मिल जुल रहते सभी यहां,
सबसे प्यारा मेरा गांव।
सफाई का सब रखते ध्यान,
नित मिलती पेड़ों की छांव।

- यशस्वी, कक्षा 5
जयपुरिया स्कूल गौरीगंज,अमेठी,उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

योग

योग करो भई योग करो,
मिलजुल कर सब योग करो।
सुबह करो और शाम करो,
नित नूतन व्यायाम करो।
करो रोग को दूर स्वयं से,
पहला सुख निरोगी काया।
जीवन जियो चैन अमन से,
सभी ने ही ये फरमाया।

– श्रुति सिरोठिया, कक्षा-9
कारमल कांवेंट स्कूल ग्वालियर, म.प्र.

राष्ट्रीय एकता

हिंदु मुस्लिम सिख इसाई,
सबको मिलकर रहना है।
राष्ट्रीय एकता बनी रहे,
गांधी जी का कहना है।
आपसी एकता बनाकर,
देश को आगे बढ़ाना है।
देश का मान बना रहे,
एकता का गीत गाना है।

– श्रेयजल सिंह, कक्षा-10
रा.बा.उ.विद्यालय चिरैयाटांड, पटना, बिहार

चींटी

चींटी रानी बड़ी सयानी,
चीनी की तुम हो दीवानी।
लाल काली दिखती हो,
नन्ही सी तुम होती हो।
धीरे-धीरे चलती हो,
मेहतनत खूब करती हो।
बच्चों को डराती हो,
क्यों इतना इतराती हो।

– वर्णिका जोशी, कक्षा 7
केंद्रीय विद्यालय नौएडा,उ.प्र.

आम

गरमी में सब जगह बिक रहा ,
देखो आम ताजा है।
अलग-अलग नाम इसके,
आम फलों का राजा है।
चटनी, मुरब्बा, अचार,
बच्चे इसको खाते हैं।
खाने को न मिले अगर,
नाराज सब हो जाते हैं।

– लक्षिता जोशी, कक्षा-5
श्री कृपा पब्लिक स्कूल हल्द्वानी

लक्ष्य

दूर दृष्टि व कड़ी मेहनत से,
लक्ष्य पूरा करना है।
कौन क्या कहे दुनिया में,
इन बातों से न डरना है।
सफलता यदि चाहिए तो,
कड़ी मेहनत करनी होगी।
आलस्य व नींद को,
बॉय-बॉय हमें करनी होगी।

– दीया शर्मा, कक्षा-9
राजकीय इंटर कालेज खीड़ा, अल्मोड़ा

सिरसा

हरियाणा में सिरसा,
नगर सबसे प्यारा है।
साफ रखें हम शहर को,
सिरसा शहर हमारा है।
अच्छे हैं लोग यहां के,
सफाई का रखते ध्यान।
बच्चे यहां के प्यारे,
बच्चे हैं सिरसा की शान।

– बैनजीर, कक्षा 8
डी ए वी पब्लिक स्कूल सिरसा, हरियाणा

गांव की बारात

गांव में जिस घर में शादी होती है। उस घर के लोग अपने घर में रंग व चूना लगाते हैं। गांव के बच्चे मिलकर गांव के रास्तों की सफाई करते हैं। विशेषकर लड़की की शादी के दिन तो बारातियों के स्वागत के लिए गांव के रास्ते की सफाई की जाती है। हमारे पहाड़ में लोग मंदिर व घर की देहली यानी दरवाजे पर कुमाउनी अल्पना (ऐपण) तैयार करते हैं। घर, परिवार व गांव के दूसरे लोग भी अल्पना बनाने में मदद करते हैं। गांव में शादी के लिए दुकान से चावल या दूसरे सामान लाने के लिए गांव के लोग विशेषकर महिलाएं सामूहिक तौर पर सहयोग करती हैं।

शादी समारोह में गणेश पूजन के साथ 'सुवाल पथाई' होती है। सुवाल पथाई में सारे गांव की महिलाएं शामिल होती हैं। सबसे पहले भगवान के नाम पर सुवाल बनाए जाते हैं। अपने सभी इष्ट मित्रों को सुवाल प्रसाद के तौर पर देने की परंपरा है।

लड़की की शादी में दूल्हे का जूता छिपाने की परंपरा अभी भी गांव में है। कई गांवों में अब दूल्हा-दुल्हन अपने विवाह की याद में वृक्षारोपण कर रहे हैं । ये परंपरा अधिकतर गांवों में बन रही है। जो कि अच्छी बात है।

घर गांव के कई लोग कहते हैं कि अब शादी विवाह के पुराने रीजि-रिवाज कम होते जा रहे हैं । पहले से लोग विवाह में अपने रिश्तेदारों को बुलाते थे। सारे रिश्तेदार काम निबटाने में मदद करते थे। अब तो खाना बनाने व टेंट का काम ठेके पर दिया जाने लगा है। गांव की बारात में बच्चे भी डांस करते हैं। महिला संगीत में सभी को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

– भूमिका रावत, कक्षा 8
राजकीय जू.हा.हरनोली, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

मेरे दादा

मेरे दादाजी का नाम श्री कैलाशचंद्र लोहनी है। मेरे दादाजी और हमारा मूल गांव अल्मोड़ा जनपद में सतराली (लोहना) है। मैं अपने दादाजी को प्यार से 'बाबू' कहती हूं। वे भी मुझे बहुत प्यार करते हैं।

मेरे दादाजी सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य हैं। वे एक लेखक भी हैं। हिंदी व कुमाउनी भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं -गुमानी पंत। मेरे दादाजी ने गुमानी की रचनाओं को 'गुमानी ग्रंथावली' के नाम से प्रकाशित किया है। उन्होंने बहुत सी कविताएं भी लिखी हैं। उन्होंने गुमानी की कविताओं का कुमाउनी अनुवाद भी किया है। उनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मेरे दादा को नए-नए स्थानों पर जाना व घूमना अच्छा लगता है। नए स्थान के बारे में जानना अच्छा लगता है। मैं भी उनके साथ कई स्थानों पर गई हूं।

पेड़ पौधों के बारे में जानना तथा पेड़ लगाना उनका शौक है। मैंने उनसे बहुत से पेड़ों के बारे में जाना है। हमारे टनकपुर के घर में उन्होंने बहुत से पेड़ लगाए हैं। मेरे दादाजी एक दोस्त की तरह मेरी मदद करते हैं।

- प्रांजलि लोहनी, कक्षा 9
होली विजडम स्कूल चंपावत

वृक्ष

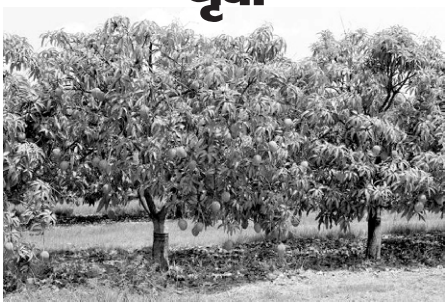

वृक्ष यदि सारे कट गए,
बच न सकेगी हरियाली।
चिड़िया तब कहां मंडराए,
कहां घूमेगी डाली-डाली।
बिन वर्षा के अन्न न होगा,
त्राहि त्राहि मच जाएगी।
वन ही जल,जल से जीवन,
दुनिया कैसे चल पाएगी।

- हर्षित उपाध्याय, कक्षा-10
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

स्कूल

चलो चलें हम सब पढ़ने,
फिर से खुल गए स्कूल।
कोरोना फिर आ रहा है,
बीमारी मत जाना भूल।
मास्क सबको लगाना है,
जरूरी है दो गज की दूरी।
हाथ धोओ सेनेटाइजर से,
सावधानी अब भी है जरूरी।

- ओजस्वी, कक्षा 5
जयपुरिया स्कूल गौरीगंज,अमेठी,उ.प्र.

नशा

नशा नाश की जड़ है,
नशे से दूरी बनाएं।
धुम्रपान गुटके से दूरी,
अच्छा बच्चा कहलाएं।
जो करता नशा समाज में,
सम्मान वह नहीं पाता है।
दुर्व्यसन से जो दूर रहे,
वहीं सफल हो पाता है।

- प्रतिष्ठा रावत, कक्षा-7
आयशर पब्लिक स्कूल परवाणु, सोलन,हि.प्र.

पुस्तक

ज्ञान का भंडार है पुस्तक,
शिक्षा मुझको देती है।
मेरी परम प्रिय सहेली,
साथ मेरा ये देती है।
पुस्तक होती दोस्त हमारी,
हमको देती ये सम्मान।
पुस्तक का सम्मान करे जो,
उसको मिलता ज्ञान।

- हर्षिता जोशी, कक्षा 9
अटल उत्कृष्ट विद्यालय फूलचौड,नैनीताल

मन करता है

मन करता है दादा बनकर,
मैं भी रौब जमाऊं।
मन करता है रोज मैं,
बाजार घूमने जाऊं।
मन करता है चिड़िया बन,
दूर देश घूमकर आऊं।
मन करता है नौकर रख लूं,
होमवर्क उससे कराऊं।

- जतिन सती, कक्षा 4
दून अकादमी, पंतनगर, ऊधमसिंहनगर

समय

समय के साथ चलो,
होगी हर मंजिल आसान।
पल-पल का हो सदुपयोग,
तभी मिलेगा हमको मान।
मंजिल यदि पानी है तो,
चलो समय के साथ।
महत्व समय का समझो,
वरना मलोगे हाथ।

- अर्जरागिनी सारस्वत, कक्षा-8
प्रिल्यूड पब्लिक स्कूल आगरा,उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

आठूं कौतिक

अल्मोड़ा जनपद के गेवाड़ (चौखुटिया) में प्रतिवर्ष चैत्र की अष्टमी को मेला लगता है। स्थानीय भाषा में मेले को आठूं का कौतिक कहा जाता है।

किवदंती है कि सन् 1900-1902 में वैराठ नगरी (चौखुटिया) में महामारी फैल गई। स्थानीय लोगों ने स्थानीय अगनेरी माता से महामारी रोकने की प्रार्थना करते हुए पशु बलि देने का संकल्प लिया। अगनेरी माता के मंदिर के जीर्णोद्धार के बाद 1902 में क्षेत्र के 24 थोकदारों के सहयोग से पहली बार अगनेरी मेला प्रारंभ हुआ। तब पशु बलि देने की परंपरा बन गई। माननीय न्यायालय द्वारा पशु बलि रोकने के बाद अब मेले में पशु बलि बंद कर दी गई है। वर्तमान में मेला समिति की पहल पर 5 दिन का मेला आयोजित किया जाता हैं

- देवरक्षिता नेगी, कक्षा 6
बाल विकास विद्या मंदिर भटकोट,चौखुटिया

सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत की जन्म स्थली कौसानी विश्व विख्यात है। कोसी और गोमती नदियों के बीच बसे कौसानी को भारत का स्विट्जर लेंड कहा जाता है। कौसानी बागेश्वर जनपद के गरूड़ विकास खंड में स्थित है। अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से कौसानी की दूरी 53 किलोमीटर है। महॉत्मा गांधी ने काफी दिनों तक कौसानी में प्रवास किया। अनासक्ति आश्रम में उनकी मधुर यादें संजोकर रखी गई हैं। सरला बहन द्वारा स्थापित लक्ष्मी आश्रम देखने भी यहां लोग जाते हैं। सुमित्रानंदन पंत बीथिका एक संग्रहालय के तौर पर सरकार द्वारा संचालित किया जा रहा है। कौसानी क्षेत्र में चाय का उत्पादन भी किया जाता है। कौसानी में चाय की फैक्ट्री भी लगी है। पिंगनाथ, बैजनाथ भी स्थानीय दर्शनीय स्थल हैं। अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से कौसानी की दूरी 53 किलोमीटर है। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन काठगोदाम है। दिल्ली आदि स्थानों से कौसानी के लिए सीधे बस सेवा भी उपलब्ध है।

- हर्ष पांडेय, कक्षा 7
केंद्रीय विद्यालय कौसानी, बागेश्वर

गांव की लड़कियां

गांव की लड़कियां बहुत ही मेहनती, परिश्रमी एवं जिम्मेदारियों से परिपूर्ण होती हैं। पाठशाला से आकर घर आकर घर के कामों में वे अक्सर संलग्न हो जाती हैं। गांव में बहुत काम होते हैं। घर के सारे काम करने के बाद भी गांव की लड़कियां अच्छे अंकों से उर्त्तीण होती हैं। गांव की लड़कियां मीलों पैदल चलती हैं। घास व लकड़ी आदि लाने जंगल जाती हैं। वे किसी भी काम में शर्म नहीं करती हैं।

मेरे गांव की लड़कियां भी बहुत मेहनती हैं। उनके भीतर किसी भी कार्य को करने की एक उमंग होती है। मैं एक गांव की लड़की हूं। पढ़ाई-लिखाई के साथ ही मैं घर के सारे काम कर लेती हूं। इसके साथ ही मैं कविता व लेखन के माध्यम से अपनी प्रतिभा को निखारने का प्रयास कर रही हूं। मुझे अपने आप पर गर्व है।

- सुहानी जोशी, कक्षा 12
राजकीय इंटर कालेज खैरना, नैनीताल

खेल

खो खो कबड्डी गिल्ली डंडा,
सब खेलों का अलग सा फंडा।
खेल हमको स्वस्थ बनाएं,
दिमाग में हलचल कराएं।
एकता सहयोग और सम्मान,
खेल भावना का होता ज्ञान।
स्वयं के लिए है वरदान,
देश का भी बढ़ाते मान।

- भूमिका गहतोड़ी, कक्षा 8
होली विजडम स्कूल मानेश्वर, चंपावत

गर्मी

गर्मी का जब मौसम आता,
सर्दी को ये दूर भगाता।
बच्चे आइसक्रीम खाते,
ठंडे पानी से नहाते।
नीबू पानी पीते जूस,
आम को ये लेते चूस।
स्कूल की छुट्टी हो जाती,
खेल कूद में मस्ती आती।

- प्रखर बहुगुणा, कक्षा-7
टच वुड स्कूल देहरादून

अनुशासन

नियमों का पालन करके,
बन जाएंगे हम सभ्य जन।
हर किसी की मदद होगी,
हर्षित होगा सबका मन।
अनुशासन में रहकर होगा,
देश दुनिया का विकास।
सभी रहेंगे अनुशासन में,
जन-जन से है मेरी आस।

- संजना आर्या , कक्षा 9
रा.इं.कालेज सलौंज,सोमेश्वर अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

पेड़

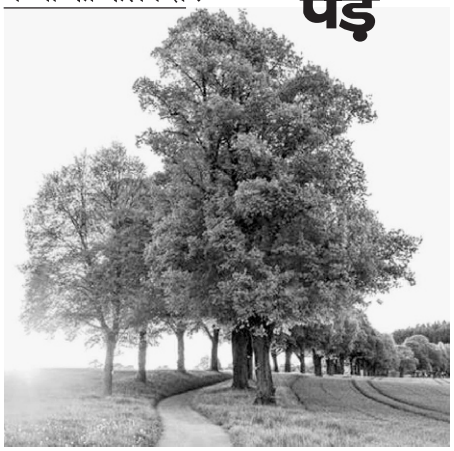

जीवन का आधार पेड़ हैं,
शुद्ध हवा ये देते हैं।
फल-फूल छाया देते,
नहीं हमसे कुछ लेते हैं।
धरती के आभूषण हैं ये,
मानव पर करते उपकार।
उपकारी होते हैं पेड़,
प्रकृति के ये हैं उपहार।

– भावना जोशी, कक्षा 10
राजकीय इंटर कालेज बड़ावे,पिथौरागढ़

स्वच्छता

कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
सफाई का हम रखें ध्यान।
स्वस्थ रहना है यदि,
चलाओ स्वच्छता अभियान।
बीमारी की जड़ गंदगी,
सफाई अभियान चलाना है।
सफाई बहुत जरूरी है,
सबको ये बताना है।

– अंजली राना, कक्षा 8
रा.कु.अ.सरस्वती वि. मंदिर खटीमा,ऊधमसिंहनगर

जंगल में आग

जंगल में जब लगती आग,
पेड़ स्वाहा हो जाते हैं।
चिड़िया व जीव जंतु,
बेमौत मारे जाते हैं।

– श्रेयश जोशी, कक्षा 3
सन वैली स्कूल देहरादून

सम्मान

हर लड़की को बहिन समझो,
बहिनों का करो सम्मान।
बहिनें सुरक्षित होंगी,
तभी बढ़ेगा देश का मान।
भाइयों को मिलें ये संस्कार,
बहिनें सुरक्षित हो जाएंगी।
भाई संग बहिना भी,
देश को आगे बढ़ाएंगी।

– तनीषा आर्या, कक्षा-8
राजकीय जूनियर हाईस्कूल जैनोली, अल्मोड़ा

गंगाणी

यमुना नदी के तट पर बसा,
गंगाणी हमारा प्यारा है।
बड़कोट नौगांव की धरती,
ये सब जगह से न्यारा है।
कस्तूरबा स्कूल यहां है,
यहां लड़कियां पढ़ती सारी।
मेहनत बहुत करती हैं,
ये स्कूल की शान हमारी।

– दिया, कक्षा 10
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि. गंगाणी, उत्तरकाशी

लड़कियां

लड़कियां नहीं हैं कम,
वे आसमां को छू रही हैं।
सब काम कर सकती हैं,
आज वे ये कह रही हैं।
खेल हो या राजनीति में,
वे अपना लोहा मनवा रही हैं।
मेहनत व आत्मविश्वास से,
वे देश व सरकार चला रही हैं।

– गुंजन, कक्षा-12
रा.बा.इं.कालेज बग्वालीपोखर,अल्मोड़ा

दूध

दूध हमको ताकत देता,
तुझको हम पी जाएंगे।
चीनी मिलाकर मीठा होता,
तुझको हम पी जाएंगे।

– ध्रुव शर्मा, कक्षा एल के जी
हैलो किड्स पूना, महाराष्ट्र

ऑनलाइन पढ़ाई

कोरोना में बंद हो गए,
बच्चों के सारे स्कूल।
मोबाइल ही बन गया तब,
बच्चों का स्कूल।
घर पर ही मोबाइल से,
शिक्षक हमें पढ़ाते थे।
होमवर्क जो भी मिला,
उसको चैक कराते थे।
गूगल मीट ही बन गया,
बच्चों का एक सहारा।
दुरूपयोग हुआ मोबाइल का
पढ़ाई से हुआ किनारा।

– निधि नेगी, कक्षा 12
राजकीय इंटर कालेज बांगीधार, अल्मोड़ा

सेनेटाइजर

पहले नहीं सुना था हमने,
सेनेटाइजर का नाम।
कोरोना में जान गए,
इसका भी हम काम।
निकलें जब भी घर से बाहर,
या घर में आ जाएं।
हाथों पर रगड़ो इसको,
रोगों से छुटकारा पाएं।
पानी व साबुन नहीं,
वैसे ही करो प्रयोग।
कोरोना भागेगा इससे,
मास्क का भी करो उपयोग।

– मुस्कान तिवारी, कक्षा 11
अटल उत्कृष्ट रा.इ.का.फूलचौड़, नैनीताल

बादल

आसमान पर छाए बादल,
मुझको खूब भाए बादल।
गड़गड़ करता बादल,
बादल भी तो लाता बादल।

– अंशिका शर्मा, कक्षा - 4
अभिनव पब्लिक स्कूल खंडवा, म.प्र.

बच्चों की कलम से :

गर्मी

गर्मी आई, गर्मी आई,
इस बार भीषण गर्मी आई।
बच्चों ने कुल्फी खाई,
सब बच्चों ने मस्ती पाई।
खट्टे मीठे तोड़े आम,
आम खाते राम श्याम।
काफल खाएं सुबह शाम,
फलों के भी बढ़ गए दाम।

– अर्पिता कलौनी, कक्षा 5
बोनाफाइड पब्लिक स्कूल चौखुटिया, अल्मोड़ा

पॉलीथीन

पर्यावरण के लिए खतरनाक,
होता है पॉलीथीन।
जलाने पर जहरीली गैस,
छोड़ता है पॉलीथीन।
सड़ता गलता नहीं है ये,
जमीन में न गाड़ो पॉलीथीन।
पर्यावरण यदि बचाना है,
प्रयोग करो मत पॉलीथीन।

– आस्था बड़म्वाल, कक्षा 10
राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर, रुद्रप्रयाग

बाघ

मैं दादी संग गांव गया,
सब कुछ था बस नया-नया।
रात में एक कुत्ता भोंका,
आधी रात में मैं तो चोंका।
कुत्ते भोंकते बारी-बारी,
कहीं ढोल कहीं फायर जारी।
सन्नाटे में एक था साया,
दादी बोली बाघ है आया।

– मौलश्री, कक्षा 6
सेंट एंड्रयूज पब्लिक स्कूल भवाली, नैनीताल

पाताल भुवनेश्वर

विश्व प्रसिद्ध पाताल भुवनेश्वर गुफा उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जनपद में है। घने देवदार के वृक्षों के मध्य स्थित पाताल भुवनेश्वर गुफा की अपनी अलग छटा हैं। यह गुफा समुद्र तल से 1350 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। गुफा के प्रवेश द्वार से लगभग 160 मीटर लंबी और लगभग 90 फीट गहरी गुफा में जाने के लिए रास्ते में जंजीर को पकड़कर जाना पड़ता है। पहले गुफा में जाने के लिए दिन में भी चिराग (चीड़ के पेड़ की लीसा युक्त लकड़ी) जलाकर जाना पड़ता था। अब गुफा के अंदर बिजली जाने से गुफा के अंदर दिन या रात का कोई आभास नहीं होता है।

माना जाता है कि सबसे पहले आदिगुरू शंकराचार्य ने इस गुफा की खोज की। यह भी माना जाता है कि उन्होंने यहां तांबे का शिवलिंग स्थापित किया। गुफा के अंदर देवी देवताओं की एक से एक मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि गुफा में केदारनाथ, बद्रीनाथ, तथा अमरनाथ चारों धामों के दर्शन होते हैं। धार्मिक तथा ऐतिहासिक रहस्यों को जानने के इच्छुक लोगों को पाताल भुवनेश्वर अवश्य जाना चाहिए। यहां पहुंचने के लिए दिल्ली तथा कई प्रमुख शहरों से काठगोदाम तक रेल सेवा है। काठगोदाम से भवाली- अल्मोड़ा- घौलछीना- सेराघाट होते हुए पाताल भुवनेश्वर पहुंचा जा सकता हैं।

– दिव्यांशु जोशी, कक्षा-8
रा.उ.मा.वि.पोखरी, गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

युद्ध

युद्ध, युद्ध, चारों ओर युद्ध,
इसमें लोग मारे जाते हैं।
बिलखते बच्चों की आवाजें,
सो तक नहीं पाते हैं।
खाने को न मिलता कुछ,
सब असहाय हो जाते हैं।
युद्ध के नाम पर,
बेमौत मारे जाते हैं।
हर युद्ध के बाद समझौता,
यहां होता रहा है।
युद्धों में मौत, हर कोई,
अपनों को खोता रहा है।

– निष्ठा चंडोक, कक्षा-9
अटल उत्कृष्ट रा.इ.का.फूलचौड़, नैनीताल

गरीब की पढ़ाई

सबसे कठिन होती है,
गरीब बच्चे की पढ़ाई।
रटता बहुत है वह पर,
समझ न आए उसकी लिखाई।
न होती है पेंसिल,
न कोई पढ़ाने वाला।
अलग सी दुनिया उसकी,
हर अक्षर उसका काला।

– मीनाक्षी आर्या, कक्षा 12
आर्य कन्या इंटर कालेज अल्मोड़ा

राष्ट्रीय एकता

हिंदू मुस्लिम सिख इसाई,
सभी का हम करें सम्मान।
मिलजुल सबको रहना हैं,
हम सब भारत की संतान।
जाति धर्म को छोड़कर,
करें नव युग की शुरूआत।
देश में एकता बनी रहे,
सबको बतानी है ये बात।

– हिमांशी, कक्षा 10
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

बच्चों की कलम से :

छुट्टी

गर्मी की छुट्टी क्या आई,
सब बच्चों में मस्ती छाई।
परीक्षा की थकान मिटाई,
छुट्टी आई, छुट्टी आई।
मम्मी लजीज खाना है लाई,
मिलकर खाएं बहना भाई।
बच्चों संग आई है ताई,
सबके लिए लाई मिठाई।
सोन पापड़ी मुझको भाई,
हम सबने मिलकर खाई।
दोस्तों संग तो मस्ती आई,
छुट्टी आई, छुट्टी आई।

– अनेरी पोद्दार, कक्षा 6
मेडीकैप्स इंटरनेशनल स्कूल इंदौर, म.प्र.

वर्षा

वर्षा रानी वर्षा रानी,
जल्दी से तुम आ जाओ।
गरमी बहुत बढ़ गई है,
सबको राहत दे जाओ।

– आर्या ठाकुर, कक्षा 4
प्लाइंग क्लर एकैडमी, खंडवा, म.प्र.

छाता

दोपहर की धूप में,
राहत देता छाता।
बारिश से हमें बचाता,
मेरा प्यारा छाता।
छोटे बड़े, अलग रंग में,
बाजार में मिलता छाता।
संभाल कर रखती हूं,
जब काम न आए छाता।

– आयुषी श्रीवास्तव, कक्षा 10
रा.बा.इं.कालेज जामौ, अमेठी,उ.प्र.

वर्षा

गर्मी के मौसम में देखो,
वर्षा आई, वर्षा आई।
बच्चे बूढ़े खुश हैं सारे,
गरमी से राहत है पाई।
झम-झम वर्षा हो रही,
धरती पर हरियाली छाई।
कागज की नाव बनाकर,
खेल रहे हैं बहना भाई।

– नव्या, कक्षा 6
जवाहर नवोदय विद्यालय ताड़ीखेत, अल्मोड़ा

मेरा सपना

वैज्ञानिक मुझको बनना है,
यही है मेरा सपना।
सवाल करूं क्या क्यों कैसे,
ये विचार है अपना।
अंतरिक्ष में जाऊंगी मैं,
मिलूंगी चांद तारों से।
नए-नए शोध करूंगी मैं,
बात करूंगी सितारों से।

– मीमांसा भट्ट, कक्षा 5
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

हमारा गांव

मेरे गांव का नाम दलाड़ है। यह अल्मोड़ा जनपद में बसौली-ताकुला के पास है। मैं समय-समय पर अपने गांव जाती हूं। मैं शहर वापिस आकर गांव में बिताए पलों को याद करती हूं तो मैं भाव विभोर हो जाती हूं। गांव में प्रवेश करते ही कुमाउनी परंपराओं के कई नमूने देखने को मिल जाते हैं। भले ही यहां शहरों जैसा टीम-टाम न हो पर आराम व सकून बहुत मिलता है। प्रकृति की गोद में बसा मेरा गांव किसी का भी दिल जीत ले। यहां बहने वाली शीतल पवन हमारे मन और मस्तिष्क को शांत कर देती है। वहां का सौंदर्य देखते-देखते मन नहीं भरता। जी करता है पूरे दृश्य को अपनी आंखों में कैद कर लें।

लोग हजारों रुपए खर्च करते हैं ऐसी जगह घूमने के लिए। मैं स्वयं को बहुत सौभाग्यशाली समझती हूं कि ईश्वर ने मुझे प्रकृति की गोद में ही रहने का मौका दिया। हमारे गांव में पानी का स्रोत है। जिसे हम धारा कहते हैं। इस धारे में हम लोग पानी भरने जाया करते हैं। पानी भरने के दौरान ही कभी किसी पत्थर पर आंखें बंद करके बैठने पर तरह-तरह की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। इस बात का अनुभव होता है कि एक कवि को अपने तन मन की अपेक्षा इन प्राकृतिक दृश्यों को मोह क्यों होता है।

हमारे गांव के लहलहाते खेत, चहचहाती चिड़िया,फूलों पर मंडराती तितलियां और वे सुनहरे पर्वत किसी को भी मंत्र मुग्ध करने के लिए काफी हैं। सौंदर्य का ऐसा साक्षात्कार केवल किस्मत वालों को ही नसीब होता है।

– अक्षरा भट्ट, कक्षा 11
.कुर्मांचल अकादमी,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

मेरे टीचर्स

मेरे टीचर्स प्यारे टीचर्स,
सभी स्कूल के न्यारे टीचर।
टीचर हमको रोज पढ़ाते,
भविष्य हमारा उज्ज्वल बनाते।
होंसलों की वह उड़ान कराते,
हर मुश्किल आसान बनाते।
अच्छे टीचर वही कहलाते,
सही गलत की पहचान कराते।
टीचर मुझको राह दिखा दो,
कोरोना से बचना सीखा दो।

- माधुरी पटेल, कक्षा-12
स्पर्श रा. दृष्टिबाधित बा.इं.कालेज लखनऊ, उ.प्र.

टमाटर

गोल-गोल लाल टमाटर,
बच्चे रोज खाते हैं।
रोज सब्जी खाते हैं जो,
ताकतवर बन जाते हैं।

- अश्वि ठाकुर, कक्षा के जी
ग्लोबल राइसे इंटरनेशनल स्कूल खंडवा, म.प्र.

मन करता है

मन करता है कलम उठाकर,
रंग बिरंगे चित्र बनाऊं।
मन करता है तोता बनकर,
डाली में चढ़ अमियां खाऊं।
मन करता है बतख बनकर,
पानी में गोते लगाऊं।
अच्छा तैराक बनकर मैं,
मां का नाम रोशन कर जाऊं।

- यश चौहान, कक्षा 3
रा. प्रा.वि.बसभीड़ा, अल्मोड़ा

हमारा गांव

हमारे गांव का नाम कोटाबाग है। यह उत्तराखंड राज्य के नैनीताल जनपद में स्थित है। यहां की आबादी लगभग 6000 है। कोटाबाग तीन ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है। यह एक घाटीनुमा क्षेत्र है। इस क्षेत्र को कोटा भाबर नाम से भी जाना जाता है।

कोटाबाग के पश्चिम में दाबका नदी बहती है। इसका प्राचीन नाम देवकी नदी था। इस नदी से पूरे क्षेत्र को पीने तथा सिचाई के लिए पानी मिलता है।

यहां वैसे तो लगभग सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं । परंतु अच्छे ईलाज के लिए लोगों को शहर की ओर जाना पड़ता है। जिस कारण जनता को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

यहां पर धान, मडुवा, सोयाबीन, भट्ट, गडेरी, हल्दी, गेहूं, चना तथा मसूर आदि फसलें उगाई जाती हैं। हाथी, बंदर, व नील गाय व दूसरे जंगली जानवरों से यहां की खेती काफी प्रभावित हुई हैं। यहां के लोग काफी मेहनती हैं। पॉलीहाऊस के माध्यम से बे मौसमी सब्जियां उगाकर लोग अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं। गांव में महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से एकजुट होकर कई रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। यहां के जन प्रतिनिधियों को यहां स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने आदि के लिए प्रयास करने चाहिए।

- भूमिका पाठक, कक्षा 7
डी एम ए सी स्कूल कौटाबाग,नैनीताल

खिलौने

खिलौने ही खिलौने,
सब बच्चों को भाते हैं।
म्याऊं करती बिल्ली,
कभी कार में चढ़ जाते हैं।
गुड्डा गुड़िया सब को भाए,
सबको चाहिए मोबाइल।
खेल-खेल में सभी दिखाते,
अपनी-अपनी स्टाइल।

- उत्कर्ष सती, कक्षा-7
कैंपस स्कूल पंतनगर,ऊधमसिंहनगर

हमारा विद्यालय

हमारे विद्यालय का नाम रा.उ.मा. विद्यालय चौराकलेत है। यह अल्मोड़ा जनपद के हवलबाग विकास खंड में स्थित है। समीपवर्ती कई गांवों के बच्चे इस स्कूल में पढ़ते हैं। मेरे विद्यालय में 8 शिक्षक हैं। हमारे स्कूल के सर एवं मैडम अच्छे हैं। यहां कक्षा 6,7 तथा 8 के बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन की व्यवस्था भी है।

हमारे स्कूल के प्रधानाचार्य जी श्री जगदीशचंद्र पाठक जी हैं। जो हमें हिंदी भी पढ़ाते हैं। वे बच्चों को पढ़ाने के साथ ही खेलकूद तथा दूसरी गतिविधियों के लिए प्रेरित करते हैं। हमारा विद्यालय बज्वाड़ गांव में स्थित है। जो कि ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। उसके बावजदू यहां बिजली तथा पानी आदि की व्यवस्था है। बच्चों को कंप्यूटर भी सिखाया जाता है।

- करन अधिकारी, कक्षा-10
रा.उ.मा.वि.चौराकलेत,अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

जीविका, कक्षा-5
रा.प्रा.वि.इंद्रगढ़ी,गालंद धौलाना,हापुड़,उ.प्र.

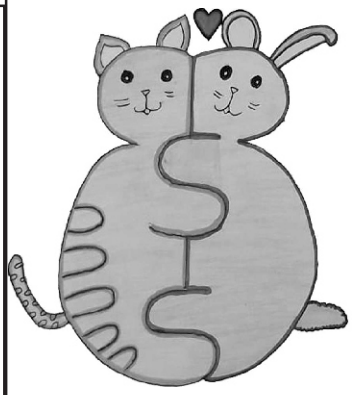

ज्योति भट्ट, कक्षा-7
राजकीय इंटर कालेज, मनान, अल्मोड़ा

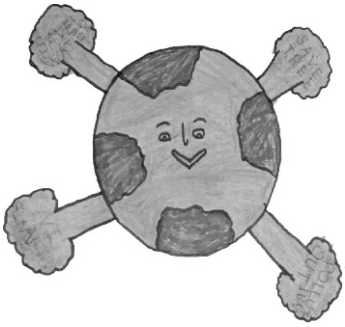

दीक्षा अधिकारी, कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय बसेरा, द्वाराहाट

नंदनी अधिकारी, कक्षा-2
के.पी.एस. द्वाराहाट, अल्मोड़ा

आर्युष पी योगेश, कक्षा-3
संस्कृति स्कूल दिल्ली

गौरव बिष्ट, कक्षा-5
सरस्वती शिशु मंदिर अल्मोड़ा

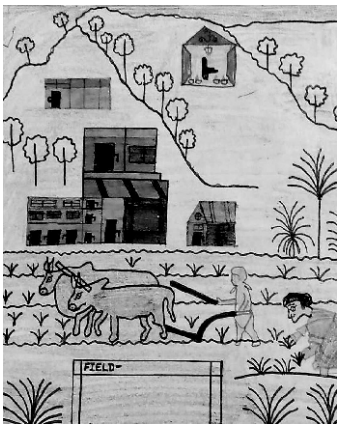

अर्पिता कलौनी, कक्षा-5
बोनाफाइड पब्लिक स्कूल चौखुटिया,अल्मोड़ा

प्राची जोशी, कक्षा-1
कंट्रीवाईड पब्लिक स्कूल, सोमेश्वर,अल्मोड़ा

हरि हृदयांश त्रिपाठी, कक्षा-4
एम.डी. तिवारी इंटर कालेज द्वाराहाट

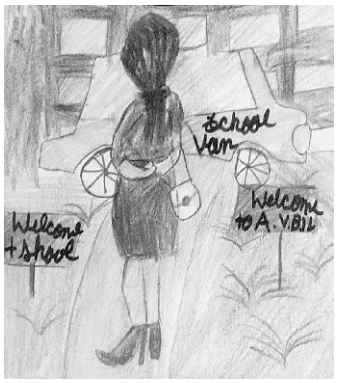

पावनी कृष्ण गुरूरानी, कक्षा-5
बिरला स्कूल हल्द्वानी, नैनीताल

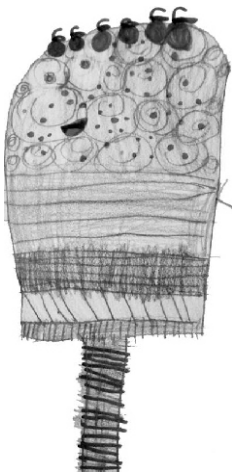

निरवी चावला, कक्षा-1
पब्लिक स्कूल करनाल, हरियाणा

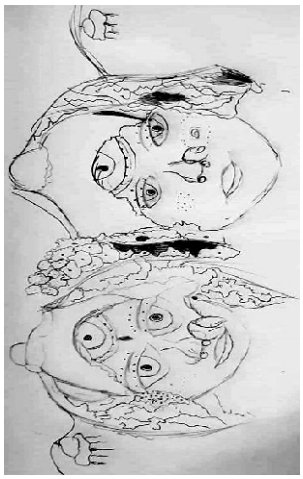

शिव समेंदु त्रिपाठी, कक्षा-5
एम.डी. इंटर कालेज द्वाराहाट, अल्मोड़ा

निबंध प्रतियोगिता – 41

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'इस बार की मेरी गरमी की छुट्टियां' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 30 जुलाई, 2022 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-40 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। - संपादक

यदि मैं अपने स्कूल की प्रधानाचार्या होती

यदि मैं अपने स्कूल की प्रधानाचार्या होती तो सबसे पहले तो मैं स्वयं अनुशासन में रहती। समय पर स्कूल आती और समय पर स्कूल से जाती। तभी मैं स्कूल में अनुशासन के लिए दूसरों से कहती। मैं बच्चों की पढ़ाई का विशेष ध्यान रखती। अपने कार्यालय को तो मैं बहुत साफ-सुथरा रखती। मैं बच्चों के साथ ही समस्त स्टाफ से अच्छा व्यवहार करती। सभी को अनुशासन बनाए रखने के लिए कहती।

मैं अपने स्कूल में एक पुस्तकालय जरूर खोलती। उस पुस्तकालय में बच्चों के लिए उनकी मन पसंद पुस्तकें रखवाती। किसी दिन सारी अध्यापिकाएं स्कूल में नहीं आती या खाली पीरियड होता तो बच्चों को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती। इससे बच्चे खाली समय में कुछ न कुछ नया सीखते।

मैं बच्चों के लिए खेल के सामान की व्यवस्था करवाती। बच्चे अपने क्लास के बच्चों के माध्यम से अपनी समस्याएं प्रधानाचार्य तक पहुंचाएं। इसके लिए मैं समय-समय पर क्लास मॉनीटर की मीटिंग करवाती। मैं अभिभावकों की मीटिंग भी बुलाती। उनसे अनुशासन बनाए रखने में सहयोग लेती व अभिभावकों से सुझाव भी मांगती। मेरा प्रयास होता कि बच्चे खाली समय में खेल का आनंद लें। मैं समय-समय पर बच्चों की अतिरिक्त गतिविधियां भी करवाती। मेरे स्कूल के बच्चे नैतिक मूल्यों को जानें। इसके लिए मैं कहानी के माध्यम से उन्हें नैतिक मूल्यों की जानकारी देती। मैं बच्चों से मोबाइल का उपयोग देर तक नहीं करने को कहती। बच्चे मुझसे सीधे बात करें, ऐसा करती।

- श्रेयजल सिंह,
रा.क.उ.वि.चिरैयाटांड,पटना, बिहार

(इसकेअतिरिक्त दिशा शर्मा (चौखुटिया), प्रियका(हल्द्वानी) दीया शर्मा (छिताड़) निबंध भी प्रशंसनीय था। - संपादक

अंतर बताओ

यहां बने दोनों चित्रों में आपको १० अंतर

कविता लिखो प्रतियोगिता–70

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो।चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 30 जुलाई 2022 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड- 263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता - 69 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

चिड़िया

सुबह-सुबह रोज ही चिड़िया,
घर आंगन में आती है।
सूरज के आने से पहले,
बच्चों को रोज जगाती है।
सूरज के आते ही रोज,
चहल-पहल हो जाती है।
चूं चूं करती चिड़िया हमें,
अनुशासन का पाठ पढ़ाती है।

— पाखी जैन, कक्षा 5
मिकाडो इंटरनेशनल स्कूल उदयपुर,राजस्थान

इसके अतिरिक्त गुंजन शर्मा (पिलानी), अदिति (उत्तरकाशी), भावना जोशी (पिथौरागढ़) प्रमोद तिवारी (लखनऊ), शालिनी सक्सेना (प्रयागराज) उपासना जोशी (अल्मोड़ा), ईशा शुक्ला (मुरादाबाद) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। - संपादक

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

3 वर्ष का शुल्क एक सौ साठ रुपए भिजवाकर सहयोग करें। विज्ञान एवं जन विज्ञान आधारित तथा समसामयिक रचनाएं सादर आमंत्रित हैं।

संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक,
मोहल्ला खोल्टा, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
मो. : 9412928498, 9412162950

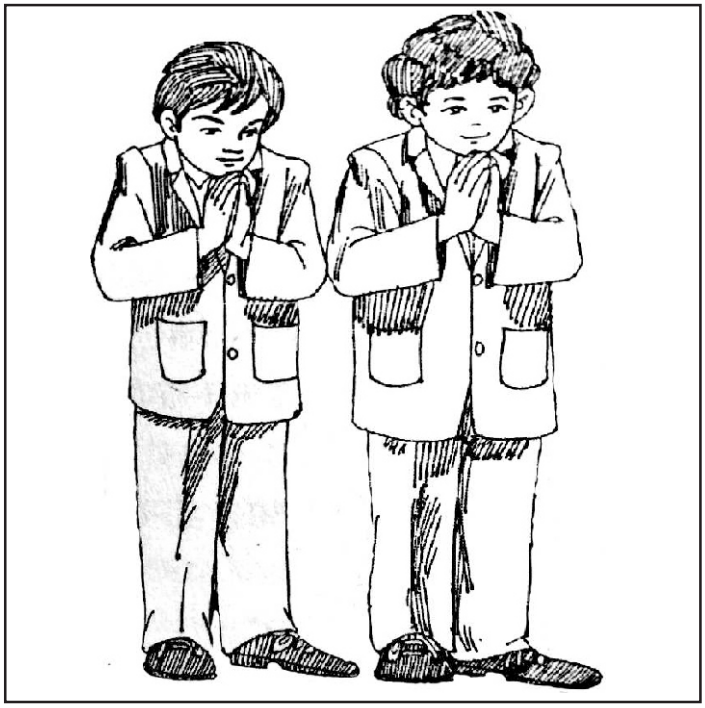

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

			2			9		8
	1			5			6	7
5						4		
7		3			8			
		6				3		
	5		9			7		1
		1						6
2	6			8			9	
9		8			4			

चुटकुले

टिल्लू- मैंने आज सुबह पानी का उल्लू बनाया।
बिल्लू- वह कैसे ?
टिल्लू - मैंने पानी गरम तो किया पर नहाया ही नहीं।

●●●

एक जंगल में दो चूहे शिकार करने निकले।
पहला चूहा- मैं पेड़ पर चढ़ जाता हूं। कोई शिकार आएगा तो उसके ऊपर कूद जाऊंगा।
दूसरा चूहा- मैं झाड़ी में छिप जाता हूं। कोई आएगा तो पीछे उसे पकड़ लूंगा।
(तभी हाथी आ गया। पहला चूहा हाथी के ऊपर कूद गया)
दूसरा चूहा- दबा के रखना। मैं भी आता हूं।

●●●

मोनू - अंकल! मैंने आपकी लिखी किताब पढ़ी। आपने बिल्कुल बादशाह अकबर की तरह लिखा है।
साहित्यकार- बेटा मोनू! बादशाह अकबर तो लिखना ही नहीं जानते थे।
मोनू - तभी तो कह रहा हूं अंकल।

●●●

गोलू- पापा जी! आपकी दा.....
पापा-बेटा! खाते समय बात नहीं करते हैं।
गोलू- ठीक है पापा जी।
पापा(खाना खाने के बाद) - अब बता क्या कह रहा था?
गोलू- पापा जी! आपकी दाल में मक्खी गिरी थी.....

●●●

तीन देशों के लोग आपस में बात कर रहे थे।
अमेरिका का आदमी- हमारे यहां लाईट जाती है तो पावर हाऊस में फोन करते हैं।
चीन का आदमी- हमारे यहां लाईट जाती है तो फ्यूज चैक करते हैं।
भारत का आदमी -हमारे यहां लाईट जाती है तो सबसे पहले पड़ोसी के घर पता करते हैं। यदि पड़ोस में भी लाईट नहीं है तो खुश हो जाते हैं।

●●●

भिखारी- डॉक्टर साहब! मुझे प्लास्टिक सर्जरी करवानी है।
डॉक्टर - तुम तो ऐसे ही खूबसूरत लग रहे हो।
भिखारी- खूबसूरत के चक्कर में कोई भी फूटी कौड़ी नहीं देता है साहब! इसलिए सर्जरी करवानी है।

●●●

- **नव्या, कक्षा 7,** जवाहर नवोदय विद्यालय ताड़ीखेत,अल्मोड़ा
- **रिया, कक्षा 8** रा.जूनियर हाईस्कूल हरनोली,अल्मोड़ा
- **योगिता जोशी,कक्षा 2,** रा.प्रा.वि.पोखरी,पिथौरागढ़
- **मीमांसा भट्ट,कक्षा 5,** रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट
- **यशस्वी, कक्षा 3 ,**जयपुरिया स्कूल गौरीगंज,अमेठी,उ.प्र.

क्या आप जानते हैं?

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन को संक्षिप्त में इसरो यानी ISRO (INDIAN SPACE RESEARCH ORGANISATION) कहा जाता है। यह भारत की सबसे पहली स्पेश एजेंसी है। इसरो संसार की सबसे बड़ी गवर्नमेंट स्पेश एजेंसियों में से एक है। इसरो की स्थापना सन् 1969 में हुई। इसके पहले चेयरमैन प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई थे। इसका मुख्यालय अंतरिक्ष भवन बेंगलौर में है। मुख्य स्पेश स्टेशन सतीश धवन स्पेश सेंटर श्री हरिकोटा में है।

इसरो की पृष्ठभूमि की बात करें तो भारत में आधुनिक स्पेस रिसर्च की स्थापना के लिए सन् 1920 से तैयारी होने लगी थी। उस दौर में प्रसिद्ध वैज्ञानिक एस.के.मिश्रा ने कोलकाता में कई शोध किए। इसी क्रम में सी.वी.रमन और मेघनाथ साहा ने भी इस काम को आगे बढ़ाया। भारत की आजादी से पहले सन् 1945 में विक्रम सारा भाई और होमी भाभा ने स्पेश साइंश में काफी शोध किए।

भारत की आजादी के बाद पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने भारत में स्पेश टेक्नॉलाजी को बढ़ावा देने के लिए सन् 1962 में इंडियन नेशनल मैटी फार स्पेश की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य एडवांस स्पेश टेक्नॉलाजी का इस्तेमाल करते हुए देश की उन्नति करना निर्धारित किया गया। डॉ. विक्रम साराभाई इसके पहले चेयरमैन नियुक्त किए गए। बाद में भारत सरकार ने इंडियन नेशनल मैटी फार स्पेश का नाम बदलकर इसरो कर दिया। 14 जनवरी, 2022 को इसरो के वर्तमान अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कार्यभार ग्रहण किया। आगामी 3 वर्ष तक वे अध्यक्ष बने रहेंगे।

इसरो ने भारत की पहली सेटेलाइट आर्य भट्ट बनाई। इसे 19 अप्रैल,1975 को सोवियत यूनियन ने लांच किया। सन् 1980 में रोहिणी भारत द्वारा बनाए गई पहली सेटेलाइट बनी। 22 अक्टूबर, 2008 को भारत ने अपना पहला मिशन चंद्रमा पर भेजा। जिसका नाम चंद्रयान-1 रखा गया। 5 नवंबर, 2013 को इसरो ने मंगलयान मिशन लांच किया। जो 24 सितंबर, 2014 को सफलतापूर्वक मंगल की कक्षा में प्रवेश कर गया। कोरोना काल में इसरो की गतिविधियां भी लगभग ठप्प सी हो गई थी। इस वर्ष 2022 में इसरो ने पीएसएलवी रॉकेट के माध्यम से एक ऑल वेदर अर्थ ऑब्जर्वेशन सेटेलाइट सहित दो अन्य उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजा। इसरो की उपलब्धियों से आज भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना ली है।

- नबाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल

कहानी लिखो प्रतियोगिता–70

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 30 जुलाई, 2022 तक भेजकर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-69 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

स्कूल जाने की ललक

आज अखिल ददा की शादी है। दिन की बारात है। दुल्हन के पिताजी ने बारात कम से कम लाने को कहा है। इसलिए गांव के हर घर से केवल एक को बारात का निमंत्रण है। बच्चों को बारात में नहीं जाना है। पर बच्चे तो बच्चे हैं। उन्हें तो बारात में जाना ही है। माता-पिता के मना करने के बाद भी बच्चे बारात के लिए तैयार हैं।

कक्षा 5 में पढ़ने वाले सोनू ने तो सुबह से आकाश-पाताल एक कर रखा है। कभी पांव पटक रहा है तो कभी जबरदस्ती बारात में जाने की बात करता है। सुबह से लगातार रोता जा रहा है। सारे लोग उसे समझा चुके हैं। दूल्हे के पिताजी भी उसे समझा चुके हैं। पर वह किसी की भी बात मानने को तैयार नहीं है।

अखिल ददा के पिताजी ने कहा, ''कोरोना के कारण बारात बहुत कम मंगाई है। हमें बच्चों को बारात में ले जाने में कोई परेशानी नहीं है। बच्चों का अपना शौक है। बच्चे बारात में कौन सा ज्यादा खाना खाते हैं। पर कोरोना से बचाव जरूरी है। इसलिए बच्चों को बारात के लिए मना किया है।''

किरन की मां ने कहा, ''बेटा किरन! हम सबको दूल्हे व दुल्हन के पिताजी की बात पर ध्यान तो देना होगा।''

'' मां! गांव के सारे बच्चे बारात में जा रहे हैं। मेरे दोस्त केशव, स्नेहा, बबली, विवेक सब जा रहे हैं। ये खूब रोए। इनके पिताजी अब इनको बारात में ले जाने के लिए तैयार हैं। हमें दूसरों की परेशानी भी तो समझनी चाहिए।'' किरन ने अपनी मां से कहा।

किरन ने मां से कहा, ''हमारे स्कूल में मैडम ने कहा कि कोरोना अभी भी खतरा बना हुआ है। हमें भीड़-भाड़ में नहीं जाना चाहिए। मां मैं बारात में नहीं जाऊंगी। वैसे भी स्कूल में मासिक परीक्षाएं चल रही हैं। मैं तो बारात में जाना होता तब भी स्कूल जाना नहीं छोड़ती।''

किरन की मां ने किरन को गले से लगाते हुए कहा, ''बेटा! जो अपने माता-पिता की बात मानते हैं। जो अपने स्कूल के सर या मैडम की बात मानते हैं। जो बड़े लोगों की बात मानते हैं।'' उनको सब अच्छा मानते हैं।

किरन के गाल चूमते हुए मां ने कहा, ''मेरी बिटिया! मुझे तुम पर गर्व है। मैं तुमको जल्दी तैयार कर देती हूं।'' कहकर मां ने किरन का टिफिन व पानी की बोतल तैयार कर उसके हाथ में थमाई। मां आधे रास्ते तक किरन को छोड़ आई। किरन को स्कूल जाता देख गांव के कई बच्चे स्कूल को तैयार होकर चले गए।

— तान्या अवस्थी, कक्षा 8
रैड रोज एकैडमी, फरीदाबाद, हरियाणा

(इसके अतिरिक्त सजल जैन (आगरा), आयुशी मिश्रा (ऋषिकेश), अखिलेश शुक्ल (कानपुर), मोनिका (देहरादून), तान्या अवस्थी (शाहजहांपुर), दीया शर्मा (अल्मोड़ा), श्रेया जोशी (बागेश्वर) की कहानी भी प्रशंसनीय रही। - संपादक

अनमोल वचन

- क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। - प्रेमचंद
- महान विचार ही कार्य रूप में परिणत होकर महान कार्य बनते हैं। - आचार्य बिनोबा भावे
- *किसी को माफ करना कमजोरी नहीं, बस सामर्थ्यवान ही ऐसा कर सकता है।* - चाणक्य

  सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप समंदर पार नहीं कर सकते । - *रवींद्रनाथ टैगौर*
- *अपना दोष स्वयं देख लेना कमजोरी नहीं मजबूती का लक्षण है।* - *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी*

★ संकलन : संजय मठपाल,पत्रकार,द्वाराहाट,अल्मोड़ा

पहेलियां

● डॉ.कमलेंद्रकुमार श्रीवास्तव
रावगंज,कालपी,जालौन,उ.प्र.

1. हरे रंग की काया मेरी, मुंह है मेरा लाल,
   कड़वी मिर्ची मुझको भाती, बतलाओ तत्काल।
2. काले रंग का ऐसा पक्षी, एक आंख से देखे,
   पंछी चतुर सयाना है वह, करता काम अनोखे।
3. बोली मेरी बहुत सुरीली, बागों की मैं रानी,
   सभी जगह में आदर पाती, बोलूं मीठी बानी।
4. सभी पक्षियों का मैं राजा, काया मेरी सुंदर,
   केवल मोती चुगता हूं मैं, रहता मान सरोवर।

उत्तर: 1.मिर्ची, 2.कौआ, 3.कोयल, 4.हंस

कॉटन कैंडी (गुड़िया के बाल)

आपने मेले में गुड़िया के बाल बेचते हुए दुकानदार को देखा होगा। घंटी बजाते हुए गांव व मुहल्लों में भी इसे बेचने के लिए लोग आते हैं। इसे कॉटन कैंडी के नाम से जाना जाता है। इसे गुड़िया के बाल, बुढ़िया के बाल तथा हवा मिठाई के नाम से भी जाना जाता है।

आपने कॉटन कैंडी को खाया भी होगा। स्वाद के साथ ही यह दिखने में भी आकर्षक होती है। रूई की तरह इसका वजन नहीं होता है। मुंह में जाते ही यह घुल जाती है। आजकल तो शादी, विवाह तथा वर्थ डे पार्टियों में इसके स्टॉल भी लगे रहते हैं। आइए जानते हैं कि कॉटन कैंडी का आविष्कार कैसे हुआ।

विलियम जेम्स मॉरिसन अमेरिका के प्रसिद्ध दंत चिकित्सक थे। वे हमेशा नई-नई चीजें बनाते थे। सन् 1897 में उन्होंने अपने मित्र हलवाई जॉन सी व्हार्टन के साथ मिलकर एक मशीन तैयार की । इस मशीन में गरम चीनी को घुमाने पर कॉटन कैंडी तैयार होती थी। सन् 1904 में उन्होंने अपनी इस मशीन को वर्ल्ड फेयर मेले में लगाया। सभी ने कॉटन कैंडी को बहुत पसंद किया। उस समय इस मशीन का नाम 'फेयर फ्लास' नाम दिया गया। सन् 1921 में इस मशीन को 'कॉटन कैंडी' नाम दिया गया। कहा गया कि जिस प्रकार कॉटन को कपास के पेड़ पर लगे रेशेदार फूलों से तैयार किया जाता है। उसी प्रकार कैंडी को बनाते समय कम मात्रा में चीनी को मशीन में घुमाया जाता है और वह रूई जैसा बन जाती है। सन् 1970 में कॉटन कैंडी मशीन का वर्तमान स्वचालित स्वरूप बना। अब तो कैंडी अलग-अलग फ्लेवर में तथा अलग-अलग रंगों में मिलती है। वर्तमान में कॉटन कैंडी दुनिया के लगभग सभी देशों में मिलती है। इसका प्रचलन अमेरिका में सबसे अधिक है। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए अमेरिका में 7 दिसंबर को 'राष्ट्रीय कॉटन कैंडी दिवस' मनाया जाता है। यदि आपने अभी तक कॉटन कैंडी यानी गुड़िया के बाल का स्वाद नहीं लिया है तो जरूर इसे खाना।

- गरिमा राना
- राजकीय इंटर कालेज जसकोट,अल्मोड़ा

कुमाउनी कविता :

हिट दिदी

● केशरसिंह डंग्सेरा

हिट दिदी, हम गुलि-आंटइ खेलुल,
ना भुलू मैं सू-सांपइ खेलुल।
हिट दिदी, हम माटा-कुड़ बनौंल,
ना भुलू मैं पाता पुड़ बनौंल।
हिट दिदी माट में घुसघुसि खेलुल,
ना भुलू चिरी जालौ म्यार झगुल।
हिट दिदी रिट्ठू बियां दांणि खेलुल,
ना भुलू, मैं तहां जै पाणि भरूल।
हिट दिदी बाग और बाकर बनुल,
ना भुलू मैं तहां जानर पिसुल।
हिट दिदी झाल बटि ककाड़ टोड्डुल,
ना भुलू मैं तहां लकाड़ फोड्डुल।
हिट दिदी हई और बल्द बनुल,
ना भुलू मैं तहां जै घास काटुल।
हिट दिदी लुका छिपी खेल करूंल,
ना भुलू हिट तहां किताब पड़ुल।
हिट दिदी घ्वड़ै की सवारी कौंल,
ना भुलू खाण पिणौ तैयारी कौंल।

- तकुल्टी, पो. सुरे (द्वाराहाट), अल्मोड़ा
मोबाइल -9456545448

गढ़वाली कविता :

खेति-पाति

● प्रीतम अपछ्याण

धान काटी कुंडिकु लगै, मंडै तक सिजौं
झाड़ि की पराल मुठी, न्यार घम्यै द्यों।
लै टीपी गिंवड़ी सार, गुच्छि बणाये ग्यों
ऊमि पकै संगता बांटि, तू नि आये क्यों?
दैं गिंडाई अछ्यणो धैरि, बलड़ि सुखै द्यों
फीर बल्दा फीर फीर, पुछड़ि रिंगै द्यों।
कोदु झंगोरू कौणि चिणा, लाठौंन् कटकौं
राजमा बिंगोर छीमी, चू हलकै द्यों।
मास गौथ भट्ट सुण्टा, लगुला लग बणौं
खेति कि धाण्यूं मा ब्वेकु, हात बटै द्यों।

- राजकीय इंटर कालेज,अमस्यारी,
गरूड़, बागेश्वर
मोबाइल- 9412924354

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

पहाड़ा ननां हाल-चाल ठीकै छन। जो ननां कैं सरकारल मोबाइल/टेबलेट दिरौ। उ मोबाइल पर रात-दिन ज्येड़ी छन। उनेरि रातै नीन हरै गे। नान पैली बटी घर पन ईज-बौज्यू बताई काम करछी। जै दिन बटी टेबलेट मिलि रौ। उ दिन बटी किताब खालि खोलि बे बैठि रूनी। वीडियो गेम पिक्चर जाणि क्ये-क्ये देखनी। नान ईज-बौज्यू कै बताण रयीं कि स्कूल बटी ऑनलाइन काम मिलि रौ। य वजैल ईज-बौज्यू क्ये नि कुन। जो ननां पास पैली बटी मोबाइल छी। उ तो मोबाइल पर लागियै रूंछी। आब गरीब और कम पढ़ी-लिखी परिवारा नान लै बिगड़ण रयीं।

पहाड़ा गौं नान-तिन छुट्टी दिन जंगल बटी काफो टोड़ि बे ल्यूण रयीं। क्वे-क्वे तो काफो बेचि बे आपुण जेब खर्च लै चलाण रयीं। गरमी में पहाड़ा जंगलों में आगि लागि रौ। गौं पना कुछ नान लै आग निमाण हूं जाण रयीं। स्कूली ननां दर्ज बदली गो। प्राइवेट स्कूल वालूल स्कूल मजै दुकान खोलि रै। आब स्कूलै ड्रैस, ज्वात, बस्त, कॉपि-किताब, टाई स्कूल बटी मिलण रै। ईज-बौज्यू परेशानी कम हैगे। नान लै एक जसै बस्त देखि बे खुशि छन। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल ठीक हैं। जिन बच्चों को सरकार ने मोबाइल/टेबलेट दिया है। वे रात दिन मोबाइल पर चिपके हैं। उनकी रात की नींद खो गई है। बच्चे पहले से घर में माता-पिता का बताया काम करते थे। जिस दिन से टेबलेट मिला है। उस दिन से खाली किताब खोलकर बैठे रहते हैं। वीडियो गेम, पिक्चर जाने क्या-क्या देखते हैं। बच्चे माता-पिता को बता रहे हैं कि स्कूल से ऑनलाईन काम मिला है। इस कारण माता-पिता कुछ नहीं कहते हैं। जिन बच्चों के पास पहले से मोबाइल था। वे तो मोबाइल पर लगे रहते थे। अब गरीब और कम पढ़े लिखे परिवार के बच्चे भी बिगड़ रहे हैं।

पहाड़ के गांव के बच्चे छुट्टी के दिन काफल तोड़ कर ला रहे हैं। कोई-कोई तो काफल बेचकर अपना जेब खर्च भी चला रहे हैं। गरमी में पहाड़ के जंगलों में आग लगी है। गांव के कुछ बच्चे भी आग बुझाने जा रहे हैं। स्कूल के बच्चों की कक्षा बदल गई है। प्राइवेट स्कूल वालों ने स्कूल में ही दुकान खोली है। अब स्कूल की ड्रेस, जूते, बस्ता, कापी-किताब, टाई स्कूल से ही मिल रही है। माता-पिता की परेशानी कम हो गई है। बच्चे भी एक जैसा बस्ता देखकर खुश हैं। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

कहानी :

जादूई अक्षरों का कमाल

● नीलम राकेश

कौशल के माता-पिता चिंतित थे। कौशल की लंबी बीमारी से वे उतना परेशान नहीं हुए थे, जितना उसके मनोबल के टूट जाने से हो रहे थे। पूरे दो महीने के बाद कौशल ने पुनः स्कूल जाना आरंभ किया था। जाते ही उसे पता चला कि केवल एक माह बाद वार्षिक परीक्षाएं आरंभ हो रही हैं। सुनते ही उसका हौसला पस्त हो गया। एक विश्वास उसके मन में बैठ गया कि इतने कम समय में पढ़ कर वह अच्छे अंक नहीं ला सकेगा। माता-पिता और शिक्षक उसे समझा-समझा कर थक गए, परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। इस डर के कारण वह पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगा पा रहा था।

कौशल अपनी मेज पर विज्ञान की किताब खोल कर बैठा था। परंतु उसकी आंखें सामने कैलेंडर पर टिकी थी। उसी समय उसकी मम्मी उसके लिए दूध लेकर आई। बेटे को इस तरह बैठा देख कर उसे समझाने लगीं, "कौशल, बेटा! तुम पढ़ने में मन लगाओ। जो समय चला गया। वह तो लौट कर नहीं आ सकता, पर जो समय बचा है उसे तो इस तरह मत गवांओ।"

"मम्मी! मैं क्या करूं? मैं पढ़ने बैठता हूं तो मुझे डर लगने लगता है।" "डर? कैसा डर?" मम्मी चौंक गई।

"पढ़ाई का डर !.....मुझे लगता है मैं चाहे जितनी कोशिश कर लूं । मुझे कुछ याद नहीं होगा।"

"यह तुम्हारा वहम है बेटा! तुम तो सदा से पढ़ने में अच्छे रहे हो। तुम्हारे अध्यापकों का विश्वास है कि तुम अब भी थोड़ी मेहनत कर लोगे तो अच्छे अंकों से पास हो जाओगे।"

"मम्मी मैं भी तो यही चाहता हूं।" थोड़ा हिचकता हुआ कौशल बोला। "मम्मी! आप अगर मेरी थोड़ी मदद करें तो शायद यह संभव हो जाए।"

"तुम जो कहोगे मैं करूंगी बेटा! बोलो क्या करना है?" मम्मी खुश होती हुई बोली।

"मम्मी! छमाही परीक्षा में तो मेरे काफी अच्छे नंबर हैं ही। मैं प्रथम आया था। वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंक तभी आ सकते हैं। जब कोई जादूई शक्ति या दैवी शक्ति मेरी मदद करे.. .....।"

"अरे..... कैसी बात कर रहे हो? नंबर अपनी मेहनत से आते हैं ना कि दैवी शक्ति या जादूई शक्ति से।" मम्मी झल्ला उठीं। "मम्मी! प्लीज मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए। मेरा एक दोस्त है उसकी दादी ने उसे एक ताबीज बनवा कर दिया है जिसकी वजह से उसका सब काम ठीक हो जाता है। आप भी यदि ऐसा ही कुछ मेरे लिए किसी साधू बाबा से ला दीजिए तो . .....।"

उसी समय फोन की घंटी बजने लगी और मम्मी एक नजर बेटे पर डाल कर उठ गई। अगली सुबह कौशल के लिए एक अनोखी सुबह थी। वह अभी ब्रश कर ही रहा था कि उसके कानों में पापा की आवाज पड़ी।

"सुनो! तुम जल्दी से नहा धो कर तैयार हो जाओ और कौशल को भी तैयार कर लो।" "कहीं जाना है क्या?"

"हां! हमारी किस्मत बहुत अच्छी है। अभी जब मैं टहलने गया था तो पता चला एक बहुत पहुंचे हुए महात्मा ने शहर के बाहर पड़ाव डाला है। वे सीधे हिमालय से यहां आए हैं, आज ही चले जाएंगे। वे इतने सिद्ध पुरूष हैं कि उनकी उम्र तक कोई नहीं जानता। बिल्कुल एकांत में रहते हैं। अपनी शक्ति से वे भगवान से सीधी बात करते हैं। यदि वे हमारे बेटे को आशीर्वाद दे दें तो कौशल के प्रति हमारी सारी चिंता ही दूर हो जाएगी।"

"अरे यह तो बड़ी अच्छी बात है।" मां खुश हो गई।

"अच्छा तुम लोग तैयार हो। मैं बाबा को चढ़ाने के लिए कुछ फल-फूल, मिठाई आदि लेकर आता हूं।" पापा के जाते ही

कौशल दौड़ता हुआ आया और मम्मी से लिपट गया। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। शहर के बाहर एक निर्जन स्थान पर पापा ने कार रोक दी। पूरे सामान के साथ वे तीनों एक बड़े बरगद की ओर बढ़े। पास पहुंचने पर कौशल बाबा को देखकर रोमांचित हो उठा। लंबा चौड़ा डील-डौल, सफेद जटा वाले बाल, मूछें तो मूछें आंखों के ऊपर बरौनी तक सफेद, गले में केवल रूद्राथ की माला। वे आंखें मूंदे समाधि में लीन थे। वे तीनों उन्हें प्रणाम कर बैठ गए।

"बेटे को लेकर परेशान हो बच्चा!" "हां बाबा!" मम्मी-पापा एक साथ हाथ जोड़कर बोले।

"चिंता की कोई बात नहीं है। यह बहुत भाग्यशाली बच्चा है।"

"बाबा! मेरे बेटे को कोई ताबीज दे दीजिए।"

"ताबीज क्या है मां! मैं तुम्हारे बेटे को ईश्वर का आशीर्वाद दिला देता हूं।" कौशल के साथ-साथ मम्मी-पापा भी बाबा की ओर विस्फाटित नजरों से देखते रह गए। बाबा ने एक सफेद कागज निकाल कर कौशल को दिया।

"इस कोरे कागज पर ऊपर 'ऊं' लिखो।" महात्मा का गंभीर स्वर निर्जन वातावरण में गूंज उठा।

'ऊं' लिखा हुआ कागज बाबा ने अपने सामने फैला लिया। कौशल से हाथ जोड़ने के लिए कहा। फिर कुछ-कुछ बुदबुदाते हुए वे चावल के दाने उस पर फेंकते रहे। उसके बाद मम्मी-पापा द्वारा चढ़ाए फूल उस पर डाल दिए। पास ही रखे एक कपड़े को उठा कर कागज पर से फूल आदि किनारे खिसका दिया। सबकी आंखें आश्चर्य से फैल गई। कौशल तो खुशी से उछल ही पड़ा। कागज पर सुस्पष्ट अक्षर अंकित थे।

"सफलता निश्चित है, मेहनत करो।"

महात्मा ने आंखें खोल दी और गंभीरता से बोले, "जाओ बेटा! ईश्वर का आशीर्वाद तुम्हें मिल गया है। इस कागज को ले जाओ। अपनी पुस्तकों के पास रखना और मेहनत करना।"

इतना कहकर महात्मा पुनः समाधि में लीन हो गए। घर आकर कौशल तुरंत अपनी पढ़ाई में जुट गया। जब परीक्षा परिणाम सामने आया तो कौशल कक्षा में प्रथम आया था। परीक्षा परिणाम लेकर कौशल घर पहुंचते ही चहका, "मम्मी ऽ ऽ ऽ' पापा ऽ ऽ देखिए दैवी शक्ति से मैं प्रथम आ गया।"

पापा मुस्कुराए, फिर बोले, "कौशल, बेटा! इस कपड़े से इस सफेद कागज को जरा पोछ दो।"

कागज को पोछते ही कौशल चौंक गया। सुंदर लिखावट में अक्षर उभर आए थे। "बधाई कौशल, तुम्हारी मेहनत रंग लाई है।"

"प ... प ..... पापा ..... ये ..... ये क्या है?"

" विज्ञान!"

"मतलब?"

"बेटा! मतलब ये कि तुम्हारा आत्मविश्वास डगमगा रहा था। उसे बचाने के लिए मैंने अपने एक रसायन विज्ञान के प्रोफेसर मित्र का सहारा लिया था। उस दिन साधु वेश में मैं ही अपने मित्र को वहां बैठा कर आया था। उसकी सफेद दाढ़ी मूछें सब मेकअप था। ये शब्दों का उभरना एक रासायनिक प्रतिक्रिया है। जो फैरिक क्लोराइड और पोटेशियम फैरोसाइनाइड के संपर्क से संभव होती है।"

"लेकिन ये शब्द बने कैसे पापा?"

"बेटा! सबसे पहले फैरिक क्लोराइड घोल द्वारा सादे कागज पर कलम की सहायता से शब्द लिख लेते हैं। जब उस पर पोटैशियम फैरोसाइनाइड घोल में भीगा कपड़ा फेरते हैं तो उस कागज पर लिखे अक्षर उभर आते हैं।"

"पापा! यह तो कमाल का जादू है।"

"बेटा! असली कमाल तो तुम्हारी मेहनत ने दिखाया है। हां, तुम्हारे आत्मविश्वास को जगाने का कमाल जरूर इन जादूई अक्षरों ने किया है।" पिता-पुत्र दोनों प्रसन्नता से मुस्कुरा उठे।

- 610/60, केशव नगर कालोनी, सीतापुर रोड, लखनऊ,उ.प्र.
मोबाइल-8400477299

खोजबीन

नीचे दिए गए शब्दों में कम से कम 8 पालतू पशुओं के नाम छिपे हैं। ढूंढ कर लिखिए।

स य ड़ा ब ग बै
री ल्ली कु ल भैं भे
घो क त्ता बि ड़ गा

जानकारी:

ऐसा क्यों होता है?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीवन विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

★ दूध से दही क्यों बनता है?

दरअसल, दूध में कैसीन नामक प्रोटीन पाया जाता है। जब दूध में जामुन कें रूप में थोड़ा सा दही डाला जाता है, तो दूध में काफी मात्रा में जीवाणु प्रवेश कर जाते हैं। दूध से दही का बनना एक रासायनिक क्रिया है जो जीवाणुओं व केसीन प्रोटीन के बीच होती है। यह क्रिया पूरी तरह से वातावरण के ताप पर निर्भर करती है। वातावरण का ताप अधिक होने पर यह क्रिया जल्दी होती है और कम होने पर देर में पूरी होती है। इसी वजह से गरमी में दही चार घंटों में और सर्दी में बारह घंटों में जमता है।

★ नींद क्यों आती है?

नींद आना एक स्वाभाविक क्रिया है। जब तुम कार्य करते-करते थक जाते हो, तो तुम्हारे मस्तिष्क में रक्त प्रवाह कम होने लगता है। इसी रक्त प्रवाह के कम होने से शरीर को सुस्ती घेर लेती है। फलस्वरूप, नींद आने लगती है। बिस्तर पर सोने के लिए लेटते समय सर्वप्रथम पैर, फिर भुजाओं, गर्दन, जबड़ों और चेहरे पर शून्यता का अनुभव होता है। जानते हो नींद के दौरान मांसपेशियां भी शिथिल हो जाती हैं।

★ मकड़ी जाल क्यों बुनती है?

हां, मकड़ी अपने शिकार को पकड़ने के लिए ही जाल बुनती है। वह स्वयं जाल के किनारों पर रहती है। जैसे ही कोई जीव इस जाल में फंस जाता है, तो मकड़ी को इसकी सूचना मिल जाती है। मकड़ी को जाल बुनने में उसकी टांगें सहायता करती हैं। जिनकी संख्या आठ होती है। इसके अलावा टांगों के बाल भी इस कार्य में सहायक रहते हैं।

★ चमगादड़ पक्षियों से भिन्न क्यों है?

चमगादड़ स्तनधारी जानवरों की श्रेणी में आते हैं। स्तनधारी ऐसे जीव हैं जिनमें मादाएं बच्चों को जन्म देती हैं तथा उन्हें अपना दूध पिलाती हैं। हां एक कारण और भी है इसका। चमगादड़ के शरीर पर पक्षियों की भांति पंख नहीं पाए जाते हैं। चमगादड़ के पंखों की बनावट इस तरह की होती है कि वे सीधे नहीं खड़े हो सकते हैं। बस, इसी वजह से वे पेड़ों पर उल्टे लटके रहते हैं।

★ कलफ लगे कपड़े क्यों नहीं खरीदने चाहिए?

कुछ कपड़े बिना कलफ लगे होते हैं और कुछ में कलफ का प्रयोग करके उन्हें आकर्षक बनाया जाता है। लेकिन, कलफ वाले कपड़े खरीदने से तुम्हें बचना चाहिए। कारण, जब तक तुम इन्हें बिना धुले हुए पहनोगे तो ये ठीक रहेंगे। लेकिन, धुलते ही इनका कलफ भी धुल जाता है और वे झीने हो जाते हैं तथा आकार में भी परिवर्तन आ जाता है। पके हुए चावल या मैदा की पतली लेई को ही कलफ कहते हैं जो कपड़ों में कड़ापन लाने के लिए लगाई जाती है।

★ लड़के ज्यादातर बलवान क्यों होते हैं?

शरीर दस अंग-तत्रों से मिलकर बना है। जिसमें एक है पेशी तंत्र। पेशीतंत्र में विभिन्न पेशियां आती हैं जिनकी वजह से शरीर में मजबूती आती है। लड़कों व लड़कियों की शारीरिक संरचना भिन्न होती है। लड़कों में पेशीतंत्र अधिक विकसित होता है जबकि लड़कियों में कम। बस, इसके कारण ही लड़के ज्यादातर बलवान मिलते हैं।

★ बहरे बच्चों को बोलने में कठिनाई क्यों होती है?

बोलना और सुनना इन दोनों क्रियाओं का परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। तुम बोलते समय अपनी आवाज को जरूर सुन पाते हो जिससे तुम्हें धीमी या तेज बोलने की भी प्रेरणा मिलती है। लेकिन, बहरे बच्चों के साथ ऐसा नहीं होता। बहरे बच्चे बोलते समय अपनी तुतली भाषा को ठीक से नहीं सुन पाते हैं। जिससे उन्हें बोलने में कठिनाई का अनुभव होता है।

★ पंख होते हुए भी मुर्गी क्यों नहीं उड़ पाती है?

पंख होते हुए भी मुर्गी उड़ने में असमर्थ है। वह अपने पंखों को फड़फड़ाकर थोड़ी दूर तक अवश्य जा सकती है लेकिन दूसरे पक्षियों की भांति लंबी दूरी नहीं तय कर पाती है। जानते हो क्यों? दरअसल, अधिक देर तक हवा में उड़ने के लिए शरीर का हल्का होना जरूरी है। मुर्गी का शरीर भारी होता है और पंखों की मांसपेशियां भी कमजोर। इसी कारण वह उड़ने में असमर्थ है।

★ मिर्गी क्यों आती है?

तंत्रिका तंत्र का शरीर में विशेष महत्व माना गया है। मिर्गी का आना इसी तंत्र से संबंधित एक रोग होता है। जब थोड़े समय के लिए दिमाग की सामान्य गतिविधि प्रभावित (विचलित) हो जाती है, तो मस्तिष्क उत्तक में कुछ बदलाव आने लगता है। नतीजा यह निकलता है कि दिमाग से कुछ रसायन निकलता है जिसे मिर्गी का आना या मिर्गी का दौरा कहते हैं। दिमाग को चोट पहुंचने की स्थिति में भी दौरे आते हैं।

★ गरमियों में कुत्ते क्यों हांफते हैं?

गरमियों में शरीर को गर्म होने से बचाना तो हर जीव चाहता है। है, न? कुत्ते भी अपने शरीर को गर्म होने से बचाने के लिए हांफने की क्रिया बार-बार करते देखे जाते हैं। कुत्तों के शरीर में तुम्हारे शरीर की तुलना में स्वेद (पसीना) ग्रंथियां कम रहती हैं। जब कुत्ता तेजी से सांस लेता है तो यह हवा उसके फेफड़ों व मुंह से नमी को बाहर की ओर खींचती है। हांफने की इस क्रिया से कुत्ते को ठंडक महसूस होती है।

- 785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम,हरियाणा
मोबाइल-9210456666

कहानी :

पढ़ लिखकर मैं डॉक्टर बनूंगी

● श्यामल बिहारी महतो

आंगन का दृश्य बेहद आनंद करने वाला था। जिसे देखकर ही मैं सु:खद अनुभूति महसूस करने लगा था। दीवार से सटकर, एक कुर्सी पर मुस्कान बैठी थी। उसके कानों में डॉक्टरी आला लगा हुआ था। आला का अगला हिस्सा उसने सामने स्टूल पर बैठी अपनी सहेली रीतू के सीने पर लगाया था। वह उसकी धड़कनें और सासों की गति की जांच कर रही थी। फिर उसने रीतू से कहा, "तुम अपना मुंह खोलो रीतू..!" रीतू ने मुंह खोल दिया।

"मुंह से बदबू आ रही है। दांत भी गंदे हो गए हैं। तुम ब्रस नहीं करती हो क्या रीतू ...?" उसने पूछा।

"ब्रस हमारे घर में नहीं है। हम दांतुन और दंत मंजन से दांत साफ करते हैं ...!" रीतू ने कहा।

"दांतुन ठीक से नहीं करती हो, तभी दांत इतने गंदे हैं। बाबू जी से कहो, ''बाजार से ब्रस और टूथपेस्ट लाना है।"

"बाबू जी घर में नहीं हैं। बाहर काम करने गए हैं...!"

"जब आएंगे, तब मंगा लेना और दांत-मुंह ठीक से साफ करना.. ठीक है...!"

"ठीक है, डॉक्टरनी साहिबा...!"

मैं अभी-अभी ऑफिस से घर लौटा था। आंगन में कदम रखने ही वाला था। तभी यह अद्भुत नजारा देख दीवार से सटकर खड़ा हो गया। ताकि उन दोनों की नजर मुझ पर न पड़े। डॉक्टर-मरीज के खेल में कोई व्यवधान न हो। मुस्कान कह रही थी, "तुम हर दिन नहाती भी नहीं हो क्या रीतू..?, कपड़े भी तुम्हारे कितने गंदे है..इस तरह तो तुम बीमार पड़ जाओगी..!"

"मां रोज-रोज नहाने नहीं देती है। कोयला लाने कोलियरी चली जाती है। घर में पानी भी नहीं रहता है। मैं छोटी हूं, कुएं से पानी ला नहीं सकती हूं। कैसे नहाऊंगी-कपडे भी इसीलिए गंदे हैं।" रीतू ने अपनी मजबूरी बताई।

"ठीक है, मां से पानी लाकर घर में रखने को कहना और तुम खुद नहाना और खुद कपड़े धोना.. ठीक है..!"

"ठीक है....!" "तोंई यहां काहे खड़ा हुआ...?" पीछे से पत्नी आकर बोली। बात उन दोनों ने सुन ली।

"अरे बाबा आ गया.. बाबा आ गया..!" कह मुस्कान मेरी ओर दौड़ पड़ी। "बाबा! मेरा बिस्कुट ला दिए?"

"बिल्कुल ला दिए हैं, बैग में है।" उसे गोद में उठाते हुए मैंने प्यार से पूछा, "पहले तुम ये बताओ, अभी जो तुम दोनों खेल रही थी वो कहां से सीखा?"

"हम तो ऐसे ही खेलते हैं बाबा!" मुस्कान मुस्कुरा उठी।

अकस्मात मुझे चंद्रगुप्त मौर्य की बाल कहानी याद आ गई थी। वो भी बचपन में अपने बाल सखाओं के साथ इसी तरह राजा-प्रजा का नाटक खेला करते थे। जो बाद में भारत का शक्तिशाली मौर्य सम्राट बन बैठे थे। तभी मैंने उसकी दादी की ओर देखते हुए मुस्कान से पूछा था। "मुस्कान! तुम पढ़ लिखकर क्या बनोगी?" मुस्कान बैग से बिस्कुट निकाल रही थी। मेरी बात ठीक से सुन नहीं पाई। उसने पूछा, "क्या कहा बाबा?"

"तुम पढ़ लिखकर क्या बनना चाहोगी?"

"मैं ...मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर बनूंगी बाबा ...!" और हंसते हुए वह गोद से उतर गई थी।

"ठीक है, बोहनी दादी के घुटने का इलाज से करना।"

"ये बोहनी क्या होता है.. बाबा?"

"शुरुआत...!"

"ठीक है, डॉक्टर बनते ही मैं दादी का घुटना ठीक कर दूंगी बाबा!" कहते हुए रीतू के साथ वह बाहर भाग गई।

- बोकारो, झारखंड
मोबाइल- 6204131994

नभ पर छाए

● राजेंद्र निशेश

चम-चम-चम-चम बिजली चमकी,
काले बादल नभ पर छाए।
बाहर गए हुए दादा जी,
छाता नया संग में लाए।
दादी-अम्मा तले पकौड़े,
बड़े मजे से सबने खाए।
दादा बोले दूंगा टॉफी,
जो भी मीठा गान सुनाए।
फूलों ने भी खुशी मनाई,
डाल-डाल पर वे इतराए।
झर-झर-झर-झर पानी बरसा,
ऐसे बादल नभ पर छाए।

-2698, सैक्टर 40,चंडीगढ़
मोबाइल-9827874578

कहानी :

मछली की सैर

● नरेंद्र श्रीवास्तव

''मम्मी! हम दोनों भाई-बहन अब बड़े हो गए हैं। अब तो हमें सैर कराने ले चलो।'' मिछी अपनी मम्मी से बोली।

''बिटिया! आज रविवार है। आज बहुत भीड़ होती है। मैं नहीं चाहती, भीड़भाड़ में हम कोई मुसीबत में पड़ें और सैर का मजा बिगड़ जाए। हां, कल अवश्य चलेंगे।'' मम्मी समझाते हुए बोली।

''ठीक है मम्मी! कल ले चलना।'' मिछी और मछी एक साथ बोले।

''शाबाश! तुम दोनों बहुत समझदार हो। बड़ों की बात मानते हो।'' मम्मी खुश होकर बोली और काम में लग गईं। मिछी और मछी भी वहीं 'भागो,पकड़ो' का खेल खेलने में व्यस्त हो गए।

दूसरे दिन बड़े सवेरे दोनों बच्चे उठ गए और सैर करने के लिए तैयार होने लगे।

''मम्मी मैं सैर के लिए तैयार हो गईं हूं।'' मिछी मछली ने मम्मी से कहा।

''और मम्मी, मैं भी तैयार हूं।'' मछी बोला।

''बहुत अच्छे, मेरे बच्चो! आज मैं तुम दोनों भाई-बहन को नदी की सैर कराने ले चलती हूं। दोनों मेरे आजूबाजू हो जाओ और साथ-साथ चलो।'' मम्मी बोली।

मम्मी के कहे अनुसार दोनों बच्चे आजूबाजू में होकर मम्मी के साथ चलने लगे।

''मम्मी! इन मछलियों का रंग अपने जैसा क्यों नहीं है ?'' मछी ने पूछा।

''बेटा, ये भगवान की बनाई दुनिया है। यहां हजारों तरह के जीव-जंतु और पेड़-पौधे हैं। हम सभी को सबके साथ मिल जुलकर रहना चाहिए।'' मम्मी ने समझाया। फिर बोली, ''देखो, ये गोल पीठ वाला। इसे कछुआ कहते हैं। इसकी यह गोल पीठ बहुत मजबूत होती है।''

तभी मिछी बोली, ''मम्मी ये दूसरा कछुआ? परंतु इसके गोल पीठ नहीं है।''

''बेटी! ये कछुआ नहीं है। इसे केकड़ा कहते हैं।'' मम्मी ने बतलाया।

''मम्मी! ये सामने से क्या आ रहा है'' मछी पूछने लगा।

''बेटा! ये नाव है। इसमें बैठकर लोग इस पार से उस पार जाते हैं। बच्चो! इससे कुछ दूर ही रहकर चला करो। हां, कभी-कभी कुछ लोग हमारे लिए खाने का स्वादिष्ट भोजन डालते हैं। उसे सावधानी से खा लिया करो।'' मम्मी ने विस्तार से बतलाया।

तभी नाव पास आई। मम्मी जल्दी से बच्चों को नाव से कुछ दूर ले गईं। तभी किसी ने कुछ पोटली से उड़ेला। मम्मी फौरन बच्चों को वहां ले गईं और पोटली से उड़ेले दानों को खाने लगी।

नाव चली गई।

''वाह मम्मी! खाने में मजा आ गया।'' मछी बोला।

''हां मम्मी! बहुत स्वादिष्ट भोजन था।'' मिछी भी बोली।

''मैंने कहा था।'' मम्मी बोली।

''मम्मी वो सफेद रंग का क्या है और उस पर वो क्या उड़ रहा है? मछी ने पूछा।

''मछी बेटा! ये मंदिर है और उसके ऊपर जो उड़ रहा है, उसे झंडा कहते हैं।'' मम्मी ने बतलाया।

''कितना सुंदर दिख रहा है?'' मिछी बोली।

''मैंने बतलाया था न। यहां रविवार को बहुत लोग आते हैं।'' मम्मी बोलीं।

''मम्मी! ये लोग यहां नदी में क्या कर रहे हैं?'' मछी ने पूछा।

मम्मी बोली, ''बेटा! ये यहां नहाते हैं।''

''मम्मी! यहां दोनों तरफ कितना सुंदर दिख रहा है। मुझे तो बहुत मजा आ रहा है।'' मछी बोला।

''मम्मी! हम हर रविवार के दूसरे दिन यहां आएं तो कितना मजा आएगा।'' मिछी बोली।

''हर रविवार के दूसरे दिन ही क्यों? रोज-रोज क्यों नहीं।'' मछी बोला।

''तुम बच्चे भी बस, अरे आज का मजा लो। कल की कल देखेंगे।'' मम्मी बोली।

जानकारी:

आईसक्रीम की कहानी

● कृपालसिंह शीला

गरमी में अधिकतर लोग आईसक्रीम खाते हैं। कुछ लोग जाड़ों में भी आईसक्रीम खाते हैं। आजकल तो विवाह व अन्य समारोहों में भी आईसक्रीम का प्रचलन बढ़ गया है। आज की तरह पहले रेफ्रिजरेटर या आईस फैक्ट्रियां नहीं थी। हजारों किलोमीटर दूर से बर्फ मंगवाकर लोग आईसक्रीम तैयार करते थे।

माना जाता ईसा पूर्व सिकंदर के शासन काल में फूलों के रस तथा शहद को बर्फ में मिलाकर खाते थे। ईसा पूर्व 618 से 97 के बीच चीन में भैंस के दूध ा और आटे आदि को मिलाकर आईसक्रीम जैसा कोई व्यंजन खाया जाता था। बाद में चीन में आईसक्रीम बनने की नई-नई तकनीकें तैयार हुई। ये तकनीक इटली तक भी पहुंची। फ्रांस के राजा हैनरी द्वितीय का विवाह इटली की राजकुमारी के साथ हुआ। कहा जाता है कि इटली की राजकुमारी अपने साथ कुछ रसोइयों को भी साथ लाई। जो कि अलग-अलग व्यंजनों के साथ ही बर्फ मिलाकर कुछ व्यंजन तैयार करते थे। दरअसल उन दिनों आज की तरह फ्रिज या रेफ्रिजरेटर तो थे नहीं। यात्रा के समय व्यंजन को खराब होने से बचने के लिए उसकी पेंकिंग बर्फ में की जाती थी। इससे वह व्यंजन बर्फ में जम जाता था। इस व्यंजन को सभी ने सराहा। संभवतया यहीं से आईसक्रीम की शुरूआत हुई होगी।

सन् 1660 में फ्रांस में आईसक्रीम का काफी प्रचार हुआ। सन् 1744 में 'आईसक्रीम' शब्द पहली बार ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल किया गया। सन् 1851 में अमेरिका में बोस्टन ने आईसक्रीम का कारखाना लगाया। तब से आईसक्रीम आम आदमी को भी उपलब्ध होने लगी। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में अमेरिका के इवनस्टोन शहर में संडे के दिन आईसक्रीम सोडा बेचा जाता था। स्वास्थ्य पर इसके बुरे प्रभाव का देखते हुए आईसक्रीम सोडा पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। इस पर व्यापारियों ने सोडा को सिरप में बदलकर नया पेय पदार्थ बना दिया। जिसे आईसक्रीम संडे कहा जाने लगा। इसी दौर में आईसक्रीम में फलों तथा मेवों का उपयोग किया जाने लगा। सन् 1904 में सेंटलुइस में आयोजित विश्व मेले में पहली बार आईसक्रीम कोन के माध्यम से ग्राहकों को दिया जाने लगा।

अब तो अधिकतर घरों में फ्रिज/रेफ्रिजरेटर हैं। जिसमें लोग अपनी सुविध ाानुसार बर्फ तैयार कर लेते हैं। आईसक्रीम बनाने में फुल क्रीम वाला दूध, कस्टर्ड पाउडर, मेवे तथा दूध आदि की जरूरत होती है। अपने मन पसंद फ्लेवर में घर पर आईसक्रीम तैयार की जा सकती है। बादाम कुल्फी, सोडा आईसक्रीम, केक आईसक्रीम, पान कुल्फी, मैंगो कुल्फी, राजभोग फ्लेवर, स्ट्रा बेरी तथा बटर स्कांच आदि आईसक्रीम के प्रमुख फ्लेवर हैं। शुगर के मरीजों के लिए बादाम, अंजीर व वनीला फ्लेवर में शुगर फ्री आईसक्रीम भी बाजार में उपलब्ध है। समारोहों के लिए आईसक्रीम की जरूरत है तो आजकल बाजार में आसानी से आईसक्रीम मिल जाती है।

-बासोट,अल्मोड़ा

''मम्मी! ये क्या है?'' मिछी ने पूछा।

''मिछी! वो कचरा है। उसको बहने दो। वहां मत जाओ। कुछ नासमझ लोग नदी में कचरा बहा देते हैं। ये उनकी ही करामात है।'' मम्मी बोली।

''मम्मी! अब उस किनारे चलते हैं।'' मछी बोला।

''ठीक है चलो।'' मम्मी यह कहकर उस किनारे की ओर चल पड़ी। खूब जी भर घूमने के बाद मम्मी बोली, ''अब बहुत घूम लिया। चलो घर लौटते हैं।''

''हां मम्मी! चलो, घर लौटते हैं। आज बहुत मजा आया। अब अगली बार फिर नई जगह घूमने चलेंगे।'' मिछी बोली।

- पलोटन गंज, गाडरवारा, नरसिंहपुर,म.प्र.
मोबाइल-9993278808

आओ सीखें

● हंसा बिष्ट

आओ संचय करना सीखें,
बच्चो अच्छा बनना सीखें।
मधुमक्खी शहद बनाती है,
फूलों से शहद जुटाती है।
हम भी मीठा बोलेंगे,
कड़वाहट को धो देंगे।
चींटी कण-कण चुनती है,
भोजन संचित करती है।
हम भी कण-कण चुन लेंगे,
झोली सबकी भर देंगे।
बूंद-बूंद से घट भरता है,
कण-कण से पर्वत बनता है।
हम प्रेम का सागर भर देंगे,
प्यार सभी को बांटेंगे।
तिनका-तिनका चुनकर पंछी,
अपना नींड़ बनाते हैं।
मिलजुल कर रह करके हम,
अपना चमन खिलाते हैं।
तेज धूप हो तपी रेत हो,
ऊंट कभी भी रूके नहीं।
कितनी ही बाधाएं आए,
घबराकर हम झुकें नहीं।
आओ संचय करना सीखें,
बच्चो अच्छा बनना सीखें।

- खुर्पाताल (नैनीताल)
मोबाइल -7351139144

कोरोना

● सुरेश कुशवाहा तन्मय

दुनिया में फैला कोरोना बच्चो,
तुम घर में ही हो ना?
हां, सब अपने घर में रहना,
बड़े-बड़ों का है यह कहना।
खतरनाक संक्रमण रोग ये,
थोडे दिन एकांत को सहना।
बार-बार साबुन पानी से,
अपने हाथों को तुम धोना।
दुनियां में फैला कोरोना।
दूर-दूर से बातें करना,
इक दूजे से दूर ही रहना।
छुएं न आंख नाक मुंह अपने,
रहें सतर्क, न इससे डरना।
कोरोना को मार भगाएं,
मन में ऐसे, सपने बोना।
दुनिया में फैला कोरोना।
देश विदेश फैली बीमारी,
दिखा रहे सब लाचारी।
पर विश्वास हमारा पक्का,
नष्ट करेंगे विपदा सारी।
स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
साफ रखेंगे कोना-कोना।
दुनिया में फैला कोरोना बच्चो,
तुम घर में ही हो ना?

- बी-101, महानंदा ब्लॉक, विराश हाइटर, दानिश कुंज ब्रिज के पास, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल -9893266014

भारत मां

● मनमोहन गुप्ता

भारत मां! तुम मां से बढ़कर,
हमें प्यार बहुत करती हो।
कैसी भी हो उलझन मन में,
पल भर में ही हर लेती हो।
सुबह का सूरज भी हम सबको,
प्यारा बहुत ही लगता है।
ऊषा की किरणों में स्वर्णिम,
आभा से वह नित सजता है।
पेड़ों की वह हरियाली भी,
हमको बड़ी लुभाती है।
बैठें छांव थकान मिटाती,
मीठी नींद सुलाती है।
वर्षा भी इनसे ही होती,
फल मीठे यह देते हैं।
जिसके बदले में यह हमसे,
कभी नहीं कुछ लेते हैं।
ऊंचे ही हैं पर्वत मां के,
ऊंची ही है मां की शान।
निर्मल गंगा नदी प्रवाहित,
करती ऊंचा सब का मान।
भारत मां तुम एक मात्र हो,
तीन तीन रितुओं वाली।
इस वसुधा पर नहीं है यह सब,
भरी हुई मां की थाली।

- एस.बी.के.गर्ल्स हा से. स्कूल
के पास मंडी अटलबंद, भरतपुर (राज.)
मोबाइल: 6378262325

अंक पहेली

नीचे के चित्रों में गुणा व जोड़ के आधार पर अंक भरे गए हैं। खाली स्थान में अंक भरिए।

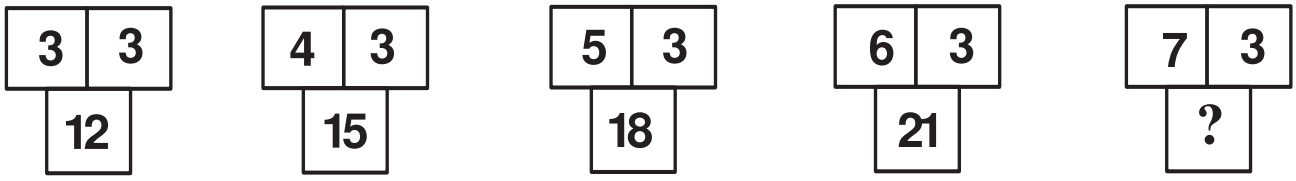

उपर्युक्त चित्रों में ऊपर के दो बॉक्सों के अंकों को गुणा करके उसके योग में दांये बॉक्स की संख्या जोड़कर नीचे के बॉक्स में लिखी गई है।
अंतिम बॉक्स में 7 को 3 से गुणा करने पर 21 होगा, उसमें 3 जोड़ने पर 24 खाली स्थान पर लिखा जाएगा।

उत्तराखण्ड शासन

उत्तराखण्ड का विकास
मेरा संकल्प, आपका विश्वास

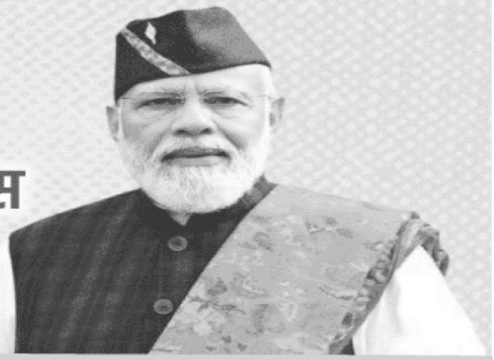

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

एक ही लक्ष्य – एक ही सपना
सर्वश्रेष्ठ बने
उत्तराखण्ड
अपना

प्रिय उत्तराखण्ड वासियों,

देवभूमि उत्तराखण्ड में एक बार पुन: ऐतिहासिक विजय दिलाने के लिए मैं आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मुझ जैसे एक सामान्य परिवार से आने वाले सैनिक पुत्र पर आपने जो विश्वास व्यक्त किया है वो अप्रतिम है। आपके विश्वास ने मुझमें एक नई ऊर्जा का संचार किया है। मैं आप सभी को विश्वास दिलाता हूं कि मैं इस ऊर्जा का उपयोग राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए करने का हरसंभव प्रयास करूंगा। मेरा एक एक क्षण, प्रदेश के जन गण मन के लिए समर्पित रहेगा।

राज्य की प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए मैंने 'विकल्प रहित संकल्प' के मंत्र को अपनाया है। इस संकल्प सूची में राज्य को देश में सर्वश्रेष्ठ बनाना, जनता की आशाओं-आकांक्षाओं को पूर्ण करना, सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास की अवधारणा को धरातल पर मूर्तरुप देना, सरलीकरण- समाधान- निस्तारीकरण की नीति को अपनाकर जन संतुष्टि सुनिश्चित करना और अंत्योदय को ध्येय मानकर कार्य करना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से और प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम इन संकल्पों को पूर्ण करने में अवश्य सफल होंगे।

कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं
अगर ठान लिया जाए,
समय नहीं है अब रुकने का
आओ, मिलकर बढ़ा जाए

मैं, आप सभी का आह्वान करता हूं कि आइए उत्तराखण्ड की इस विकास यात्रा में सहभागी बनें और प्रदेश को प्रगति के मार्ग पर आगे लेकर जाएं।

भारत माता की जय
जय हिंद - जय उत्तराखण्ड

विकल्प रहित संकल्प

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR
महिला हेल्पलाइन नं. 1090, किसान कॉल सेंटर नं. 1551, सी.एम. हेल्पलाइन नं. 1905, चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098, आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104, आपदा कॉल सेंटर नं. 1070

कहानी :

फूलने का जादू

● उषा सोमानी

आरोही को इस बार जन्म दिन पर साइकिल उपहार में मिली थी। वह रोज शाम को गार्डन में अपने दोस्तों के साथ साइकिल चलाने जाती। उसे साइकिल चलाने में बहुत मजा आता। आरोही कक्षा दो में पढ़ती थी। उसके स्कूल में गर्मी की छुट्टियां थी। एक शाम आरोही को उसके दादाजी कहानी सुना रहे थे। कहानी पूरी होने के बाद आरोही अपने दादाजी से बोली, "बहुत मजेदार कहानी थी। हम भी सुबह साइकिल चलाने फतहसागर की पाल पर जाएंगे।"

दादाजी खुश हो गए और बोले, "पाल पर बहुत लोग सैर के लिए आते हैं। पानी के किनारे सुबह की ठंडी हवा, तन और मन को अनोखी ऊर्जा से भर देती है।"

सुबह आरोही और दादाजी अपनी साइकिल से पाल पर पहुंच गए। आरोही ने लंबी गहरी सांस ली और चहक कर बोली, "अरे वाह! दादाजी बहुत मजा आ गया।"

आरोही और दादाजी पाल पर खड़े होकर पानी देखने लगे। पाल के एक और पहाड़ी पर हरियाली छाई हुई थी। दूसरी ओर बड़ी-बड़ी इमारतें थी। फतहसागर के बीच में बना गार्डन बहुत सुंदर लग रहा था। पानी में पक्षी अठखेलियां कर रहे थे।

आरोही बोली, "बहुत सुंदर पक्षी हैं। अब तो हम रोज सुबह पाल पर आएंगे।"

दादाजी बोले, "पक्का, तुम्हारे स्कूल खुलने तक हम रोज सवेरे पाल पर आएंगे।"

आरोही आंखों को मटकाकर बोली, "आज हम साइकिल रेस करेंगे। पाल के सामने वाले दरवाजे तक कौन पहले पहुंचेगा।" आरोही तेजी से पैडल लगाने लगी।

दादाजी ने भी पैडल लगाने शुरू किए। दादाजी आरोही को आगे जाते देख, खुशी से फूले न समाए। आरोही अपनी मस्ती में तेजी से पैडल लगाते हुए, पीछे मुड़कर दादाजी को देख खुश हो रही थी। उसके पांव फुर्ती से पैडल पर चल रहे थे। कुछ ही समय में वह अपने लक्ष्य पर पहुंच गई और पीछे-पीछे दादाजी।

आरोही बोली, "मैं फर्स्ट आई। मैं आपसे अब गिफ्ट लूंगी।" दादाजी बोले, "बोलो, क्या चाहिए?"

आरोही ने चारों तरफ देखा और बोली, "चलो अभी तो आप मुझे गुब्बारे ही दिलवा दो।"

आरोही और दादाजी गुब्बारे वाले के पास गए। आरोही ने गुब्बारे वाले से गुब्बारे खरीदे। केसरिया, सफेद और हरा। आरोही ने गुब्बारों का गुच्छा बनाया। उसके धागे अपने साइकिल के हैंडल से बांध दिए। दादाजी बोले, "हम साइकिल से पाल का एक चक्कर और लगाएंगे।"

साइकिल पर सवार होकर आरोही ने दादाजी से पूछा, "दादू! गुब्बारा कैसे फूलता है?"

दादाजी हंसने लगे और बोले, "अभी हम पाल पर बैठेंगे तब आपको बताएंगे।"

साइकिल का चक्कर पूरा होने पर आरोही और दादाजी पाल पर बैठ गए। आरोही गुब्बारे के बारे में जानने को उत्सुक थी। वह बोली, "अब आप फटाफट बताओ।"

दादाजी ने बताया, "गुब्बारा एक प्रकार की लचीली थैली है। ये गुब्बारे रबर, लैटेक्स, नाइलॉन और पॉलीक्लोरोप्रेन मतलब कृत्रिम रबर से बने होते हैं। जिसके कारण हवा भरने से इनका लचीलापन बढ़ता है और वे अपने मूल आकार से बड़े हो जाते हैं। उनके फूलने का यही जादू है।"

दादाजी के उत्तर से संतुष्ट होकर आरोही ने पूछा, "ये लचीले क्यों होते हैं?"

दादाजी बोले, "अच्छा प्रश्न है। गुब्बारे में रबर के कण बहुत लंबे अणु अर्थात बहुलक से बने होते हैं। जो एक साथ जुड़े

होते हैं और इसी कारण यह एक निश्चित सीमा तक बढ़ जाते हैं। अगर उस सीमा को पार कर लिया जाए तो तनाव बढ़ जाएगा और गुब्बारा फूट जाएगा।"

"अच्छा तभी बहुत बार गुब्बारा फुलाते समय फूट जाता है।" तपाक से आरोही बोली।

दादा जी ऐनक साफ करते हुए बोले, "तुमने बिल्कुल ठीक समझा।"

पाल पर लोगों की चहल कदमी बढ़ने लगी। वहां पर बच्चों को तैराकी का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा था। बच्चों को पानी में गोता लगाते हुए देखकर आरोही तालियां बजाने लगी। आसमान में तेज धूप खिल चुकी थी। दादाजी बोले, "अब हम घर चलें।"

आरोही बोली, "बहुत मजा आ रहा है। हम थोड़ी देर और बैठेंगे। आप मुझे गुब्बारे के बारे में और बताओ।"

दादाजी हंसने लगे। वे बोले, "तुम्हे एक जानकारी और देता हूं। हवा भरने से गुब्बारे फूल जाते हैं। इस परिवर्तन को विज्ञान में 'भौतिक परिवर्तन' कहते हैं। मतलब जिस परिवर्तन के बाद किसी नए पदार्थ का निर्माण नहीं होता।"

आरोही हंस कर बोली, "जैसे बर्फ का पिघलना।"

दादाजी खड़े होते हुए बोले, "शाबाश! बात को अच्छे से समझती हो। रुचि लेकर सुनती हो। अब चलें, जूस पीएंगे।"

आरोही ने दादाजी का हाथ पकड़ा और बोली, "रुको-रुको, थोड़ी सी देर। मुझे और पूछना है। गुब्बारे में पिन चुभाने से वह फूटता है। तब पॉप की आवाज क्यों आती है?"

दादाजी बोले, "हवा भरे गुब्बारे में, हवा का दबाव बाहर से अंदर अधिक होता है। यह दबाव अंदर और बाहर के दबाव में अंतर पैदा करता है। इसी अंतर की वजह से जब गुब्बारे पर पिन चुभाई जाएगी तब वह पॉप की आवाज कर फूटेगा।"

आरोही कुछ सोचते हुए बोली, "पिछले साल हमारे स्कूल में मेला लगा था। तब वहां पर उड़ने वाले गुब्बारे थे। मेले में बहुत सारी दुकानों की सजावट गुब्बारों से की गई।"

दादाजी बोले, "गुब्बारों को देखकर बच्चे उत्साहित होते हैं। इसीलिए जन्मदिन और अन्य समारोह में रंगीन गुब्बारों से सजावट की जाती है। तुमने जिन गुब्बारों को उड़ते हुए देखा, उसमें हीलियम या हाइड्रोजन गैस भरी हुई होती है। यह गैस सबसे हल्की होती है। इसलिए गुब्बारा उड़ता है, परंतु हमें इन गैस के गुब्बारों से दूर रहना चाहिए। हिलियम और हाइड्रोजन गैस महंगी होती है तो अपने लाभ के लिए कई बार गुब्बारे वाले इनमें सस्ती गैस 'एसेटेलिन' भर देते हैं। जिसे कार्बाइड से बनाया जाता है। ऑक्सीजन की उपस्थिति में इसे थोड़ी सी भी उष्मा मिलती है, चाहे वह घर्षण से, धूप से या इनसे खेलते समय उत्पन्न हुई हो तब ये फट जाते हैं और जलने लगते हैं। तब जो लोग इसके संपर्क में आ जाते हैं वे झुलस जाते हैं।"

आरोही खड़े होते हुए बोली, "हमें गुब्बारे वालों से मोलभाव नहीं करना चाहिए। गैस का गुब्बारा खरीदते समय पूरा ध्यान रखना चाहिए कि उसमें कौन सी गैस भरी है। जब उन्हें पूरा लाभ होगा तो वे हानिकारक गैस गुब्बारों में नहीं भरेंगे।"

उसकी बात सुनकर दादाजी को हंसी आ गई। उन्होंने प्यार से उसके सर को सहलाया और बोले, "चले जवारे का जूस पीने।" आरोही दादाजी के साथ जूस वाली दुकान की ओर बढ़ गई। आज के दिन की शुरूआत इतनी सुंदर थी कि उसका मन खुशी से गुब्बारे की तरह फूल गया।

- 18 सुभाषनगर,कीरखेड़ा रोड,चितौड़गढ़, राजस्थान
मोबाइल-9785082444

शब्दजाल

नीचे दी गई आकृति में चार अक्षर वाले 12 शब्द आपस में जुड़े हुए हैं। इनके बीच के दो-दो अक्षर यहां दिए गए हैं। आपको पहला व अंतिम अक्षर खोज कर इस शब्दमाल को पूरा करना है। हां एक बात और, आपको जो अक्षर भरने हैं, वे सब बिना मात्रा के हैं जैसे प्रथम पंक्ति का उत्तर महादेव है। अब आप दिमागी कसरत करते हुए आगे बढ़ें।

(उत्तर इसी अंक में)

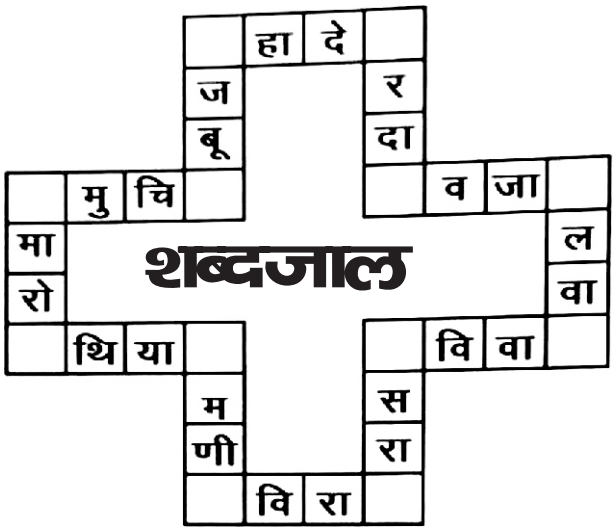

- प्रस्तुतिः प्रकाश तातेड़, उदयपुर, राजस्थान

कहानी :

मुट्ठी भर लोग

● सिद्धार्थ शंकर

हर साल गर्मी की छुट्टियों में अजय अपने दोस्तों के साथ मस्ती करता। वह हर वर्ष किसी पहाड़ी इलाके में माउंटेनियरिंग के लिए जाता था। इस साल भी वह अपने दोस्तों के साथ ऋषिकेश पहुंचा। गाइड उन्हें एक फेमस माउंटेनियरिंग स्पॉट पर ले गया। उन्होंने सोचा नहीं था कि यहां भी इतनी भीड़ होगी। उसका दोस्त निमेष बोला, ''यहां तो शहर जैसी भीड़ है। मजा नहीं आ आ रहा है।''

"क्या कर सकते हैं-अब आ ही गए हैं तो अफसोस करने से क्या फायदा। चलो इसी का मजा उठाते हैं।" दूसरा दोस्त बोला।

सभी दोस्त पर्वतारोहण करने लगे। कुछ ही देर में वे सब पहाड़ की चोटी पर पहुंच गए। वहां पर पहले से ही लोगों का तांता लगा हुआ था। दोस्तों ने सोचा चलो इसी भीड़ में दो-चार घंटे कैंपिंग करते हैं और फिर वापस चलते हैं। तभी अजय ने सामने की एक चोटी की तरफ इशारा करते हुए कहा, "रूको-रूको! जरा उस चोटी पर मुट्टी भर लोग ही दिख रहे हैं। कितना मजा आ रहा होगा। क्यों ने हम वहां चलें।"

"वहां!" एक दोस्त बोला, "अरे! वहां जाना सबके बस की बात नहीं है। उस पहाड़ी के बारे में मैंने सुना है। वहां का रास्ता बड़ा मुश्किल है। कुछ लकी लोग ही वहां तक पहुंच पाते हैं।" बगल में खड़े कुछ लोगों ने भी अजय का मजाक उड़ाते हुए कहा, "भाई अगर वहां जाना, इतना ही आसान होता तो हम यहां झक नहीं मार रहे होते।"

लेकिन अजय ने किसी की बात नहीं सुनी और अकेला ही चोटी की तरफ बढ़ चला। तीन घंटे बाद वह उस पहाड़ी के शिखर पर था। वहां पहुंचने पर पहले से मौजूद लोगों ने उसका स्वागत किया और उसे एंकरेज किया। अजय भी वहां पहुंच कर बहुत खुश था। अब वह शांति से प्रकृति की खूबसूरती का आंनद ले सकता था। जाते-जाते अजय ने बांकी लोगों से पूछा, "एक बात बताइए-यहां पहुंचना इतना मुश्किल तो नहीं था। मेरे ख्याल से जो उस भीड़-भाड़ वाली चोटी तक पहुंच सकता है। वह अगर थोड़ी सी और मेहनत करे तो इस चोटी को भी छू सकता है। फिर ऐसा क्यों है कि वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ है और यहां बस मुट्ठी भर लोग।

वहां मौजूद एक वेटरन माउंटेनियर बोला, "क्योंकि ज्यादातर लोग बस उसी में खुश हो जाते हैं जो उन्हें आसानी से मिल जाता है। वे सोचते ही नहीं कि उनके अंदर इससे कहीं ज्यादा पाने का पोटेंशियल है। जो थोड़ा पाकर खुश होते हैं। वे कुछ अधिक पाने के लिए रिस्क नहीं उठाना चाहते। वे डरते हैं कि कही ज्यादा के चक्कर में जो हाथ में है वह भी ना चला जाए। जबकि हकीकत ये है कि अगली चोटी या अगली मंजिल पाने के लिए बस जरा से और एफर्ट की जरूरत पड़ती है। पर साहस न दिखा पाने के कारण अधिकतर लोग पूरी लाइफ बस भीड़ का हिस्सा ही बनकर रह जाते हैं। साहस दिखाने वाले उन मुट्ठी भर लोगों को लकी बता कर खुद को तसल्ली देते रहते हैं।''

अजय ने देर तक उस माउंटेरियन से बात करते हुए उसका आभार व्यक्त किया। माउंटेरियन ने कहा, ''आपका साहस, थोड़ी सी हिम्मत आपको भीड़ से निकाल कर उन मुट्ठी भर लोगों में शामिल कर सकती है। जिन्हें दुनिया लकी कहती है।

जब अजय वहां से लौटकर आया। उसके दोस्त उससे सब कुछ जानना चाहता थे। अजय की बात सुनकर उनका मन भी उस चोटी पर जाने को हुआ। परंतु उसी शाम उन्हें लौटना था। इस कारण उनके अरमान पूरे नहीं हो सके। बहरहाल अजय उन मुट्ठी भर लोगों में शामिल हो गया। जिन्होंने ऊंची चोटी को फतह किया है।

– जगदीश निवास, 1 नंबर कालोनी, दुर्गास्थान, कटिहार (बिहार)
मोबाइल-8051685818

मेघ गरजते

कैलाश त्रिपाठी

मेघ गरजते गगन में, नाच रहे वन मोर,
दादुर, झींगुर बोलते, हरियाली चहुंओर।
कहीं आम के बाग हैं, वट पीपल की छांव,
खेतों में फसलें सुखद, लगते प्यारे गांव।
शिक्षक का आदर करें, मानें उनकी बात,
ऊपर उठते जाएंगे, खुशियों की सौगात।
सरिता का संदेश है, जीवन है गतिमान,
नहीं थको चलते रहो, मंजिल को पहिचान।
खिड़की लगती है हमें, घर की सुंदर आंख,
बाहर का कुछ देखना, लेते उससे झांक।
मानव जीवन पर बहुत, वृक्षों का उपकार,
नहीं भूलना है हमें, करना उनसे प्यार।

– शिव कुटी, आर्यनगर, अजीतमल (औरैया)
मोबाइल-9897939095

मिठाई

● राजेंद्र पालमपुरी

आओ खाएं सभी मिठाई,
जो अम्मा ने आज बनाई।
छुटकी मुन्ना आओ बेबी,
खाओ पकोड़ा और जलेबी।
ना पंडित न कोई मुल्ला,
सारे खाएंगे रसगुल्ला।
खाओ आगरा का यह पेठा,
ताज कहो है किसने देखा।
मथुरा का और खाओ पेड़ा,
यहीं कृष्ण के जन्म का खेड़ा।
आहा बर्फी का क्या कहना,
खाने से पीछे न रहना।
खाओ बेसन और पतीसा,
क्या मोहन क्या भृगु अनीसा।
लड्डू पीला गोल मटोल,
क्यों न खाया अब तक बोल।
खाया जिसने सोहन हलुवा,
उसने देखा मां का जलवा।
मां बन बैठी है हलवाई,
आओ खा लो खूब मिठाई।

- पोस्ट बाक्स-45,पालमपुर, कांगड़ा, हि.प्र.
मोबाइल -9805546753

अक्षर ज्ञान

● लीला खोलिया

अ- अब उठो सवेरा हो गया,
आ- आ गई किरन तम खो गया।
इ- इस देश के राज दुलारो,
ई- ईश्वर को रोज पुकारो।
उ- उल्लू बन कर मत बैठना,
ऊ- ऊन भेड़ से न ऐंठना।
ए- ए से एड़ी है बनता,
ऐ- ऐनक लगाती है जनता।
ओ-ओ रामू तुम भी आओ,
औ-औरत के संग-संग गाओ।
अं- अंगूर का गुच्छा सड़ियल,
अः-अह बेचारा अड़ियल।

- धारानौला, अल्मोड़ा
मोबाइल -9411701517

बादल भइया

● घनानंद पांडेय 'मेघ'

चुपके-चुपके बादल आते,
कभी अचानक ये मंडराते।
शायद इनका भी घर होगा,
तारों के संग रहते होंगे।
सूरज की तपती किरणों को,
गर्मी भर ये सहते होंगे।
इसीलिए ये हमको तरसाते,
बिन बरसे वापस हो जाते।
बादल भइया-बादल भइया,
कभी हमारे घर भी आना।
देख धरा की ऐसी हालत,
रूक-रूक कर नित बरसा जाना।
वर्षा से वट वृक्ष नहाते,
हरे भरे फिर से हो जाते।
ऐसा अक्सर हमने देखा,
बादल भी गुस्सा जाते हैं।
आपस में टकराने से फिर,
गर्जन करने लग जाते हैं।
धरती पर आकर रूक जाते,
हम भी इसका लाभ उठाते।
बरखा रानी को संग लेकर,
समय पर आया करना।
बादल भइया इतना सुन ले,
धरती को नहलाया करना।
तेरे संग हम भी इठलाते,
तुम यदि धरती पर आ जाते।

-लखनऊ,उ.प्र.
मोबाइल- 8840354766

नन्हा दीप

● डॉ. महावीर रवांल्टा

नन्हा दीप जलता जाए,
अंधेरे को दूर भगाए।
नन्हा दीप निडर साहसी,
चेहरे पर न उसके उदासी।
अंधेरे को दूर भगाए,
नन्हा दीप सबको भाए।

- संभावना, महरगांव,मोल्टाड़ी पुरोला, उत्तरकाशी
मोबाइल -9258532932

बिल्ली बोली

● कल्याणमय आनंद

चूहा ने दुखड़ा सुनाया बिल्ली से
क्यों हमारा शिकार करवाती हो।
हिंसा छोड़ भले जानवरों की तरह
शाकाहारी क्यों न बन जाती हो।
बिल्ली बोली- सुन ले चूहे राजा,
सामान कुतर कर नुकसान करते हो।
दूसरों की तबाही को ही हमेशा,
अपना जलवा व शान समझते हो।
गोदाम, घर हो या कोईभी दुकान,
बेमतलब सभी को क्षति पहुंचाते हो।
बीमारी फैलाकर भले मानस को,
बेवजह स्वर्ग का टिकट कटवाते हो।
सरकार ने अब कहा है मुझसे
तुम अब चूहा नियंत्रण अधिकारी हो।
अगर तुम्हें ना खाऊं तो सब कहेंगे,
बिल्ली तुम भी भ्रष्टाचारी हो।

- उत्क्रमित मध्य विद्यालय निझरा,
सौनेली, कटिहार,बिहार
मोबाइल-9113166335

वर्षा रानी

● डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी

बहुत बरस चुका है पानी,
अब मत बरसो वर्षा रानी।
ऐसे बरसते रहोगे जो तुम,
याद आएगी सबको नानी।
सावन भादौ के ये महीने,
इनका भी क्या है कहने।
जहां भी देखो पानी-पानी,
करने लगी वर्षा अब हानी।
टूट-फूट कहीं आई बाढ़,
कुहरा कीचड़ उग आई झाड़।
बादलो अब तुम छंट जाओ,
अपने-अपने घर को जाओ।
बहुत दिनों से जिन्हें न देखा,
सूरज सितारे चांद दिखाओ।

- पुजारगांव,चंद्रबदनी,हिंडोलाखाल,टिहरी
मोबाइल -9690450659

कहानी :

लड्डू और पसीने का सच

● इंजी. आशा शर्मा

गोलमटोल लड्डू घर में सबका दुलारा है। दादी हो या नानी, सब उसे जिद कर-कर के खिलाते हैं। मम्मी जब-तब उसके लिए केक-पुडिंग बनाती रहती है और पापा तो हर रोज ही ऑफिस से आते हुए कभी चिप्स तो कभी कोल्ड ड्रिंक लेकर आते हैं।

इस सारे लाड़-प्यार का नतीजा ये हुआ कि टेनिस की गेंद सा लड्डू मुटा कर फुटबॉल सा गब्दू हो गया। नए लाए हुए कपड़े दो-तीन महीने में ही तंग होने लगे। और तो और इन दिनों तो लड्डू आलसी भी बहुत हो गया था। न तो दोस्तों के साथ बाहर खेलने जाता है और ना ही स्कूल के मैदान में खेलता। कभी कभार पीटीआई सर की डांट से बचने के लिए जब वो खेल के मैदान में जाता है तो बच्चे उसका बहुत मजाक उड़ाते। क्रिकेट में उसे कोई भी अपनी टीम में नहीं लेना चाहता क्योंकि न तो वह दौड़ कर रन बना सकता है और ना ही लपक कर कैच पकड़ सकता है। फुटबॉल खेलते समय तो उसे देख कर बच्चों का हंस-हंस के बुरा हाल हो जाता है।

"देखो-देखो! छोटे-फुटबॉल के पीछे बड़ा फुटबॉल भाग रहा है।'' कह कर सब उसे चिढ़ाते। लड्डू को बुरा तो बहुत लगता लेकिन जैसे ही वह अपना टिफिन खोलता... मनपसंद खाना देखते ही सब कुछ भूल जाता... गुस्से के मारे तो दो निवाले ज्यादा ही खा जाता...।

आज लड्डू बहुत खुश था। उसके विकी चाचा जो आने वाले थे। पापा ने बताया था कि चाचा यहां पीटीआई बनने की परीक्षा देने के लिए आ रहे हैं। सुबह-सुबह पापा की आवाज से उसकी नींद खुल गई।

"अरे विकी! तुम तो बिल्कुल हीरो लग रहे हो। क्या बॉडी बना रखी है... भई वाह।'' पापा ने चाचा को गले लगाते हुए कहा।

"चाचू! मुझे भी आप जैसी बॉडी बनानी है। बताइए ना... क्या करते हो?" अब तक लड्डू भी उठ कर उनके पास आ गया था।

"अरे लड्डू राजा! बॉडी यूं ही नहीं बनती... इसके लिए कसरत करके पसीना बहाना पड़ता है... समझे।" चाचा ने उसके गाल थपथपाते हुए कहा।

"तो क्या पसीना बहाने से बॉडी को फिट बना सकते हैं?" लड्डू ने आश्चर्य से पूछा।

"हा-हां! बिल्कुल बना सकते हैं।" विकी ने कहा और नहाने चला गया।

"पसीना बहाने से बॉडी को फिट बना सकते हैं।" लड्डू के दिमाग में बात फिरकी की तरह घूमने लगी।

स्कूल में सबसे पहला पीरियड खेल-कूद का होता है। रोज की तरह आज भी सब बच्चे अपनी-अपनी पसंद के खेल खेलने लगे। लड्डू एक तरफ धूप में जाकर बैठ गया। आधा घंटा लड्डू इसी तरह धूप में बैठा पसीने-पसीने होता रहा। दूसरे दिन भी यही हुआ और फिर तीसरे दिन भी...।

आज चौथा दिन है। धूप कुछ ज्यादा तेज है। सब बच्चे भीतर ही खेल रहे हैं। लड्डू अकेला धूप में बैठा है। उसकी कमीज पसीने से पूरी तरह से गीली हो चुकी थी। गला प्यास के मारे सूखने लगा। अचानक उसकी आंखों के आगे अंधेरा सा छा गया। उसे चक्कर आया और वह बेहोश हो गया। पीटीआई सर उसे हॉस्पिटल लेकर भागे।

"हीट स्ट्रोक का मामला लगता है।" डॉक्टर ने चेक करके बताया और उसे आवश्यक उपचार दिया। थोड़ी ही देर में उसे होश आ गया।

"लड्डू! तुम बाहर तेज धूप में क्यों बैठे थे?" सर ने

पोपट लाल

● सुबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह

रोज उठकर आंगन में आता,
जंगल से पोपट लाल।
फल व दाने मांगे बच्चों से,
बच्चे कभी न पाते टाल।
इंसान की तरह वह बातें करता,
बच्चे खिलाते चावल दाल।
हो गई बच्चों से यारी,
बच्चे उसका रखते ख्याल।
कभी मुंडेर, कभी छज्जे पे बैठे,
नाम लेकर पूछे वह हाल।
पोपट तोता हुआ मशहूर,
उड़ता वह आंगन की डाल।
स्कूल से आते जाते बच्चे,
सभी पूछते उसका हाल।
बच्चे शिकारी की बात करें,
बिछाता कैसे है वह जाल।
पोपट लाल पोपट लाल कहें,
सचमुच उसकी चोंच है लाल।

- फ्लैट -2, मयुरेश अपार्टमेंट, आडकेनगर-3
जयभवानी रोड, नासिक, महाराष्ट्र
मोबाइल - 9011777572

बरखा रानी

● मीरा सिंह 'मीरा'

जल्दी आओ बरखा रानी,
बुला रही है बुढ़िया नानी।
बस तुमसे है आस लगी,
धरती मां को प्यास लगी।
दूर करो जन की परेशानी,
जल्दी आओ बरखा रानी।
जीव जगत हुआ हलकान,
जल बिन है संकट में प्राण।
आंचल में भर भर कर पानी,
जल्दी आओ बरखा रानी।
ताल तलैया सब भर जाओ,
देर करो मत जल्दी आओ।
नव जीवन पाए सब प्राणी,
जल्दी आओ बरखा रानी।

- +2 महारानी उषारानी बालिका उच्च विद्यालय
डुमरॉव, बक्सर (बिहार)
मोबाइल -9304674258

छोले-भटूरे

● श्यामपलट पांडेय

दिन रविवार, स्कूल की छुट्टी,
मुझको कहीं नहीं जाना है।
आज बना मां, छोटे-भटूरे,
जी भर गरम-गरम खाना है।
गोल-गोल और फूले-फूले,
मां मुझको बेहद भाते हैं।
ताजे-ताजे तल कर देती,
मन खुशबु से भर जाते हैं।
कल सपने में देखा था मां,
उछल रहे थे, नाच रहे थे।
कभी पास मुख के आ जाते,
कभी दूर वे भाग रहे थे।
साथ-साथ उड़ रहे थे छोले,
थामे हाथ भटूरे का।
दौड़ रहा मैं उन्हें पकड़ने,
सच मां, किस्सा है सपने का।

-पंचतीर्थ अपार्टमेंट,जोधपुर चार रास्ता,सेटेलाइट, अहमदाबाद, गुजरात
मोबाइल- 9638430340

नाराजगी से पूछा।

"सर! मैं पसीना बहा कर अपना वजन कम करना चाहता था। मेरे चाचा ने भी पसीना बहा कर खुद को फिट किया है।" लड्डू मासूमियत से बोला।

"लड्डू बेटा! वजन धूप में पसीना बहाने से नहीं बल्कि कसरत करके पसीना बहाने से कम होता है। समझे?" सर ने कहा।

"लेकिन सर! पसीना तो धूप में भी बहता है ना! फिर दोनों में फर्क कैसे हुआ?" लड्डू को अभी तक अपनी गलती समझ में नहीं आई थी।

"देखो लड्डू ! हमारे शरीर का सामान्य तापमान 37 डिग्री सेल्शियस होता है। जब हम तेज धूप में होते हैं। तब शरीर का तापमान बढ़ने लगता है। उसे वापस सामान्य तापमान पर लाने के लिए हमारा शरीर पसीना निकालता है। वहीं जब हम कसरत करते हैं तब हम अपने शरीर से सामान्य से अधिक कार्य करवाते हैं यानी उसकी अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग करते हैं। इस तरह से जो पसीना निकलता है वह कैलोरी के खर्च होने से निकलता है। तो हुए न दोनों अलग?" सर ने उसे समझाया तो लड्डू का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया।

"तो क्या मैं हमेशा ऐसा ही रहूंगा। कभी चुस्त-दुरुस्त नहीं बन सकूंगा..." लड्डू निराश हो गया।

"बिल्कुल नहीं! अगर तुम भी ठान लो तो नियमित खेल-कूद और संतुलित भोजन से हमेशा फिट रह सकते हो... और हां! जंक फूड की जगह ताजा फल और हरी सब्जियां खानी होंगी... करोगे ना ये सब... वैसे कभी-कभी जंक फूड भी खा सकते हो लेकिन सीमित मात्रा में ही..." सर ने हंसते हुए कहा।

"करूंगा सर, जरूर करूंगा... कल से मैं भी सबके साथ खेलकूद में भाग लूंगा... किसी के चिढ़ाने पर भी बुरा नहीं मानूंगा..." लड्डू ने सर से वादा किया।

"शाबाश लड्डू" कह कर सर ने भी प्यार से उसकी पीठ थपथपाई।

- 123 करणी नगर (लालगढ़) बीकानेर,राजस्थान
मोबाइल-9413369571

जानकारी:

बोलो देवीदा

● देवेंद्र मेवाड़ी

विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत बच्चों के प्रिय लेखक आदरणीय देवेंद्र मेवाड़ी जी ने बालप्रहरी के बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों का जबाब हर अंक में देने की सहमति प्रदान की है। आप भी कोई सवाल पूछ सकते हैं। आपका उत्तर अगले अंक में आपके नाम/प्रश्न के साथ प्रकाशित किया जाएगा। आदरणीय मेवाड़ी जी का पता व फोन अंत में दिया है।आप उनसे सीधे भी संपर्क कर सकते हैं।

प्रश्नः सेब को काटकर रखने पर थोड़ी देर में वे लाल-भूरे क्यों पड़ जाते हैं? – जगतराम, देवलथल, पिथौरागढ़

उत्तरः प्रिय जगतराम! आड़ू, नाशपाती, सेब आदि फलों के गूदे में कुछ खास तरह के एंज़ाइम होते हैं। तुम पूछोगे- ये एंज़ाइम क्या होते हैं? तो सुनो, एंजाइम खास तरह की प्रोटीन होते हैं। तुम पूछोगे- अब यह प्रोटीन क्या होती है? बात यह है कि हमारा शरीर सूक्ष्म कोशिकाओं से बना है, जैसे मकान छोटी-छोटी ईंटों से बनता है। हमारे शरीर को बनाने में प्रोटीन का बड़ा हाथ है। एंज़ाइम इसी तरह की प्रोटीन के सूक्ष्म अणु हैं। जब ये ऑक्सीजन के संपर्क में आते हैं तो फल के गूदे में आक्सीडेशन यानी आक्सीकरण होने लगता है। जैसे लोहे में आक्सीकरण होता है तो जंग लग जाता है। लेकिन, डरना नहीं, फल का यह भूरापन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है। फिर भी आड़ू हो या सेब, छिलने के बाद जल्दी खा लेना चाहिए।

प्रश्नः हमें शीशे में चेहरा कैसे दिखता है? पानी में देखने पर चेहरा शीशे की तरह साफ क्यों नहीं दिखता? (कृश, देहरादून)

उत्तर : प्रिय कृश! जब हम शीशे में देखते हैं तो उसकी सतह से वह सारा प्रकाश लौट कर हमारी आंखों में पहुंचता है जो हमारे चेहरे से टकरा कर शीशे पर गया है। शीशे के पीछे ऐसी परत लगी होती है कि वह प्रकाश को वापस लौटा देती है यानी परावर्तित कर देती है। यही कारण है कि हमें उसमें अपना चेहरा साफ दिखाई देता है। जहां तक पानी की बात है, उसकी सतह से भी काफी प्रकाश लौट कर हमारी आंखों में आता है लेकिन कुछ प्रकाश पानी के भीतर भी चला जाता है। इसलिए हमें अपनी शक्ल शीशे की तरह एकदम साफ तो नहीं लेकिन फिर भी काफी स्पष्ट दिखाई देती है। जिस बरतन में पानी रखा गया है, उसके आकार का भी असर पड़ता है क्योंकि पानी उस बरतन के आकार का हो जाता है।

प्रश्न : बुढ़ापा आने के बाद लोगों की बढ़वार क्यों रूक जाती है? (नारायण, चिनियालीसौड़, उत्तराखंड)

उत्तर : बात यह है नारायण! हमारे शरीर में जो कुछ भी हो रहा है वह प्रकृति ने पहले से तय किया हुआ है। उसने इसकी जिम्मेदारी हमारे शरीर में मौजूद तमाम रसायनों और कोशिकाओं को दी हुई है। हमारे शरीर में ऐसा ही एक रसायन शरीर को बढ़ने का संदेश देता है। उसे वृद्धि हार्मोन यानी ग्रोथ हॉर्मोन कहते हैं। बुढ़ापा आने पर यह रसायन भी बहुत कम बनता है। इसे बनाने वाली पीयूष ग्रंथि (पिट्यूटरी) भी दूसरी कोशिकाओं की तरह बूढ़ी और कमजोर हो जाती हैं। जब शरीर को बढ़ने का संदेश ही नहीं मिलता तो फिर वह नहीं बढ़ता। असल में युवक 20-22 वर्ष तक और लड़कियां 15-16 वर्ष तक ही सही तौर पर बढ़ती हैं। वैसे शरीर की बढ़वार पर जीनों, पौष्टिक आहार और वातावरण का भी बहुत असर पड़ता है। कई देशों में आम तौर पर लोग अच्छा पौष्टिक भोजन करते हैं, बीमार कम पड़ते हैं इसलिए काफी समय तक स्वस्थ बने रहते हैं। उनके शरीर में बुढ़ापा देर से आता है।

प्रश्न : बहुत देर तक धूप में देखने पर बुलबुले क्यों दिखाई देते हैं? (अमित, उत्तरकाशी, उत्तराखंड)

उत्तर : बात यह है अमित कि प्रकृति ने हमारी पलकों के लिए एक मिनट में पंद्रह-सोलह बार झपकने का समय तय किया है। हम अधिक देर तक धूप को देखेंगे तो दिक्कत होगी। तब प्रकाश हमारी आंखों में ज्यादा जाएगा और आंखों को खोलने-बंद करने वाली नन्हीं मांसपेशियां भी थक जाएंगी। अधिक प्रकाश भीतर जाने से आंख की जो कोशिकाएं प्रकाश को महसूस करके दिमाग तक खबर भेजती हैं कि कितना प्रकाश आ रहा है, उन पर भी बुरा असर पड़ेगा। इसके कारण काले-पीले धब्बे दिखने लगते हैं। तुम्हें ये धब्बे ही बुलबुले लगते होंगे। इसलिए सदा प्रकृति के तय किए हिसाब से ही चलना चाहिए। आंखें फाड़-फाड़ कर धूप या किसी दूसरी चीज को बहुत देर तक नहीं देखना चाहिए।

प्रश्नः मनुष्य के दांत कैसे बनते हैं? एक बार दांत गिर जाने पर फिर से नए दांत निकल आते हैं। क्या ऐसा दूसरे प्राणियों में भी होता है? जब दांत आते हैं तो वे धीरे-धीरे बढते हैं और बाद में उनका बढ़ना रुक जाता है। ऐसा क्यों होता है? (मनीष, हल्द्वानी, नैनीताल)

उत्तर : प्रिय मनीष! हमारे शरीर में जो कुछ भी बनता है, उसके निर्देश हमारे जीनों यानी डी एन ए में पहले से मौजूद रहते हैं। भ्रूण

के विकसित होने के साथ-साथ सभी कोशिकाएं अपना-अपना काम करने में जुट जाती हैं। जैसे, कुछ कोशिकाएं हाथ-पैर बनाती हैं, तो कुछ शरीर में रक्त वाहिनियों का जाल बिछा देती हैं, कुछ मस्तिष्क बनाती हैं, कुछ आंख-कान और कुछ हड्डियां, बाल और नाखून। इसी तरह दांत बनाने वाली कोशिकाएं हमारे दांत बनाती हैं। यह तुम जानते ही हो कि दांत भी हड्डी हैं और इनमें वे सभी तत्व होते हैं जो हड्डी को मजबूत बनाते हैं। दांतों का डिजायन भी कोशिकाओं के पास ही होता है। एक बात जरूर ध्यान में रखना खाना खाने के बाद ब्रश करके दांतों की सफाई जरूर कर लेना ताकि तुम्हारे दांत मजबूत रहें। एक बात और, जब बच्चा गर्भ में होता है तो छठे से आठवें सप्ताह में उसके दांत बनना शुरू हो जाते हैं। पक्के दांत बनने की शुरूआत बीसवें सप्ताह में होती है। दूध के दांत यानी बचपन के दांत चौदह सप्ताह बाद कड़े बनने लगते हैं जबकि पक्के दांत तीन-चार माह बाद कड़े होने लगते हैं। विभिन्न प्राणियों में उनकी जरूरत के अनुसार प्रकृति ने अलग-अलग प्रकार के दांत बनाए हैं। मासांहारी प्राणियों के मुंह में किनारे के कैनाइन दांत बहुत लंबे और तीखे होते हैं जबकि घास-पात चबाने वाले शाकाहारी प्राणियों में चपटे और बड़े मोलर दांत होते हैं। कुतरने वाले प्राणियों में आगे वाले दांत जीवन भर बढ़ते रहते हैं जैसे चूहे और खरगोश। उन पर कड़ी परत बनती रहती है। वे दांतों से सदा कुतरते, खोदते रहते हैं। अगर ऐसा न करें तो उनके दांत बहुत लंबे हो जाएंगे। अब तुम समझ गए होगे कि चूहा कुतरने की कला में इतना उस्ताद क्यों होता है?

प्रश्नः मैंने एक अजीब घटना देखी। सुबह उठकर बाहर आया तो धूप कुछ हल्की थी। ऊपर देखा तो आसमान में हल्के बादल थे। अरे,यह क्या? ऐसा भी कोई इंद्रधनुष बनता है क्या-उल्टा? उसके दोनों सिरे धरती की ओर होने की बजाय उल्टी दिशा में आसमान की ओर थे। ऐसी घटना तो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। ध्यान से देखा तो सूर्य के चारों ओर वाला घेरा भी नहीं था। अड़ोस-पड़ोस में पूछा तो सबने कहा ऐसा पहली बार ही देख रहे हैं। एक आदमी ने तो यह भी कहा कि कलयुग जो है। बताइए, ऐसा क्यों होता है?

(महिपाल नेगी,टिहरी,गढ़वाल)

उत्तरः महीपाल जी, इस स्थिति को वैज्ञानिक 'सर्कमज़ेनिथल आर्क' कहते हैं। आपका कहना भी ठीक है, यह उल्टा इंद्रधनुष ही है। अंगरेजी में भी यह रिवर्स रेनबो कहलाता है। लेकिन, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह का इंद्रधनुष बहुत कम दिखाई देता है और वह भी केवल ठंडे प्रदेशों और ध्रुवीय क्षेत्रों में ही। रिमझिम बारिश में हम जो सामान्य इंद्रधनुष देखते हैं, वह तब बनता है जब सूर्य की किरणें बारिश की नन्हीं बूदों को पार करते समय सात रंगों की रश्मियों में बंट जाती हैं। यानी, तब बारिश की बूदें प्रिज्म का काम करती हैं। वे रश्मियां जब हमारी आंखों तक पहुंचती हैं तो हमें इंद्रधनुष दिखाई देता है। उस स्थिति में यह जरूरी है कि सूर्य अगर पश्चिम में है तो हमें इंद्रधनुष पूर्व में दिखाई देगा और अगर सूर्य पूर्व में है तो इंद्रधनुष पश्चिम में दिखाई देगा। एक बात और, इंद्रधनुष तब दिखाई देता है जब सूर्य, हमारी आंख और इंद्रधनुष का केंद्र ये तीनों एक सीध में हों। लेकिन, उल्टा इंद्रधनुष आसमान में ऊंचाई पर तब बनता है जब सूर्य की किरणें हिमकणों से टकराती हैं और समकोण पर पलट कर लौट जाती हैं। तब हिमकणों से टकराने पर प्रकाश की जो रश्मियां बिखरती हैं, उनसे उल्टा इंद्रधनुष बन जाता है। वह हमें आसमान में आधा ही यानी मुस्कुराहट के प्रतीक चिह्न की तरह दिखाई देता है। उल्टा इंद्रधनुष बनने के लिए यह जरूरी है कि हिमकण सही आकार के हों और आसमान भी साफ हो। यह प्रायः तब बनता है जब आकाश में सूर्य 22 डिग्री के कोण पर होता है। ऐसा इंद्रधनुष सामान्य इंद्रधनुष से अधिक चमकीला होता है और उसके बाहर की ओर लाल रंग की पट्टी होती है। आप सौभाग्यशाली हैं कि आपने यह दुर्लभ प्राकृतिक घटना अपनी आंखों से देखी और उसका फोटो भी ले लिया। इस घटना का कोई भी संबंध कलयुग या शुभ-अशुभ से नहीं है। यह तो एक यादगार घटना है जिसे बहुत कम सौभाग्यशाली लोग देख पाते हैं।

प्रश्न : बरसात में ही बादल इतनी बारिश करते हैं। गर्मियों में ये कहां चले जाते हैं? (अनुभव, पौड़ी, उत्तराखंड)

उत्तर : प्रिय अनुभव! गर्मियों में जब धरती बहुत तप जाती है तो जमीन से, नदी-तालाबों और विशाल समुद्रों से बहुत पानी भाप बन कर आसमान में उड़ जाता है। ऊपर उड़ते-उड़ते वह ठंडा होने लगता है क्योंकि आसमान में जितना ऊपर जाते हैं, उतना ही अधिक ठंडा होने लगता है। इस तरह भाप आसमान में पहुंच जाती है, ठंडी होती है और वहां धूल वगैरह के छोटे-छोटे कणों पर जमा हो जाती है। तब वह पानी की बूंद बन जाती है। ऐसी लाखों बूंदों से बादल बन जाते हैं। जब कुछ बूंदें आपस में मिल जाती हैं तो बड़ी बूंदें बन जाती हैं। अपने भारी वजन के कारण वह हवा में नहीं टिक पाती और नीचे टपक जाती है। जब बहुत सारी बूंदे इस

कहानी :

एक भेड़िए की दुःख भरी कहानी

● समीर गांगुली

एक खूंखार भेड़िया जाने कैसे आधा लाल और आधा पीला हो गया! हां, एक तरफ से लाल और एक तरफ से पीला और इससे उसका जीना जंजाल हो गया।

अब वह शिकार को निकलता, तो खरगोश, हिरन जैसे डरपोक जानवर दुम दबा कर नहीं भागते।

बल्कि खिल-खिलाकर हंसते, रूक-रूककर उसे देखते और आवाज दे देकर सबको दिखाते। इससे भेड़िया बेचारा मुंह छिपा कर लौट जाता।

एक दिन वह खानदानी डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर उसे आजू-बाजू से देखकर बोला, "तुम्हारी रंग ग्रंथि गड़बड़ा गई है, भाई तुम खाने में कुछ भी तो नहीं छोड़ते थे। मेढक, सांप भी तुमसे नहीं बचते थे। तुम्हें आहार-दोष-रोग हो गया है। इसलिए अब खानपान बदलना होगा।"

भेड़िया सिर झुकाकर लौट आया। डॉक्टर का बताया 'खानपान' उसके दिमाग में उल्टा बैठकर 'पानखान' हो गया।

और उस दिन से भेड़िया खाने में सिर्फ पान चबाने लगा। एक दिन ज्यादा चूने वाला पान खा लिया तो जीभ जलने लगी।

अब भेड़िया जीभ निकालकर, 'हा-हा-हो-हो' करता नदी की तरफ दौड़ा और पानी में कूद पड़ा।

यह देख कर एक कछुआ हंस कर बोला, "क्यों रे आत्महत्या करना चाहता है क्या?"

"अरे नहीं, मेरी जीभ जल गई है। उसकी आग बुझाना चाहता हूं।" भेड़िया अपनी जीभ को बार-बार पानी में धोते हुए बोला, "तो तू समझ गया ना, सब जीभ का खेल है।" कछुआ एक सयाने की तरह पहेली में बोला।

"मतलब?" भेड़िया तीन और डुबकी लगाते हुए बोला। ''बहुत दिनों बाद नहा रहा था ना इसलिए।''

कछुआ आखिरी बार बोला, "बाहर निकल कर धूप में बैठ, खुद समझ जाएगा।"

भेड़िया जब बाहर आया, शरीर का पानी झाड़ा तो उसने देखा अब उसके शरीर का रंग आधा लाल आधा पीला नहीं था।

थोड़ी देर धूप में बैठने पर उसे कछुए की बात समझ में आ गई। सच यह जीभ का ही तो खेल था। ना वह अंधेरे में रंगमहल की मुर्गियां चुराने जाता, न उस पर रंग लगते और ना ये आफत आती। बस उसी दिन से भेड़िया शाकाहारी हो गया है। अब वह दाल-रोटी और दूध-भात खाता है।

- 301, वास्तु रिद्धि, विंग पंप हाउस
अंधेरी (पूर्व) मुंबई
मोबाइल -9819424390

तरह आसमान से टपकने लगती हैं तो रिमझिम बारिश हो जाती है। तुम यह भी जानना चाहते हो कि गर्मियों में बादल कहां चले जाते हैं? उतनी अथाह गर्मी में पानी की भाप से इतनी बूंदें नहीं बनती कि उनसे बादल बन जाएं। तब एक और जगह है जहां से बादल आ जाते हैं। जानते हो कहां से? विशाल हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से। इनसे खूब काले-भूरे बादल बन कर आसमान में उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं। वे खूब गरज कर बरसने लगते हैं और झमाझम बारिश होने लगती है।

एक बात और अनुभव! गर्मियों में जब धरती खूब तप जाती है और पानी की भाप के साथ ही हवा भी हल्की होकर ऊपर उठ जाती है तो धरती से काफी ऊपर तक आसमान में हवा का दबाब कम हो जाता है। उस जगह को भरने के लिए हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से पानी की बूंदों से भरी, ठंडी हवाएं भागती हुई आती हैं। तब हम कहते हैं लो मानसून आ गया। उनसे खूब बादल बनते हैं। एक मजेदार बात बताऊं? एक बादल को तो तुमने भी छू रखा है। वह तुम्हारे साथ आसपास टहल भी चुका है। जानते हो, वह कौन-सा बादल है? वह बादल है-कोहरा। जब वह तमको छू कर निकलता है तो तुम्हारे हाथ-मुंह पर उसकी नन्हीं बूंदे चिपक जाती हैं। आसमान के बादल ऐसी ही बूंदों से तो बनते हैं लेकिन वे बहुत घने होते हैं।

- सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स, प्लाट नं. 20,
सैक्टर-7, द्वारका फेज-1, नई दिल्ली-110075
मोबाइल-9818346064
E-mail: dmewari@yahoo.com

कहानी :

रघ्घू

● डॉ. रमेश आनंद

एक गांव में रग्घू नाम का एक निर्धन व्यक्ति रहता था। वह बहुत स्वाभिमानी व्यक्ति था। उसके परिवार में उसकी पत्नी व एक लड़की ही थी।

रग्घू खेतों में मेहनत मजदूरी करता था। उसका मालिक रग्घू को दिन भर कोल्हू के बैल की तरह काम में व्यस्त रखता। तब जाकर शाम को थोड़ी सी पगार देता। जिससे परिवार का गुजारा बड़ी मुश्किल से हो पाता था।

रग्घू की लड़की ने साहूकार के बच्चों को आम खाते देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। घर आकर उसने अपने पिता से आम लाने के लिए कहा।

आम का सीजन शुरू हुआ ही था। इसलिए आम का भाव आसमान छू रहा था। रग्घू आम खरीदने में असमर्थ था। उसने किसी तरह से बाल मन को समझा बूझाकर शांत कर दिया। आंगन में पड़ी हुई टूटी चारपाई पर लेट गया ।

नींद में रग्घू ने सपना देखा कि उसने अपनी बेटी के लिए घर के आंगन में एक आम का पौधा लगा लिया है। उसने महसूस किया कि पौधा लगाना बैंक में एक बचत खाता खोलने जैसा है। धीरे धीरे दिन महीने साल गुजरते गए। पौधे ने भी धीरे धीरे बढ़ते हुए शैशव अवस्था से युवा अवस्था धारण कर ली थी। पेड़ आमों से लद चुका था। मीठे व रसीले आमों को देखकर रग्घू की लड़की फूली नहीं समाई। रग्घू उसकी पत्नी व बेटी आमों का क्या किया जाए। तभी उसके दिमाग में आया कि आमों को तोड़कर शहर में बेचा जाए। उसने ऐसा ही किया। इस वर्ष आम की फसल कम आने के कारण आम ऊंचे भाव पर बिके।

सबसे पहले उसने अपना कर्ज चुकाया और वह अपने ऋण से मुक्त हो गया। उसने शेष रुपए बैंक में जमा कर दिए। दूसरे वर्ष भी उसके पेड़ पर खूब आम आए। उसके परिवार ने जी भर के आम खाए। शेष आमों को शहर ले जाकर बेच दिया। प्राप्त राशि को अपने बैंक खाते में जमा कर दिया। बचत करने से रग्घू की निर्धनता समाप्त हो गई।

अब रग्घू पेड़ों के महत्त्व के बारे में भली-भांति जान चुका था। उसने अपने घर के आगे खाली पड़ी जमीन पर आम के पौधे लगा दिए। कुछ वर्षों बाद पौधे पेड़ों में परिवर्तित हो गए। उन पर आम आना प्रारंभ हो गया। रग्घू अब मजदूर से व्यापारी बन चुका था। गांव के प्रतिष्ठित लोगों में उसे गिने जाने लगा।

अचानक रग्घू की आंख खुली। उसने अपने आपको आंगन में बिछी टूटी सी चारपाई पर पाया। इस सपने ने रग्घू की आंख खोल दी। अब उसकी समझ में आ गया कि पेड़ सचमुच बहुत उपयोगी हैं। वह तुरंत आम का पौधा लेने नर्सरी चल दिया।

- 2/305 बघेल कुंज नामनेर,आगरा,उ.प्र.- 282001
मोबाइल-9458261887

व्यक्तित्व:

13 वर्ष का शहीद : ध्रुव कुंडू

● डॉ. हेमंत कुमार

भारत की आजादी की लड़ाई में हजारों-हजार लोग शहीद हो गए। उनमें 13 वर्ष की उम्र का बालक ध्रुव कुंडू भी एक था। ध्रुव कुंडू का जन्म सन् 1929 में कटिहार (बिहार) में हुआ था। उनके पिता का नाम डॉ. किशोरीलाल कुंडू था। जो कि प्रख्यात चिकित्सक व गए। कटिहार में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व ध्रुव ने किया। 13 अगस्त,1942 को ध्रुव घर से स्कूल के लिए निकला। परंतु उसके मन में सरकारी दफ्तर पर तिरंगा लहराने का भूत सवार था। उसने छात्रों के सहयोग से सब रजिस्ट्रार सहित कई कार्यालयों में तिरंगा फहरा दिया। तिरंगा झंडा लिए जुलूस को पुलिस ने समझाया। पुलिस की बंदूक देखकर सारे छात्र वापिस चले गए। पर ध्रुव डठा रहा। इसी बीच पुलिस ने फायरिंग की।

इस फायरिंग में एक गोली ध्रुव की जांघ में लगी। उसे पूर्णिया अस्पताल ले जाया गया। 15 अगस्त को अस्पताल में ही ध्रुव कुंडू ने प्राण त्याग दिए। आज भी ध्रुव के बलिदान को याद किया जाता है। उनकी स्मृति में पार्क व वाटिका बनाई गई हैं। सन् 2021 में भारत सरकार ने ध्रुव कुंडू के सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया है।आजादी के लिए शहीद ध्रुव कुंडू का शत-शत नमन!

-भागलपुर, बिहार

कहानी :

सिद्धू बन गया जादूगर

● रोचिका अरुण शर्मा

आज जैसे ही सिद्धार्थ विद्यालय से घर आया। बड़ा ही उत्साहित नजर आ रहा था।

"मम्मी प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी बाल-मेला लगेगा। इस बार मैं अपनी स्टाल में जादू दिखाउंगा।" वह कपड़े बदल कर जादू का पिटारा खोल कर बैठ गया।

आखिर बाल दिवस आ ही गया। स्कूल में खूब रौनक लगी हुई थी। रंग-बिरंगी फर्रियों और गुब्बारों से विद्यालय परिसर को सजाया गया। विद्यार्थी भी रंग-बिरंगे कपड़ों में खिले फूलों से नजर आ रहे थे।

सिद्धार्थ एवं उसके सहपाठी चहकते हुए इधर से उधर हर एक स्टाल पर जा-जा कर देख रहे थे कि किसने अपनी स्टाल में क्या लगाया है।

वो देखो रोहित ने गोले की स्टाल लगाई है और निहारिका रिंग से खिलौनों पर निशाना साधने का गेम खिलवा रही है।

रिंपल की स्टाल के सामने से गुजरे तो उनके मुंह में पानी आ गया।

"चलो एक-एक प्लेट पानी-पूरी खाते हैं।" और सब

दौड़ पड़े।

"अरे! ये देखो रक्षित ने बाउलिंग का गेम लगाया है।"

"रक्षित कितने रुपए का कूपन है तुम्हारे एक गेम का?" अश्विन ने पानी पूरी खाते हुए पूछा।

देखो हिना ने पेपर क्विलिंग से ज्वैलरी, ग्रीटिंग कार्ड आदि बना कर रखे हैं और अयाना ने लूम बैंड की ज्वैलरी।

ग्रीन सेंडविच, मफिन, कैंडी, चॉकलेट, पूरी भाजी और तो और पिज्जा भी। वाह ! हर तरफ खाने की खुशबू, सुंदर सजी दुकानें और ये क्या रश्मि ने तो फिशिंग गेम लगाया है।

तभी स्कूल ऑफिस से अनाउंसमेंट सुनाई दिया, "सभी स्टाल के मालिक अपनी स्टाल पर पहुंचें। उम्मीद है आप सभी ने एक-दूसरे की स्टॉल देख कर खाने-पीने और खेलने का आनंद ले लिया होगा।"

सिद्धार्थ भी अपनी स्टॉल पर पहुंचा। वहां बड़े-बड़े चमकीले अक्षरों में लिखा था-''बंगाल का जादूगर सिद्धू।"

विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थी उसका जादू देखने के लिए बड़ी ही उत्सुकता से स्टॉल पर लगी टेबल के इर्द-गिर्द खड़े हो गए।

"अब शुरू होता है सिद्धू का मैजिक शो" और उसी के साथ सिद्धार्थ ने अपना जादुई पिटारा खोला।

"ये देखिए पानी से भरा टब और अब बंगाल से अभी-अभी आया सिद्धू जादूगर पानी पर सुई तैरा कर दिखाएगा" सिद्धार्थ लय के साथ बोले जा रहा था।

"क्या सुई पानी पर तैरेगी? सुई तो लोहा है लकड़ी की होती तो तैरती। इसकी सुई तो जरूर डूबेगी। तेरा शो फ्लॉप शो होने वाला है सिद्धू" अभिजीत ने उसे चिढ़ाते हुए कहा।

तभी उसने देखा सिद्धू ने एक चोकोर पतले कागज में सुई को रखा और पानी भरे टब में डाल दिया।

कागज तो भीगते ही डूब गया और सुई तैर रही थी।

"तो बच्चो! बजाओ ताली" सिद्धू ने कंधे पर पहने लाल रंग के केप को हिलाते हुए कहा।

सभी बच्चे आश्चर्य चकित होकर ताली बजाने लगे।

"फिर सिद्धू ने दूसरा पिटारा खोला और कहा अब होगा बर्फीला, ठंडा-ठंडा कूल-कूल जादू। बच्चो! एक बार फिर से ताली।"

"फिर से जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट और ये क्या

पानी पर तैरते बर्फ के वर्गाकार टुकड़े मतलब आइस क्यूब्स" "वाओ" समीक्षा ने आंखें मटकाई।

"तू जादू कैसे करता है सिद्धू बता न" अनिकेत ने सिद्धार्थ के कान के पास जा कर धीमे से पूछा।

''आज नहीं बताऊंगा। आज तो सिर्फ जादू देखो जादू'' सिद्धार्थ के स्वर में जीत की खुशी थी।

"समोसे, लेमनेड, झाल-मुड़ी और तो और बर्गर भी और क्या चाहिए मेले में मजा आ गया आज तो।" सिद्धार्थ रात को अपने माता-पिता एवं छोटी बहिन को मेले के बारे में खूब चहकते हुए आंखें मटका कर बता रहा था।

अगले दिन प्रधानाध्यापिका ने उसे प्रार्थना-सभा में स्टेज पर बुलाकर कहा,

''ये हैं जादूगर सिद्धार्थ। आप पानी पर सुई और बर्फ तैरा सकते हैं जबकि पानी तरल है एवं सुई और आइस क्यूब्स ठोस। तो अब बंगाल से आए जादूगर साहब बताएं कि यह जादू कहां से सीखा आपने?''

"शरमाते हुए सिद्धार्थ स्टेज पर आया। माइक के सामने खड़े होकर बोला,'' मैम! ये तो जादू है ही नहीं।"

"क्या! तो कैसे हुआ यह सब?" विद्यार्थियों का स्वर जोर से गूंजा।

यह तो साइंस है यानी कि विज्ञान।

"दरअसल मेरे पड़ोस के बड़े भैया साइंस स्टूडेंट हैं। वे किताबें पढ़ कर एक्सपेरिमेंट करते रहते हैं तो मैं देख कर उनसे विज्ञान समझ लेता हूं।"

वैसे तो लोहे का घनत्व पानी से अधिक होता है। इसलिए लोहे की वस्तुएं पानी में डूब जाती हैं। लेकिन सुई का पृष्ठीय क्षेत्रफल (घनत्व) पानी के घनत्व से कम होता है, इसलिए वह तैरती रहती है। यही आइस क्यूब के साथ भी होता है। जबकि ठोस का घनत्व तो तरल से ज्यादा होना चाहिए। लेकिन जब पानी ठोस होकर बर्फ में बदलता है तो हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन आयन एक दूसरे को दूर रखने के लिए दूरी बना लेते हैं और ठोस होने से पहले ही बर्फ का घनत्व कम होने लगता है।

"वाह ! सिद्धार्थ तुम तो बड़े होकर वैज्ञानिक बनोगे।" प्रधानाध्यापिका ने उसे शाबाशी दी और सभी बच्चों ने जोरदार तालियों से सिद्धार्थ का उत्साहवर्धन किया।

- चेन्नई
मोबाइल : 9597172444

चित्र बनाना सीखो

- चांद मोहम्मद घोसी,
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

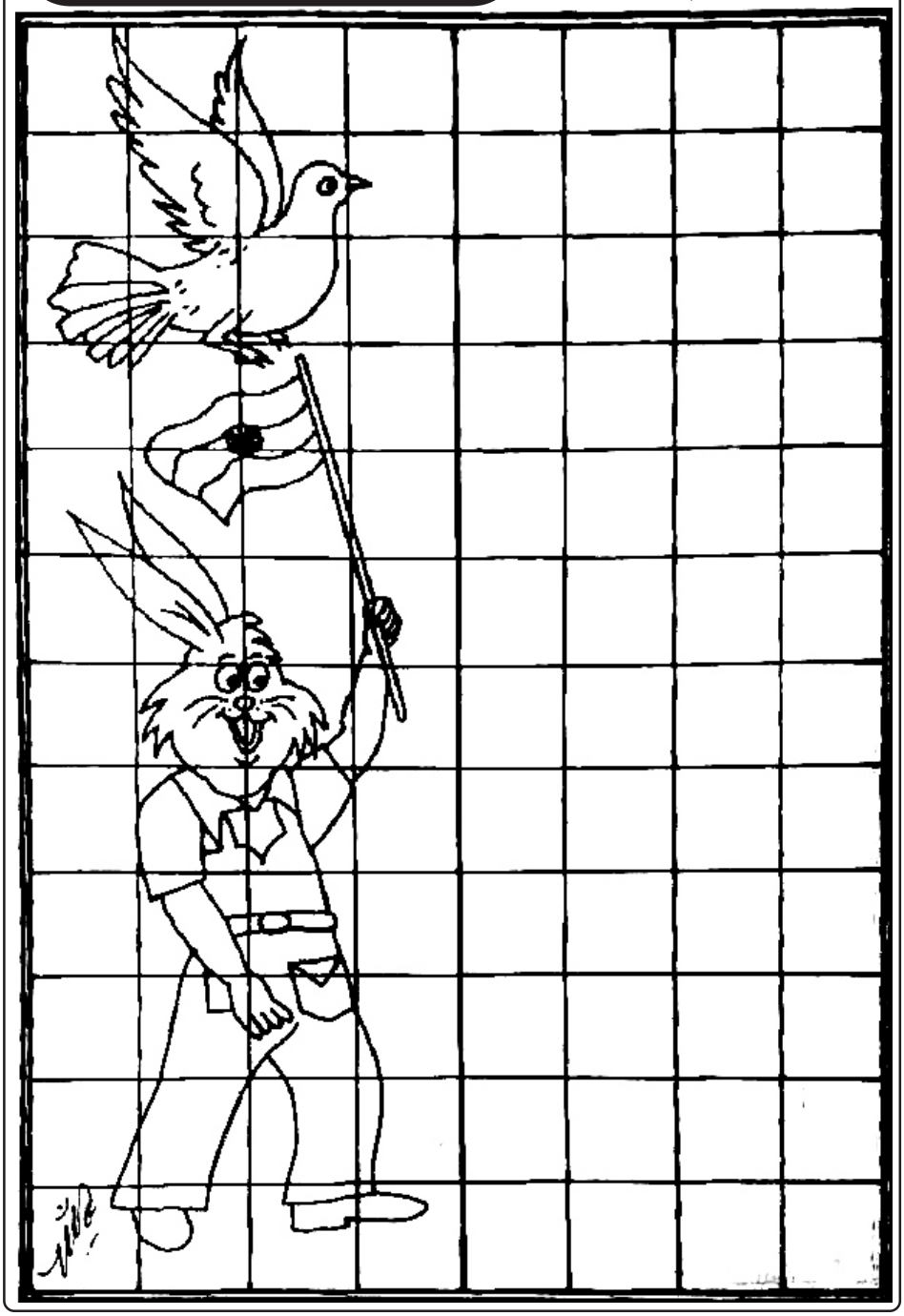

कहानी :

संगठन की शक्ति

● डॉ. मीरा रामनिवास

सरदार चीकू बंदर की अध्यक्षता में सभी बंदर एकत्रित हुए। बंदरों की सभा हुई। सरदार चीकू दादा ने कहा, ''कल सुबह हम सब कुछ दूर स्थित बाग में फल-फूल खाने जाएंगे। सभी सुबह छः बजे पीपल के वृक्ष के नीचे एकत्रित हो जाएंगे।''

यह खबर सुनकर छोटू, मोटू, भोलू, रानी, सोनी सब बहुत खुश थे। सुबह होते ही निकलना था। सुबह सब नियत समय पर इकट्ठे हो गए। दल के सभी सदस्यों की गिनती हुई। दल के सरदार चीकू ने सबको समूह में बने रहने की हिदायत दी। दल को दो टोलियों में बांटा गया था। एक टोली का नेतृत्व चीकू खुद कर रहा था। दूसरी टोली को गोलू संभाल रहा था। कुछ दूर चलने के बाद मोनू बंदर ने गोलू से पूछा, "और कितनी दूर जाना है गोलू? बताओ तो, मुझे बड़ी तेज भूख लगी है।"

''बस पहुंचने ही वाले हैं।'' गोलू ने जवाब दिया। दल में कुछ नर और कुछ मादा बंदर हैं। सब मिलकर लगभग सोलह नर और मादा वानर थे। दल में रानी बंदरिया भी थी। उसकी गोद में एक छोटा बच्चा भी था। जिसे वह अपने पेट से चिपकाए हुए दल के साथ-साथ चल रही थी। बच्चा निडर होकर अपनी मां से चिपक यहां वहां गर्दन घुमाकर देख रहा था।

लगभग दो किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद बंदरों का दल बाग में पहुंच गया। बाग में तरह-तरह के पेड़-पौधे, आम, संतरे, चीकू, पीपल, नीम, जामुन, अमरूद, बेरी आदि लगे थे। पहले चीकू सरदार ने इधर-उधर देखते हुए सावधानी से बाग का मुआयना किया। देखा कोई नहीं है सबको बाग के अंदर घुसने का इशारा किया। सरदार की आज्ञा पाकर सभी बंदर अपनी रुचि के अनुसार पेड़ों पर चढ़कर फल फूल खाने लगे। भोलू व सोनी खाते हुए बतियाते जा रहे थे वाह! मजा आ गया, बहुत रसीले मीठे फल हैं। सोनी बोली मैं तो जी भर के बेर खाऊंगी। सभी बंदर स्वाद लेकर फल खा रहे थे। तोड़ते, खाते थे। कुछ फल जमीन पर गिर जाते थे।

पेड़ों पर पंछी बैठे थे। पंछी चहक रहे थे। कुछ पंक्षी फल खा रहे थे। तोता, मैना, गौरैया, गिलहरी आदि बंदरों से निडर होकर पेड़ों पर बैठे हुए थे। उन सबका बसेरा शायद इसी बाग के पेड़ों पर था।

रानी का छोटा बच्चा भी गोद से निकल कर फल खा रहा था। बच्चे ने बेर देखे और मां से कहा, ''मां! मुझे बेर खाना है।'' रानी उसे बेर दे रही थी खुद भी खा रही थी। सर्दी का मौसम था। सूरज निकल आया था। सुबह की सुनहरी धूप पेड़ों पर पड़ने लगी थी। सूरज के आते ही वातावरण खुशनुमा हो गया था। पेड़ों के पत्ते चमकने लगे थे। पेड़ों पर अमरूद, आंवला, संतरा, बेर, चीकू आदि फल साफ-साफ दिखाई देने लगे थे। बाग में सब्जियां भी लगी थी। सब्जियों की अलग-अलग क्यारियां बनी हुई थी। जिनमें सभी तरह की सब्जियां मेथी, मटर, गाजर, मूली, शकरकंदी, आलू, बैंगन, पालक, टमाटर आदि उगे थे।

फल खाने के बाद बंदर टोली नीचे उतर आई। क्यारियों में लगी सब्जियां खाने लगी। रानी का बच्चा चीकू भी मजे लेकर टमाटर खाने लगा।

सुबह होते ही माली जाग गया। माली को आते देख गोलू और चीकू ने सबको सतर्क कर दिया। बंदरों की टोली को देख माली पहले तो ठिठक गया फिर लाठी लेकर दौड़ पड़ा।

हट! हट! हुर्र-हुर्र तरह-तरह की आवाजें निकालकर चिल्लाते हुए बंदरों को भगाने की कोशिश करने लगा। भोलू बंदर ने अपनी भाषा में इशारे से कहा, ''सावधान बचना किसी को लाठी लग न पाए। सब पेड़ों पर चढ़ जाओ। बंदर भागे और फिर पेड़ों पर चढ़ गए। माली ने लाठी रख दी और गुलेल हाथ में लेकर निशाना साधने लगा। बंदरों पर गुलेल द्वारा वार करने लगा। मीकू ने सबको सचेत करते हुए कहा सभी गतिशील बने रहो। चोट न लगने पाए। बंदर गुलेल के वार से बचने हेतु एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगा रहे थे।

''काश मेरे पास थैली होती, थोड़े बेर भर लेती।'' सोनी बंदरिया बोली। हाथों में भर लो छोटू बंदर ने छेड़ते हुए कहा। भोलू गोलू बंदर दोनों की बात सुनकर हंसने लगे।

माली परेशान हो गया था। बंदर थे कि भागने का नाम ही ना लेते थे। फलों को नुकसान देखकर वह बहुत घबरा गया था। आज तो जरूर मालिक से डांठ पड़ेगी। अंत में माली अपने कमरे से एयरगन लेकर आया। धड़ाके की आवाज सुनकर बंदर डरने लगे।

चीकू सरदार ने दल को बाग से निकल भागने का इशारा किया। गोलू ने भी सबको इशारा किया, चलो भाग चलो, बाग से निकलो वापस चलते हैं। सभी बंदर बगीचा छोड़ जाने लगे। रानी बंदरिया अपने बच्चे को पेट से चिपकाए पीछे-पीछे चल रही थी। सरदार ने गोलू से पूछा,''कोई पीछे तो नहीं छूट गया।''

मेरा गांव

● शशिबाला श्रीवास्तव

कितना प्यारा मेरा गांव,
मिलती बरगद नीम की छांव।
हरे भरे हैं खेत निराले,
चना, मटर और सरसों वाले।
जहां पे चूं-चूं बोले चिड़िया,
कौए करते कांव-कांव,
कितना प्यारा मेरा गांव।
यहां न चलती मोटर गाड़ी,
किसान हांकते बैल-गाड़ी।
नन्हे मुन्ने दोस्त हमारे,
तैराते कागज की नाव,
कितना प्यारा मेरा गांव।
हिल मिल सब त्यौहार मनाते,
एक दूजे को गले लगाते।
छोटे लेते आशीर्वाद,
छू कर अपने बड़े का पांव।
कितना प्यारा मेरा गांव,

- पूर्व माध्यमिक विद्यालय टांडा,
हरचंदपुर, रायबरेली,उ.प्र.
मोबाइल-9451763149

हमारी दुनिया

● डॉ. नरेंद्रनाथ लाहा

हमारी अपनी दुनिया,
बच्चों की प्यारी दुनिया।
पढ़ाई लिखाई की दुनिया,
खेल कूद की दुनिया।
हमारे अंदर संस्कार हैं,
गुरुओं ने दिया भरमार हैं।
हमने इसे अपनाया है,
संसार को पथ दिखलाया है।

-27 ललितपुर कॉलोनी, ग्वालियर,म.प्र.
मोबाइल- 0751-2322777

नन्हे चित्रकार

● सरोजनी कुकरेती

रंग बिरंगी दुनिया प्यारी,
भर दें हममें खुशियां सारी।
सुंदर झरने सुंदर नदियां,
बीत गई कितनी ही सदियां।
इन रंगों से हम भी खेलें,
मिलकर सारे खेल खेलें।
सबने इसमें रंग बिखेरे,
नन्हीं दुनिया के हम चितेरे।

- कालिदास मार्ग, कोटद्वार,पौड़ी
मोबाइल-9756881338

सूरज चांद

● डॉ. शशि गोयल

कहते सूरज चांद न मिलते,
इक दूजे पर निर्भर रहते।
सुबह मिले थे शाम मिलेंगे,
मिल जुल अपना काम करेंगे।
दिन आता है दिन जाता है,
सूरज चलते थक जाता है।
तपता सूरज करे उजाला,
इसीलिए सूरज जल जाता।
संध्या के संग चंदा आता,
अगवानी को तारे लाता।
चंदा शीतल पंखा झलता,
थका हुआ सूरज सो जाता।
बर्फीली घाटी से ला चादर,
सूरज के तन को ढक देता।
शीतल किरणों से सहलाकर,
नया जोश सूरज में भरता।
रोज शाम को दोनों मिलते,
हाल चाल दोनों ही कहते।
फिर सुबह से चलते रहते,
हुई शाम फिर मिलते हैं।

- सप्तऋषि अपार्टमेंट, जी-9, ब्लाक-3, सैक्टर 16
बी, आवास विकास योजना, सिकंदरा आगरा,उ.प्र.
मोबाइल - 9319943446

''नहीं दादा सभी आ गए हैं। रानी की चिंता थी वो भी बच्चे के साथ आ गई है।'' गोलू ने कहा। रास्ते में कुंआ आया। कुएं के पास बने पानी के हौज में जानवरों के लिए पानी भरा था। ''सरदार प्यास लगी है। थोड़ा पानी पी लेते हैं।'' मोटू बंदर ने कहा।

''मुझे भी प्यास लगी है।'' भोलू ने समर्थन करते हुए कहा। ''ठीक है सभी रुक जाओ, पानी पीओ।'' सरदार की आज्ञा से सभी बंदर पानी पीने लगे। रानी ने बच्चे को गोद से उतारा। बच्चा भी पानी पीकर उछल कूद करने लगा।

इतने में कुछ कुत्ते आ गए। रानी ने जल्दी से बच्चे को उठा लिया। रानी बच्चे को लेकर जैसे ही पेड़ पर चढ़ने लगी। इतने में ही एक कुत्ते ने भागकर रानी की पूंछ को पकड़ लिया। रानी ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की। किंतु नाकामयाब रही। वह मदद के लिए चिल्लाई। चीकू सरदार ने दल के सबसे तेज व चुस्त बंदर मीकू को भेजा। इशारा पाते ही मीकू बंदर रानी तक पहुंच गया। रानी की गोद से बच्चे को लेकर वह तुरंत पेड़ पर चढ़ गया। रानी भरसक प्रयास के बाद भी अपनी पूंछ नहीं छुड़ा पा रही थी। रानी को मुसीबत में देख उसे बचाने के लिए मीकू सरदार के साथ गोलू, भोलू सहित सभी बंदरों ने कुत्ते पर धावा बोल दिया। कुत्ता घबरा गया। कुत्ते की पकड़ छूट गई। रानी तुरंत पेड़ पर चढ़ गई।

कुत्ता डर कर भाग गया। सब खुश थे, रानी और उसका बच्चा बच गए थे। चैन की सांस लेते हुए रानी ने कहा, ''सबके सहयोग से मैं और मेरा बेटा बच गए। रानी की आंखें नम हो गई। पेड़ पर तनिक विश्राम कर बंदरों का दल वापस जंगल की तरफ लौट गया।

-आश्रय-474,सैक्टर-1, गांधीनगर,गुजरात
मोबाइल-9978405694

कहानी :

चांद सूरज

● मधुलिका श्रीवास्तवा

आसमान बादलों से घिरा था। कोहरे की चादर से पृथ्वी भी अलसाई सी थी। सूरज भी आराम फरमा रहा था। चांद ने अपने घर की राह पकड़ते हुए सूरज को इस तरह अलसाते हुए देखा तो हालचाल पूछा।

सूरज ने कहा, "हां भाई चांद! ये बरसात का मौसम है। बादलों ने आसमान को घेर रखा है तो मैंने सोचा थोड़ा आराम ही कर लूं।" सूरज ने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

"ये कैसी बात कर रहे हो? हमारे-तुम्हारे जीवन में आलस के लिए कोई स्थान नहीं है।" चांद ने कुछ चिंतित होकर कहा।

"ठीक कहते हो ... मैं जानता हूं हमारा आलस पृथ्वी के लिए कितना हानिकारक है।" सूरज ने कहा।

"तो फिर ये आलस कैसा?" चांद ने फिर पूछा।

"अरे आलस नहीं है भाई ... असल में भारत जैसे कुछ ही देश हैं, जहां ऋतुएं ठीक समय पर आती जाती हैं। बरसात व ठंड में मुझे कुछ आराम भी मिल जाता है।"

"ये क्या बात हुई, मैं तुम्हारी बात समझा नहीं?" चांद ने उत्सुकता से पूछा।

"पृथ्वी पर छः ऐसे देश हैं। जहां सत्तर से पचहत्तर दिन तक एक पल का भी आराम नहीं मिलता लगातार ड्यूटी पर रहता हूं।"

"क्या मतलब है तुम्हारा, मैं कुछ समझा नहीं।" चांद ने फिर पूछा।

"मतलब ये है कि कुछ देशों में सत्तर से पचहत्तर दिनों तक रात नहीं होती।" सूरज बोला।

"अरे ... ऐसे कौन से देश हैं भाई?" चांद की जिज्ञासा बढ़ गई।

"आइसलैंड, नार्वे, स्वीडन, अलास्का, कनाडा और फिनलैंड।" सूरज ने बताया।

"अरे ... ये क्या पृथ्वी पर ही हैं।" चांद की जिज्ञासा अपनी चरम सीमा पर थी।

"हां भाई ... पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव पर ये देश हैं। आइसलैंड और कनाड़ा उत्तरी अमेरिका और नार्वे, स्वीडन, अलास्का और फिनलैंड उत्तरी यूरोप में आते हैं। जहां मई से जुलाई तक मुझे जरा भी आराम नहीं मिलता।"

"ओह तो तुम क्या वहां इतने दिन तक लगातार चमकते रहते हो।" चांद ने पूछा।

"हां भई, भारत जैसे कुछ ही देश हैं जहां मेरा समय साल भर बिल्कुल तय रहता है। बस दस से चौदह घंटे रोज।"

"अरे वाह सूरज भाई ... तब तो तुम्हें भारत सबसे अच्छा लगता होगा।"

"सही कह रहे हो। यहां लोग सूर्य नमस्कार, सूरज पूजा और विभिन्न अवसरों पर मेरी पूजा भी तो करते हैं। जिसमें मकर संक्रांति व छठ पर्व पर तो मेरी विशेष पूजा अर्चना होती है।"

"वाह भाई वाह ... अच्छा चलो अब काम पर लगो ... देखो बादल भी छंटने लगे।" चांद ने कहा।

"अच्छा चलता हूं, शाम को फिर मिलते हैं। कहकर सूरज चमकने लगा।

-101/17 शिवाजी नगर, भोपाल,म.प्र.
मोबाइल- 9425009686

अंक पहेली

सामने दी गई पहेली में रिक्त स्थान पर कितनी संख्या आएगी।

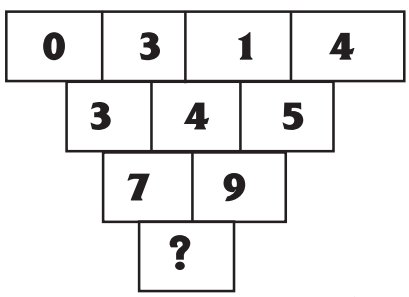

उत्तर :- ऊपर की पहली लाइन के 2 क्रमांक के अंकों को जोड़कर नीचे की लाइन में लिखना है। इस तरह अंत में 7 व 9 का योग रिक्त स्थान पर 16 आएगा।

शब्दजाल

शब्दजाल का उत्तर

पशु पक्षियों और इंसानों के बीच अनूठा रिश्ता

● शिखरचंद जैन

कहते हैं कि इंसान हर रिश्ते में अपना स्वार्थ सिद्ध करने की ताक में रहता है। दोस्ती भी उसी से करता है, जिससे उसका कोई फायदा होने वाला हो। लेकिन हम आपको इंसानों के साथ दोस्ती निभाने वाले कुछ पशु-पक्षियों से मिलवा रहे हैं। इनके बारे में पढ़कर आप कहे बिना नहीं रह सकेंगे, 'इनकी यारी कितनी प्यारी....

पोचो घड़ियाल

(POCHO-GILBERTO SHEDDEN)

कोस्टारिका के नैचुरलिस्ट गिलबर्टो शेडेन और एक घड़ियाल पोचो के बीच हुई अनूठी दोस्ती ने हर किसी को हैरान कर दिया। पोचो एक 5 मीटर (करीब 15 फुट)लंबा और 1000 किलो वजन वाला घड़ियाल था। नेचुरलिस्ट गिलबर्टो अमेरिका के पैरिस्मीना वाटरवे के किनारे पर टहल रहे थे। तभी उनकी नजर पोचो पर पड़ी, जो बंदूक की गोली से घायल था। गिलबर्टो ने तुरंत उसे एक नौका में लादा और अपने ठिकाने पर ले आए। जहां उन्होंने पोचो का इलाज किया और खूब सेवा की। जब पोचो ठीक हो गया, तो उन्होंने उसे नैचुरल जिदगी जीने के लिए उसे पास के एक वाटरवे में छुड़वा दिया। लेकिन अगले ही दिन गिलबर्टो यह देखकर हैरान रह गए कि पोचो उनके घर के बरामदे में आराम कर रहा था। पोचो ने गिलबर्टो का साथ कभी नहीं छोड़ा और जब तक वे जीवित रहे एक दोस्त की तरह उनके साथ ही रहा।

डिनडिम पेंगुइन

(DINDIM–JOAO PEREIRA DE SOUZA)

एक बार रियो डी जेनेरियो में जोआओ परेरा डीसूजा ने एक दक्षिण अमरीकी मैगेलेनिक पेंगुइन को मरने से बचा लिया था। यह पेंगुइन प्रदूषित पानी में फंसकर तेल में बुरी तरह भीग चुका था और भूख से तड़प रहा था। दयालु जोआओ ने उसकी सेवा-सुश्रुषा की और उसे खिला पिलाकर स्वस्थ कर दिया। उसने इसका नाम डिनडिम रखा। ठीक होने के बाद पेंगुइन अपने ठिकाने पर लौट गया। लेकिन एक साल बाद जोआओ ने डिनडिम को अपने सामने देखा, तो हैरान रह गया। वह 8000 कि.मी. दूर से सिर्फ उससे मिलने आया था। अब यह पेंगुइन हर साल अपने इस दोस्त से मिलने आता है।

ब्रूटस भालू

(BRUTUS-CASEY ANDERSON)

अलास्का निवासी नैचुरलिस्ट केसी एंडरसन उस दिन भी अलास्का के घने जंगलों में कुदरत को निहार रहे थे। तभी उनकी नजर दो छोटे-छोटे भालुओं पर पड़ी, जो रो रहे थे। केसी ने नजदीक जाकर देखा, उनकी मां का शव उनके पास ही पड़ा था। दयालु केसी ने उन दोनों बच्चों को अपने घर लाने का निश्चय किया। इनमें से एक बच्चा तो दो-चार दिन बाद गायब हो गया, लेकिन दूसरा उनके पास ही रहा, जिसे उन्होंने 'ब्रूटस' नाम दिया। ब्रूटस उनके पास ही रहने लगा और परिवार का एक अहम् सदस्य बन गया। बाद में जब केसी का विवाह अभिनेत्री मिसी पाइले के साथ हुआ, तो ब्रूटस भी बाराती बन कर शादी में गया। इस अनूठे बाराती और इन दोनों की दोस्ती से हर कोई हैरान था।

जर्मन शेफर्ड टॉमी

(TOMMY & MARIA MARGHERITA LOCHI)

वैसे तो मारिया मार्गरेटा लोची के पास कई पालतू जानवर थे। लेकिन जर्मन शेफर्ड टॉमी और उनके बीच एक खास रिश्ता था। मारिया उसे इतना चाहती थी कि हर रोज प्रेयर के लिए अपने साथ चर्च ले जाती थी। टॉमी उनके पैरों के पास बैठा रहता था। अचानक मारिया की मृत्यु हो गई। लेकिन टॉमी ने उनके अंतिम संस्कार के बावजूद चर्चा जाना नहीं छोड़ा। प्रेयर के वक्त वह लगातार चर्च जाता और मालकिन की सीट के पास बैठ जाता। शायद वह अपनी मालकिन की आत्मा की शांति के लिए प्रेयर करता रहा।

टोल्डो बिल्ली

(TOLDO & RENZO IOZZELLI)

इटली के रेंजो आयोजेली अपनी पालतू बिल्ली टोल्डो को बहुत प्यार करते थे। उसके खानपान का पूरा ध्यान रखते और दुलारते। उनकी मृत्यु होने पर टोल्डो बेहद उदास हो गई। अपने मालिक के प्रति अपने प्यार का इजहार करने के लिए यह बिल्ली लगातार एक साल तक उनकी कब्र पर उपहार ले जाती रही। हालांकि यह उपहार उसकी समझ और हैसियत के अनुसार ही होते थे। वह पत्ते, टहनी, टूथपिक, प्लास्टिक के कप आदि उनके लिए पहुंचाती थी। बाद में मालकिन ने उसका बाहर जाना बंद कर दिया। टोल्डो अपनी मालकिन से भी खूब प्यार करती थी।

रंग भरो

- चांद मोहम्मद घोसी,
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

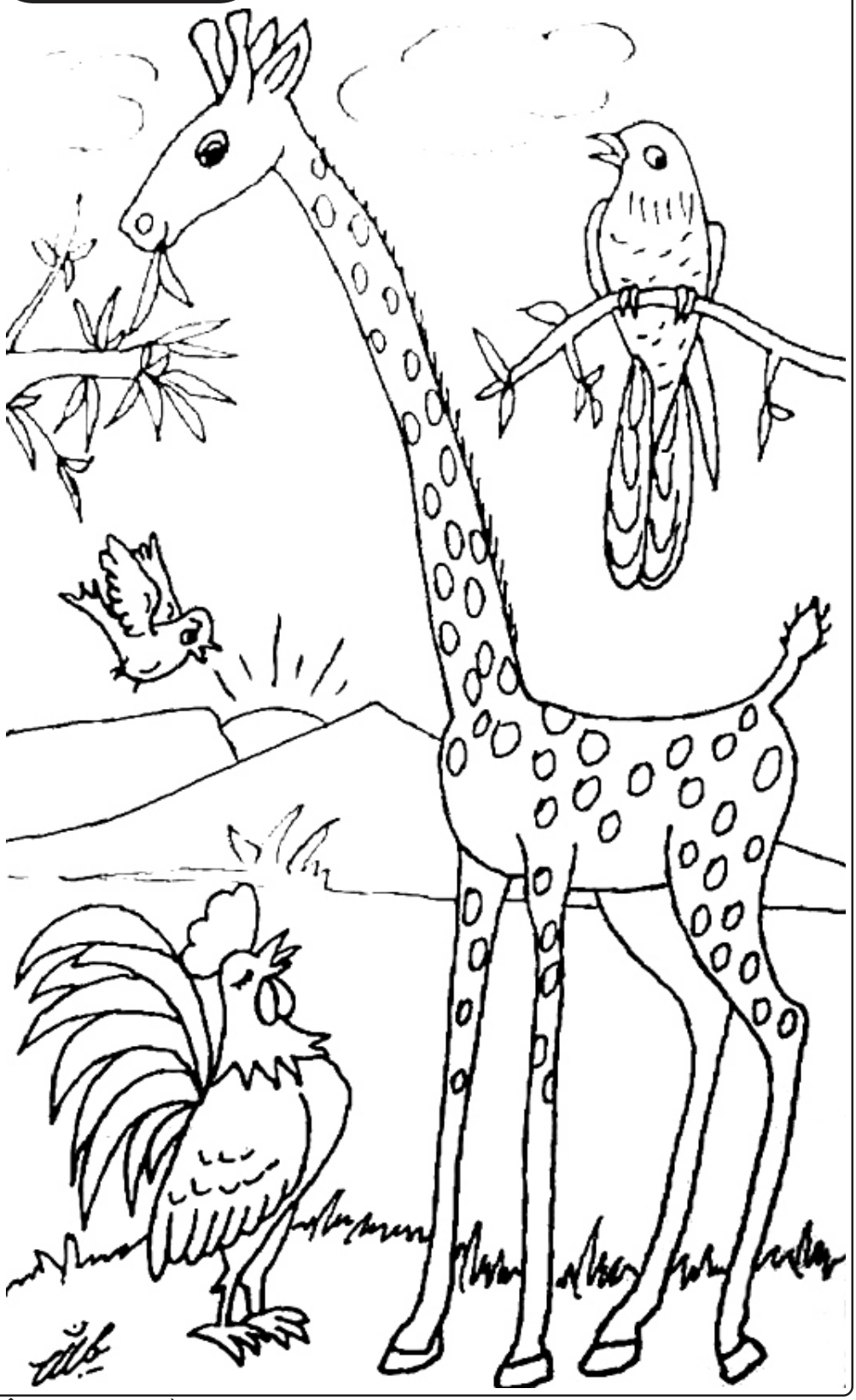

क्रिश्चियन शेर (CHRISTIAN & ANTHONY)

बात जरा पुरानी है। 1969 में लंदन निवासी एंथोनी बोर्क और उनका मित्र चिड़ियाघर में गए तो वहां शेर का एक बच्चा उनके दिल को भा गया। चिड़ियाघर में नियम था कि कोई व्यक्ति चाहे तो किसी भी पशु-पक्षी को खरीद सकता है। दोनों मित्रों ने उसे खरीद लिया और नाम रखा क्रिश्चियन। शेर का यह बच्चा एक फर्नीचर स्टोर में रहने लगा। वह आसपास के बच्चों के साथ भी हिलमिल गया था। देखते ही देखते क्रिश्चियन बड़ा हो गया, तो उसे एक पालतू के रूप में रखना मुश्किल हो गया। एंथोनी और उनके मित्र ने तय किया कि अब उसे अफ्रीका के जंगल में छोड़ देना अच्छा होगा। दोनों उसे अफ्रीका के जंगल में छोड़ आए। लंबे समय बाद दोनों उत्सुकतावश दोबारा उस जंगल में गए। दोनों ने घंटों की तलाश के बाद एक जगह क्रिश्चियन को खोज लिया। दोनों मित्र उस समय बेहद भावुक हो गए जब क्रिश्चियन अपने दोनों पैरों पर खड़ा होकर उनके कंधे और चेहरे सहलाने लगा। लोगों ने शेर की नरमदिली और याद्दाश्त को खूब सराहा।

- 67/49स्ट्रेंड रोड,थर्ड फ्लोर,
कोलकाता-700007
मोबाइल- 9836067535

पुस्तक समीक्षा :

फूलों की भूल

बाल एकांकी में बच्चों के लिए 15 नाटक दिए गए हैं। नाटक बच्चों को अन्न का सम्मान करने, बुजुर्गो का आदर करने, सड़क सुरक्षा, समय का महत्व जैसे कई सम-सामयिक विषयों तथा सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हैं। पुस्तक को चित्रों के माध्यम से आकर्षक बनाने का प्रयास हुआ है। नाटक शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन से भरपूर हैं।

पृष्ठ संख्या : 112 मूल्य- 350/- रुपए

रचनाकार : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

प्रकाशक : स्वास्तिक प्रकाशन,आत्माराम बिल्डिंग,1376 कश्मीरी गेट,दिल्ली-110006

हम तो बच्चे हैं

संग्रह में तितली, कौआ, घड़ी, उल्लू जैसी जहां लगभग तीन दर्जन कविताएं बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए दी गई हैं। वहीं शिशुओं के लिए प्रत्येक स्वर तथा व्यंजन पर चार-चार लाइन की कविताएं दी गई हैं। छोटे बच्चों के लिए पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। प्रत्येक कविता के साथ रंगीन चित्र ने पुस्तक को आकर्षक बना दिया है। कागज एवं साज-सज्जा भी अच्छी है।

पृष्ठ संख्या : 108 मूल्य- 299/-रुपए

रचनाकार : कुमुद वर्मा

संपर्क: 9898633354

घुघूति बासूति

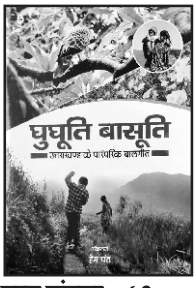

संकलन में उत्तराखंड की 13 पारंपरिक लोरियां, 7 पर्व गीत, 28 खेल गीत तथा 6 पढ़ाई गीत दिए गए हैं। बच्चों द्वारा बनाए गए आकर्षक चित्रों के साथ गीत आकर्षक ढंग से दिए गए हैं। एक पृष्ठ पर कुमाउनी पहेलियां तथा उनके उत्तर भी दिए गए हैं। कुमाउनी बाल गीतों का संभवतया ये पहला संकलन है।

पृष्ठ संख्या- 60 मूल्य- 125/- रुपए

संकलन: हेम पंत

प्रकाशक : समय साक्ष्य,15 फालतू लाइन, देहरादून- 248001

काला अक्षर भैंस बराबर

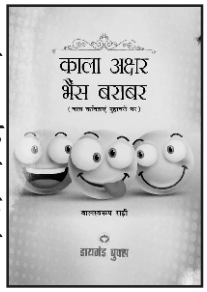

प्रचलित मुहावरों तथा लोकोक्तियों पर आधारित 30 कविताएं इस पुस्तक में दी गई हैं। मुहावरा कविता में जबरदस्ती ठूंसा नहीं गया है अपितु कविता में मुहावरे के लिए पृष्ठभूमि तैयार करते हुए कविता में मुहावरा पिरोया गया है। पुस्तक बच्चों का मनोरंजन तो करेगी ही मुहावरे तथा लोकोक्तियों को समझने में भी मदद करेगी।

पृष्ठ संख्या : 48 मूल्य- 395/-रुपए

रचनाकार : बालस्वरूप राही

संपर्क : डी-13 ए/18 द्वितीय तल, 2 मॉडल टाउन, दिल्ली - 110009

सही फैसला

बाल कहानी संग्रह में 23 कहानियां बाल मनोविज्ञान के अनुरूप दी गई हैं। कहानियां मनोरंजक होने के साथ ही बड़े बच्चों को पर्यावरण, प्रकृति, संस्कृति, सामाजिक सरोकारों तथा मानवीय मूल्यों से जोड़ती हैं। रंगीन चित्रों से पुस्तक बहुत आकर्षक बनी है।

पृष्ठ संख्या : 94 मूल्य : 180/- रुपए

रचनाकार: दर्शन सिंह आशट

प्रकाशक: प्रकाशन विभाग,सूचना और प्रसारण मंत्रालय,भारत सरकार सूचना भवन,सी.जी.ओ कांप्लैक्स,लोधी रोड, नई दिल्ली 110003

सबसे बड़ी है मानवता

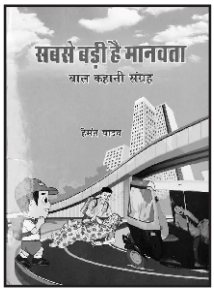

बाल कहानी संग्रह में मेहनत का फल, चिपकू दोस्त से पीछा छूटा, मोहन की चतुराई, नेवले की वफादारी जैसी 16 कहानियां बच्चों के परिवेश पर आधारित दी गई हैं। कहानियां बातों ही बात में बच्चों से काफी कुछ कह जाती हैं। पुस्तक के चित्र भी बच्चों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। मुखपृष्ठ भी बहुत आकर्षक है।

पृष्ठ संख्या : 80 मूल्य 250/- रुपए

लेखक : हेमंत यादव

प्रकाशक : साहित्यागार, धामाणी मार्किट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर, राजस्थान- 302003

वीरता की प्रतीक झलकारी बाई

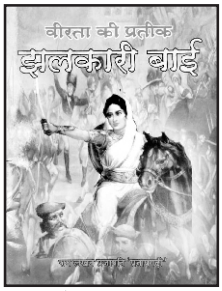

बच्चों को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों तथा वीरांगनाओं से परिचय कराने के उद्देश्य से लिखी पुस्तक में रानी लक्ष्मी बाई की सेना में सैनिक रही झलकारी बाई की गौरव गाथा को कविता के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास सराहनीय है। खंड काव्य तथा महाकाव्य की श्रंखला में इस प्रयास की सराहना की ही जानी चाहिए।

पृष्ठ संख्या : 60 मूल्य- 150/- रुपए

रचनाकार : राम लखन प्रजापति 'प्रतापगढ़ी'

प्रकाशक : साहित्य संवर्धन संस्थान,विश्वनाथनगर,जसरा,प्रयागराज,उ.प्र. 212107

गांव की पूजा

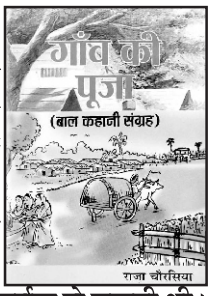

बाल कहानी संग्रह में गांव की पूजा सहित 22 कहानियां दी गई हैं। संकलन की अधिकतर कहानियां ग्रामीण परिवेश से बच्चों को अवगत कराती हैं। बच्चों को प्रकृति, संस्कृति, मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक सरोकारों से जोड़ने में कहानियां सक्षम हैं। पुस्तक में चित्र होते तो पुस्तक और अधिक आकर्षक हो सकती थी।

पृष्ठ संख्या : 64 मूल्य- 50/- रुपए

रचनाकार: राजा चौरसिया

संपर्क : उमरियापान, कटनी, म.प्र.- 483332

समीक्षक :
रतनसिंह किरमोलिया
मो.7534007179

बादल भैया

● सुशीला शर्मा

बादल भैया कहां छुपे हो, थोड़ा ऊपर आओ ना,
सूरज दादा लाल हो रहे, छाया तो बन जाओ ना।
कैसे जाऊं मैं विद्यालय, धूप चटकती जाती है,
मैं नन्ही-सी बच्ची हूं, धूप मुझे झुलसाती है।
बादल बोला कैसे आऊं, मुझको भी डर लगता है,
ताल तलैया सूख रहे हैं, मेरा तन भी जलता है।
वृक्ष दिखाई ना देते हैं, तुम भी तो बतलाओ ना,
कैसे छाया दूं मैं तुमको, थोड़ा जल तो पिलाओ ना।
मुन्नी ने बोला मित्रों से, सब मिल वृक्ष लगाओ ना,
हरियाली फैले घर-घर में, वायु शुद्ध बनाओ ना।
सबने मिलकर वृक्ष लगाए,बच्चे बूढ़े सब मिल आए,
पेड़ उगे,जंगल लहराए, बादल पानी भरने आए।
बादल दौड़े-दौड़े आए, उमड़ घुमड़ पानी बरसाए,
मुन्नी भी खुश होकर नाची, बादल ऊपर से मुस्काए।

- *64-65 विवेक विहार,न्यू सांगानेर रोड, सोडाला,जयपुर,राजस्थान- 302019*
मोबाइल -9214056681

दादी मां

● शकुंतला शर्मा

रोज सवेरे उठकर हमें, जगा देती है दादी मां,
अपना सारा लाड़-दुलार, लुटा देती है दादी मां।
कब सोती हैं, कब जागती हैं, पता नहीं लग पाता है,
लोरी सुना-सुना कर हमें, सुला देती है दादी मां।
परी-कहानी, राजा-रानी, अच्छे बच्चे सोन हिरन,
सुना कहानी सबसे हमें, मिला देती है दादी मां।
कभी-कभी जब बिना बात भी रूठ जाते हैं हम,
हंसकर प्यार जताकर हमें, मना लेती है दादी मां।
कभी-पिटाई करें, न गुस्सा हों ना हमें डांठती हैं,
मम्मा डांटे उनको डांट पिला देती है दादी मां।
होम वर्क हो अगर अधूरा, हमको याद दिला देती,
साथ बैठकर पूरा उसे, करा देती है दादी मां।
भारी बस्ता लेकर जब हम थके-थके घर आते हैं,
मीठा सेब खिलाकर दूध पिला देती है दादी मां।

- 86 तिलकनगर,दाल मिल वाली गली,फिरोजाबाद,उ.प्र.
मोबाइल- 9412316779

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-70

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **30 जुलाई, 2022** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-69 में **कु. बबीता प्रसून, कक्षा 7 केंद्रीय विद्यालय नौएडा, उ.प्र.** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. पाताल भुवनेश्वर किस राज्य में स्थित है?
(a) उड़ीसा (b) उत्तराखंड
(c) उत्तर प्रदेश (d) हिमाचल प्रदेश

2. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना कब हुई?
(a) 1967 (b) 1960
(c) 2016 (d) 2000

3. अमेरिका में आईसक्रीम का पहला कारखाना लगाया?
(a) एडम स्मिथ (b) हेनरी
(c) बोस्टन (d) विद्याशंकर

4. 7 दिसंबर 'राष्ट्रीय कॉटन कैंडी दिवस' मनाया जाता है।
(a) भारत (b) अमेरिका
(c) चीन (d) पाकिस्तान

5. 13 वर्षीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ध्रुव कुंडू का जन्म हुआ?
(a) उत्तराखंड (b) बिहार
(c) उत्तर प्रदेश (d) पंजाब

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-69 का सही उत्तर

1. (a), **2.** (a), **3.** (a), **4.** (d) **5.** (b)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-70

नाम : ..... **कक्षा** .....
पता : .....
.....
फोन (कोड सहित)..... **मो.** .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन /सरंक्षक सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200)में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना वाट्सअप/मेल/ एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर वाट्सअप/ पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। - संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)

संपादकीय कार्यालय

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601

मोबाइल/वाट्सअप: 9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं./ऑनलाइन .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....

पता .....

.....

.....

.....पिन.....

मोबाइल/ फोन .....

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : सफलता का मंत्र
रचनाकार: डॉ. फकीरचंद शुक्ला
संपर्क : 230सी,भाई रणधीरसिंह नगर, लुधियाना, पंजाब-141012

पुस्तक : अध्यापन का इंद्रधनुष
रचनाकार : कुमुद वर्मा
संपर्क : 9898633354

पुस्तक : ऐसा था नानी का बचपन
रचनाकार : डॉ. अलका अग्रवाल
प्रकाशक : साहित्यागार,धामाणी मार्केट की गली,चौड़ा रास्ता,जयपुर,राज.

पुस्तक : जुगनू भाई
रचनाकार : बालस्वरूप राही
प्रकाशक : जुगनू प्रकाशन,सी-404,बेसमेंट,डिफेंस कॉलोनी,नई दिल्ली-110024

पुस्तक : प्राचीन मुद्राएं
रचनाकार : इंद्रेश्वरी बल्लभ पंत
संपर्क : एम-22ए/2ए साकेतनगर,भोपाल,म.प्र.

पुस्तक : नानी चुप है
रचनाकार : हूंदराज बलवाणी
संपर्क : 172 महारथी सोसाइटी,सरदारनगर,अहमदाबाद, गुजरात

पुस्तक : शराब, धूम्रपान और आप
रचनाकार : पूरनचंद्र कांडपाल
संपर्क : डी-2/2 सैक्टर 15 रोहिणी,दिल्ली 110085

पुस्तक : सप्तपदी के मंत्र
रचनाकार : डॉ. दीपा गुप्ता
संपर्क : एडम्स इंटर कालेज अल्मोड़ा

पुस्तक : अच्छी बातें
रचनाकार : राजकुमार निजात
संपर्क : मकान 57,गली 1,हरिबिष्णु कॉलोनी,कंगनपुरा रोड, सिरसा, हरि.

पुस्तक : किट्ट-बिट्टू की शैतानी
रचनाकार: डॉ. अजीतसिंह राठौर
संपर्क : 36एमआईजी,एसबीआई कॉलोनी,जनतानगर,वर्ग 3, कानपुर-208027

पुस्तक : अपनी दुनिया सबसे न्यारी
रचनाकार: दीनदयाल शर्मा
संपर्क : हनुमान गढ़ जंकशन, राजस्थान

पुस्तक : जो य गड. बगि रै (सामूहिक कुमाउनी कविता संग्रह)
संपादक : ललित तुलेरा
संपर्क : कुमाउनी भाषा साहित्य एवं संस्कृति प्रचार समिति कसारदेवी, अल्मोड़ा

पुस्तक : मेरी प्रतिनिधि बाल कहानियां
रचनाकार: डॉ. भैंरूंलाल गर्ग
संपर्क : संपादक बालवाटिका,भीलवाड़ा,राजस्थान

पुस्तक : रोचक कथाएं
रचनाकार : त्रिलोकसिंह भंडारी
संपर्क : पूर्वी पोखरखाली,अल्मोड़ा

पुस्तक : महकते फूल चहकते पंछी
रचनाकार : प्रकाश तातेड़
संपर्क : ए 102,शुभलाभ अपार्टमेंट, रूपसागर रोड,उदयपुर,राजस्थान

पुस्तक : हौसले की उड़ान
रचनाकार : सुशीला शर्मा
संपर्क : 64-65 विवेक विहार,न्यू सांगानेर रोड,सोडाला,जयपुर-302019

पुस्तक : तेरे प्यारे प्यारे बोल
रचनाकार : डॉ. रामदुलारसिंह 'पराया'
संपर्क : उदितनगर,कुसुम्ही,चुनार,मिर्जापुर,उ.प्र. 231304

पुस्तक : महकता बचपन
संपादक : मधु प्रमोद
संपर्क : 8426001161

बालप्रहरी बाल क्लब

रचना सोनी
उदयपुर, राजस्थान

विहान तिवारी
दिल्ली

अंशिका फुलारा
खटीमा, ऊ.सिं. नगर

ध्रुव शर्मा
पूने, महाराष्ट्र

लक्षिता गहतोड़ी
लोहाघाट, चंपावत

स्मारिका चौरसिया
नानकमत्ता, ऊ.सिं.नगर

नितिन पाठक
गंगोलीहाट

अंश सक्सेना
हल्दूचौड़, नैनीताल

शिवसागर
देवगढ़, राजस्थान

दीया शर्मा
खीड़ा, चौखुटिया

नम्रता भमोरे
खंडवा, मध्य प्रदेश

प्रज्जवलित आर्यन
दिगोलीखाल, पौड़ी

जतिन सती
पंतनगर, ऊ.सिं.नगर

बैष्णवी नेगी
दिल्ली

चैतन्य साह
बागेश्वर

दिव्यांजलि
द्वाराहाट, अल्मोड़ा

गौरवी जैन
उदयपुर, राजस्थान

दीपाली पंवार
सहारनपुर, उ.प्र.

चाहत जोशी
बनबसा, चंपावत

कृतिका द्विवेदी
रीवा, मध्य प्रदेश

चैतन्य पाण्डे
रुद्रपुर

भूमिका गहतोड़ी
लोहाघाट, चंपावत

अर्पिता कलोनी
चौखुटिया, अल्मोड़ा

कनिका जोशी
चनौदा, अल्मोड़ा

आराध्य पांडे
कनखल, हरिद्वार

भूमिका कांडपाल
दरबारीनगर, अल्मोड़ा

प्रणव पंत
हरिद्वार

नए संरक्षक : डॉ. अरुण कुमार पंत

अपने छात्रों में लोकप्रिय रहे डॉ. अरूण कुमार पंत सन् 1971 से 2001 तक गोरखपुर विश्वविद्यालय के फीजिक्स विभाग में प्रोफेसर रहे। विश्वविद्यालय में अध्यक्ष एथलेटिक्स, सहायक डीन छात्र कल्याण परिषद, समन्वयक इग्नू स्टडी सेंटर सहित कई प्रशासनिक पदों पर रहते हुए आपने छात्रों के हितों को ध्यान में रखते हुए उन्हें वैज्ञानिक सोच से जोड़ने का प्रयास किया। भारतीय विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त आपने यूनिवर्सिटी आफ न्यू ऑरलिएंस यू.एस.ए, मैक मास्टर यूनिवर्सिटी हामिल्टन,कनाडा, ग्लासगो यूनिवर्सिटी ग्लासगो स्काटलेंड यू.के. आदि कई विश्वविद्यालयों में पोस्ट-डॉक्टोरल शोध फैलोशिप के तहत शोध के अतिरिक्त शिक्षण कार्य किया है। भारत तथा विदेशी विश्वविद्यालयों में आयोजित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

एक्स किरण क्रिस्टलोग्राफी (X-Ray Crystallography) पर आपने महत्वपूर्ण शोध किया है। इंडियन ऐशोसिएशन आफ फीजिक्स टीचर्स, इंडियन बायोफिजिकल सोसाइटी कोलकाता सहित कई शैक्षणिक तथा वैज्ञानिक संस्थाओं से आपका सक्रिय जुड़ाव रहा है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में आपके 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। बालप्रहरी संरक्षक सदस्य के रूप में बालप्रहरी को आपसे विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

संपर्क : लक्ष्मी निवास, रानीधारा, अल्मोड़ा, उत्तराखंड- 263601
मोबाइल- 9412092933

नए संरक्षक : श्रीमती मोहिनी बाजपेयी

बालप्रहरी की नई संरक्षक श्रीमती मोहिनी बाजपेयी वर्तमान में बालप्रहरी पत्रिका के कला पक्ष को देख रही हैं। बालप्रहरी में प्रकाशित कहानियों के चित्र आप तैयार करती हैं। बालप्रहरी पत्रिका के साथ ही आप बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं में भी सक्रिय सहभागिता करती हैं। आपने भारत के अलावा अमेरिका से भी काफी बच्चों व अभिभावकों को बालप्रहरी से जोड़ा है।

आपके पिताजी श्री बालकराम मिश्रा जी पिथौरागढ़ में शिक्षक हैं । उनके साथ रहते हुए रा.इ.का.गौरीहाट से हाईस्कूल तथा जी.जी.आई.सी.पिथौरागढ़ से इंटरमीडिएट उत्तीर्ण करने के बाद स्नातक की पढ़ाई पी.जी. कालेज पिथौरागढ़ से हुई। ग्राफिक ऐरा इंस्टीट्यूट, देहरादून से मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन की डिग्री लेने के बाद आपने विप्रो टैक्नॉलाजी बैंगलौर, NIIT गुड़गांव तथा ट्रेजरी एंड फाइनेंस उत्तराखंड देहरादून आदि कंपनियों में बतौर साफ्टवेयर इंजीनियर कार्य किया। वर्तमान में आप अमेरिका में है। कुछ समय से आप लखनऊ, उ.प्र. में अपनी बिटिया वेदांशी व नाइरा को समय दे रही हैं।

www.DrizzlingColorsArt.com ब्लॉग के माध्यम से आप अपने विचार दुनिया से साझा करती हैं। एक चित्रकार बतौर कैनवास पर जिंदगी के रंग बिखेरती हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। बालप्रहरी को आपसे और अधिक सहयोग की अपेक्षा है।

संपर्क : ई-1/817 विनय खंड, गोमतीनगर, लखनऊ, उ.प्र.
मोबाइल -8861722227

कामाक्षी जोशी, कक्षा - 7
जी.आई.सी. मनान, अल्मोड़ा

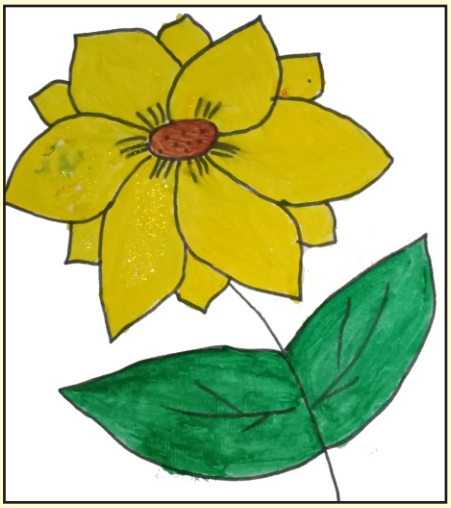

जिज्ञासा जोशी, कक्षा - 6
कंट्रीबाइड पब्लिक स्कूल, सोमेश्वर, अल्मोड़ा

निरवी चावला, कक्षा - 1
बी. दयाल सिंह पब्लिक स्कूल, करनाल, हरियाणा

आराध्य पाण्डे, कक्षा - 4
ए.एन.पी.एस., हरिद्वार

दिव्यांशु जोशी, कक्षा - 8
गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

बाम्या आर्या, कक्षा - 1
शारदा पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

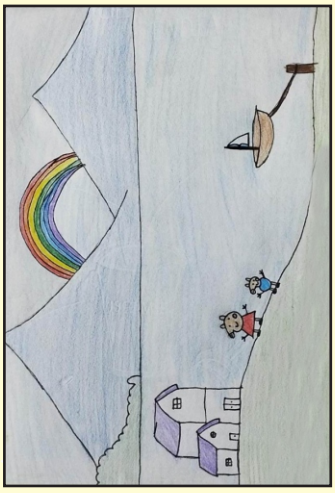

अवर्णिका जोशी, कक्षा - 3
सेंटी. मैरी कॉवेंट कालेज, नैनीताल

RNI No. UTTHIN/2004/18604

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

भाव्या हर्बोला, कक्षा - 3, किड्स आर्क एकेडमी, द्वाराहाट

जीविका, कक्षा - 5, प्रा.वि. इंद्रगढ़ी गालंद, हापुड़ (उ.प्र.)

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336